वर्ष : 39, अंक : 145, अक्तूबर-दिसंबर, 2015

राजभाषा भारती

जन जन की भाषा है हिंदी

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर 2015 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के कर-कमलों से सिंडीकेट बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य अधिकारी श्री अरुण श्रीवास्तव ने राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ग्रहण किया।

मुख्य नियंत्रण सुविधा हासन को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ण कार्य निष्पादन के लिए कर्नाटक के राज्यपाल माननीय श्री वजूभाई आर वाला, प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

दिनांक 16 अक्तूबर, 2015 को अमृतसर में आयोजित उत्तरी क्षेत्र I एवं II का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन में पंजाब के माननीय राज्यपाल प्रो॰ कप्तान सिंह (बीच में) तथा अधिकारीकगण।

दिनांक 16 अक्तूबर, 2015 को अमृतसर में आयोजित उत्तरी क्षेत्र I एवं II का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन में पंजाब के माननीय राज्यपाल प्रो॰ कप्तान सिंह आशीर्वचन देते हुए।

i- l- 3247@77
vkb , l ,e ,u 0970&9398

सपना वो नहीं है जो आप नींद में देखे,
सपने वो है जो आपको नींद ही नहीं आने दे।

—डॉ॰ ए पी जे अब्दुल कलाम

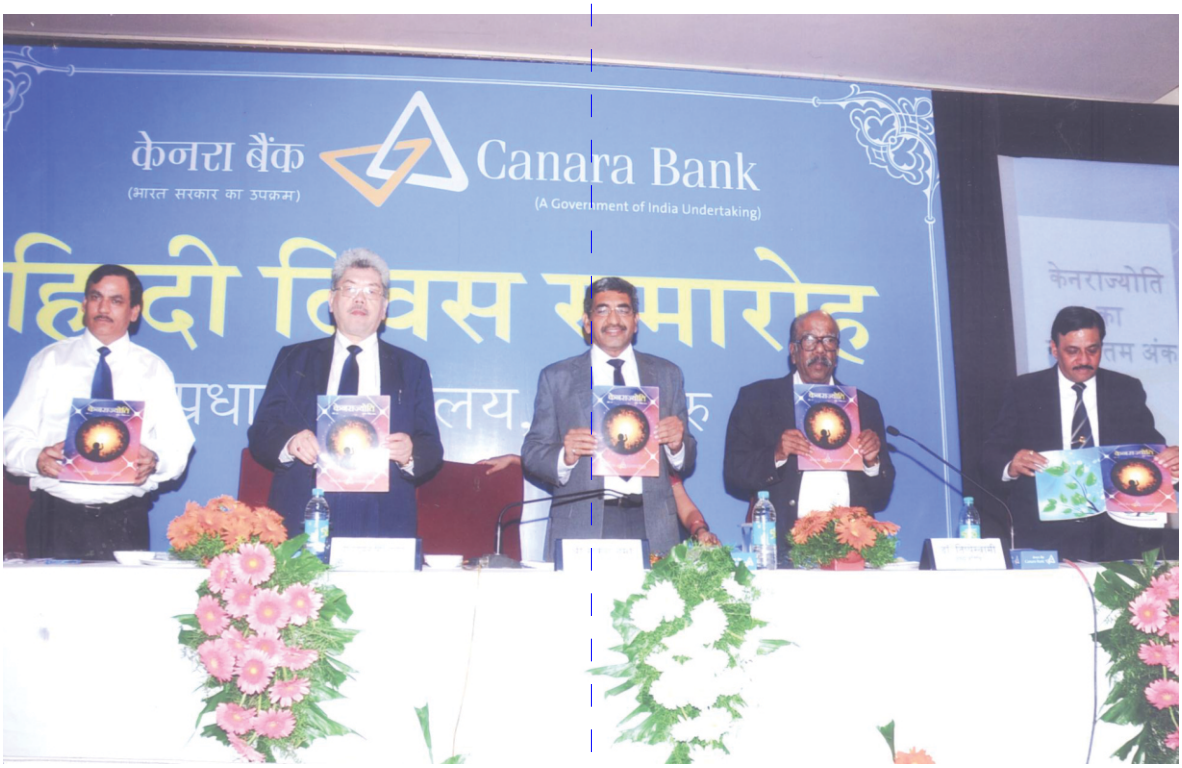

केनरा बैंक द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' का विमोचन करते हुए अधिकारीकण।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण उदयपुर द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा–2015 समारोह का उद्घाटन करते हुए अतिथिगण।

नाईपर हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में उपस्थित अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं विद्यार्थीगण

विमानपत्तन निदेशक श्री जोर्ज जी तरकन, हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए चित्र।

आकाशवाणी चेन्नै की गृहपत्रिका ''गोपुरम'' के 22वें अंक का विमोचन करती हुई मशहूर गायिका श्रीमती वाणी जयराम।

केनरा बैंक अंचल कार्यालय, इन्दौर राजभाषा हिंदी माह-2015 के उपलक्ष्य में अंचल की गृहपत्रिका 'इन्दौर स्पन्दन' का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती डॉ॰ वन्दना अग्निहोत्री व उपमहाप्रबंधक श्री सजु अलेक्सान्डर, उपमहाप्रबंधक श्री सी.पी. दीक्षित व अन्य कार्यपालकगण।

हिंदी दिवस उद्घाटन समारोह में स्वागत भाषण देते श्री दीनबन्धु सिंह, हिंदी अधिकारी, एमएसएमई विकास संस्थान, कटक तथा मंच पर बैठे हैं श्री पी.के. गुप्ता, उप निदेशक प्रभारी, एमएसएमई विकास संस्थान, कटक एवं सुश्री निरूपमा महाराणा, अतिथि व्याख्याता, हिंदी विभाग, रेवेन्शॉ विश्वविद्यालय, कटक मुख्य अतिथि के रूप में (बायें से दायें)

हिंदी गृह पत्रिका पुरस्कार ''कैरली भारती 2014-2015'' को एनसीसी निदेशालय, केरल और लक्षद्वीप, तिरुवनंतपुरम के अपर महानिदेशक, मेजर जनरल सी पी सिंह के कर कमलों से प्राप्त करती हुई उक्त प्रत्रिका की संपादक श्रीमती एम निर्मला कुमारी।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे

—निराला

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 39

अंक : 145

अक्तूबर-दिसंबर, 2015

⇨ **संरक्षक**
गिरीश शंकर भा॰प्र॰से॰
सचिव, राजभाषा विभाग

⇨ **परामर्शदाता**
पूनम जुनेजा
संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग

⇨ **संपादक**
डॉ॰ श्रीप्रकाश शुक्ल
संयुक्त निदेशक (नीति/पत्रिका)
दूरभाष-011-23438250

⇨ **उप संपादक**
डॉ॰ धनेश द्विवेदी
दूरभाष-011-2348137

⇨ **सहायक संपादक**
शांति कुमार स्याल

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्र व्यवहार का पता:
संपादक,
राजभाषा विभाग
एन डी सी सी भवन -II,
चौथा तल, बी विंग
नई दिल्ली-110001
ईमेल-patrika—ol@.nic.in

नि:शुल्क वितरण के लिए:

विषय-सूची

पृष्ठ

⇨ **संपादकीय**

⇨ **चिंतन**

1. हिंदी को संवैधानिक मान्यता - डॉ॰ रुक्मिणी तिवारी 1

2. भाषा, लिपि, उच्चारण, वर्तनी एवं मानकीकरण में सामंजस्य - शशिकांत पशीने 'शाकिर' 3

3. विश्व पटल पर हिंदी-विश्व भाषा के रूप में - वन्दना सक्सेना 6

4. केरल में संपर्क भाषा - हिंदी - अरविंदाक्षन्, एम॰ 9

5. मनोरंजन जगत और हिंदी - डॉ॰ रविता पाठक 11

⇨ **अनुवाद**

6. साहित्य संतरण का सुरमई सेतु-अनुवाद - राधेश्याम भारतीय 13

⇨ **साहित्यिक**

7. राष्ट्रपिता का राष्ट्रभाषा के प्रति चिंतन - चेतनादित्य आलोक 18

⇨ **पुरानी यादें - नए परिप्रेक्ष्य**

8. मानवतावादी कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और उनकी गीतांजलि - जयनाथ मणि त्रिपाठी 21

⇨ **व्यक्तित्व विशेष**

9. रामेश्वरम् से रामेश्वरम् तक - डॉ॰ पी आर वासुदेवन 'शेष' 23

विषय–सूची

पृष्ठ

⇨ **राजभाषा संबंधी गतिविधियां**

(क) **विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें** 25

''ग'' क्षेत्र – मुख्य आयकर आयुक्तालय, शिलांग; के.रि.पु. बल, खटखटी; प्रदर्शन सह तकनीकी सेवा केंद्र, कटक, खादी और ग्रामोद्योग उद्योग, हैदराबाद; केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर, गुवाहाटी; राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, तिरुवनंतपुरम; हवाई अड्डा, तिरुवनंतपुरम; आकाशवाणी, विशाखापट्टनम; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, गुवाहाटी।

''ख'' क्षेत्र – प्रधान आयकर आयुक्त, पटियाला।

''क'' क्षेत्र – पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर; केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, कानपुर; केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, भोपाल; सीमा सड़क महानिदेशालय, नई दिल्ली; आकशवाणी, शिमला।

(ख) **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें** 31

''क'' क्षेत्र – जयपुर; छतरपुर।

(ग) **कार्यशालाएं** 33

''ग'' क्षेत्र – अंतरिक्ष विभाग, हासन; राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, तिरुवनंतपुरम; खादी और ग्रामोद्योग आयोग, हैदराबाद; हवाई अड्डा तिरुवनंतपुरम; भारत भारी उद्योग निगम, कोलकाता; केंद्रीय रेशम उत्पाद अनुसंधान, बहरमपुर आकाशवाणी, हैदराबाद; आकाशवाणी विशाखापट्टनम; आकाशवाणी, कटक।

''ख'' क्षेत्र – भारतीय कपास निगम, राजकोट; राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद,; आकशवाणी, अहमदाबाद; पोस्टमास्टर जनरल, इंदौर।

(घ) **हिंदी दिवस** 38

''ग'' क्षेत्र – राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, तिरुवनंतपुरम; असम राइफल्स, शिलांग; खादी और ग्रामोद्योग आयोग, हैदराबाद; नार्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कार्पोरेशन, शिलांग; हवाई अड्डा, तिरुवनंतपुरम; केंद्रीय रेशम उत्पाद अनुसंधान, बहरमपुर; एनएमडीसी, हैदराबाद; नार्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कार्पोरेशन, याजली; राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान, बेंगलूरू; केनरा बैंक, बेंगलूरू; केनरा बैंक मंगलूरू; आकाशवाणी, कटक; आकाशवाणी, चेन्नै; आकाशवाणी, विशाखापट्टनम; आकाशवाणी, निजामाबाद; आकाशवाणी, तिरुवनंतपुरम; आकाशवाणी, ब्रह्मपुर; आकाशवाणी, हैदराबाद; आकाशवाणी, कोलकाता; दूरदर्शन, ईटानगर; दूरदर्शन, गुवाहाटी।

''ख'' क्षेत्र – पश्चिम रेलवे, दाहोद; ग्रेफ केंद्र, पुणे; जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, नवी मुंबई; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, लुधियाना; सेवी–कंडक्टर लेवोरेटरी एस ए एस नगर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम गोवा; नाईपर, मोहाली; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़; आकाशवाणी, जलगांव; दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र, अकोला; केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे; आकाशवाणी, राजकोट।

''क'' क्षेत्र – राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, जयपुर; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, उदयपुर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली; यूको बैंक, पटना; पंजाब नेशनल बैंक, धर्मशाला; केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, इंदौर; दूरदर्शन केंद्र, लखनऊ; आकाशवाणी, बीकानेर; आकाशवाणी, पटना; आकाशवाणी, लखनऊ; आकाशवाणी, छत्तरपुर; आकाशवाणी, जयपुर।

- **संगोष्ठि/सम्मेलन** 53

  राजभाषा विभाग द्वारा अमृतसर में आयोजित उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन; नराकास (बैंक) बेंगलूरू; केनरा बैंक अंचल कार्यालय, बेंगलूरू; नराकास, मंगलूरू।

- **प्रतियोगिता/पुरस्कार** 56

  बैंक ऑफ बड़ौदा, मुंबई; सिंडीकेट बैंक, मुख्य कार्यालय; नराकास बैंक बेंगलूरू

- **विविध** 58

  केनरा बैंक, बेंगलूरू; विजया बैंक बेंगलूरू

- **प्रशिक्षण** 59

- **पाठकों के पत्र** 78

संपादकीय

भारतीय संविधान के अंतर्गत हिंदी को देश की सामासिक संस्कृति की वाहक के रूप में स्वीकार किए जाने के कारण इसका स्वरूप व्यापक है। हिंदी की प्रकृति प्रारंभ से ही सार्वदेशिक रही है, ताकि प्रशासन की भाषा कामकाजी और प्रयोजन मूलक होने के साथ-साथ सहज, सरल, सुबोध और जनता की भाषा बनी रहे। इस प्रकार से विकसित हिंदी सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में ही नहीं, बल्कि जनसंपर्क और राष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में भी एक सशक्त कड़ी का काम कर रही है।

'राजभाषा भारती' पत्रिका के माध्यम से हम निरंतर प्रयास कर रहे हैं कि संघ सरकार के कार्यालयों में ऐसा वातावरण तैयार किया जाए, जिससे अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा संबंधी नियमों, कानूनों तथा आदेशों की जानकारी तो मिले ही साथ ही सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग की भी तस्वीर प्रस्तुत की जा सके।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के माध्यम से यह भी देखा जा सकता है कि अनेक सरकारी कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों, निगमों आदि में हिंदी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है और कर्मचारी स्वेच्छा से इसे अपना रहे हैं।

'राजभाषा भारती' के इस अंक को आप के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका

का यह अंक विविध प्रकार की सामग्री से परिपूर्ण है। 'चिंतन' खण्ड में 'हिंदी की संवैधानिक मान्यता पर प्रकाश डाला गया है। भाषा, लिपि, उच्चारण, वर्तनी एवं मानकीकरण में सामंजस्य लेख प्रस्तुत है। 'विश्व पटल पर हिंदी–विश्व भाषा के रूप में' लेख से पता चलता है कि हिंदी विदेशों में भी विश्वभाषा के रूप में अपनी जगह बना रही है। हिंदीतर क्षेत्र में आने वाले केरल राज्य में संपर्क भाषा हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता पर प्रकाश डाला है। 'मनोरंजन जगत में हिंदी' लेख, के अनुसार फिल्मों ने हिंदी के प्रचार–प्रसार में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। 'साहित्य संतरण का सुरमई–अनुवाद' में कई पहलुओं पर प्रकाश डाला है। 'साहित्यिकी' स्तंभ के अंतर्गत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का राष्ट्रभाषा संबंधी चिंतन पर लेखक ने विचार दिए हैं। 'पुरानी यादें–नए परिपेक्ष्य' खण्ड में मानवतावादी कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और उनकी गीतांजलि लेख पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है। इस अंक में नए स्तंभ 'व्यक्तित्व विशेष' के अंतर्गत पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम की जीवनी पर संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

राजभाषा संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत विभिन्न कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों, कार्यशालाओं, संगोष्ठी/सम्मेलनों, प्रतियोगिताओं/पुरस्कार, प्रशिक्षण आदि की रिपोर्ट हमेशा की तरह दी जा रही है। इस दौरान हिंदी दिवस/पखवाड़ा/मास आदि मंत्रालयों, कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों, स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा उत्साह पूर्वक मनाया गया। इससे संबंधित रिपोर्टों को पत्रिका में स्थान देने का भरपूर प्रयास किया गया है।

धन्यवाद, *संपादक*

चिंतन

हिंदी को संवैधानिक मान्यता

— डॉ रुक्मिणी तिवारी*

स्वाधीनता के बाद गठित 'संविधान समिति' को मुंशी-आयंगार समिति कहते हैं। इसके अधिकांश हिंदीतर भाषी सदस्य, श्री गोपाल स्वामी आयंगार, श्री टी टी कृष्णमाचारी, श्री ए के आयंगार, श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, डॉ भीम राव अंबेडकर, श्री सआदुल्ला, श्री एल एम राव, मौलाना अबुल कलाम आजाद, पंडित गोविंद बल्लभ पंत, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी और श्री के संथानम थे।

फरवरी 1948 में संविधान का जो प्रारूप प्रस्तुत किया गया उसमें संघ सरकार की राजभाषा का कोई उल्लेख नहीं था। परंतु कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी के अथक प्रयासों से सितंबर 1949 में संविधान सभा में राजभाषा के विषय पर चर्चा हुई।

सर्वप्रथम संविधान सभा में 12 सितंबर 1949 को जिन तीन सदस्यों ने हिंदी को राजभाषा बनाने के प्रावधान का प्रस्ताव किया, वे तीनों ही अहिंदी भाषी थे। श्री गोपाल स्वामी आयंगार ने रखा, इसका समर्थन श्री शंकर राव देव ने किया था। ये दोनों दूरदर्शी हिंदीतर भाषी राष्ट्रभक्त नेता थे। सभा की तीन दिवसीय 12, 13 एवं 14 सितंबर 1949 की बहस में 71 सदस्यों ने भाग लिया। संविधान सभा में डॉ भीम राव अंबेडकर के भाषण के कुछ अंश है, जिससे उनकी राष्ट्रीय एकता में हिंदी को दृढ़तापूर्वक मान्यता प्रदान किया, 'मैं ऐसे प्रांत का हूं जिसका अपना इतिहास है और इस इतिहास पर मुझे शर्म लगने का कोई कारण नहीं है। मेरी भाषा में ऐसा साहित्य है, जिसका मुझे अभिमान है। इतना होते हुए भी जाहिर करना चाहता हूं कि समूचे हिंदुस्तान की एक ही राजभाषा होनी चाहिए। उसके लिए मेरी भाषा का बलिदान करने को तैयार हूं। वरन हमारी अखिल भारतीयता की बातें खोखली ही ठहरेंगी।' हिंदी को ही राजभाषा बनाने को एकमत (सर्वसम्मति) से स्वीकार किया था। इसके अलावा अंकों से संबन्धित निर्णय किया गया कि शासकीय प्रयोग हेतु अंतर्राष्ट्रीय अंकों को मान्यता प्रदान की जाए। 14 सितंबर 1949 को संविधान निर्माताओं ने अंतिम निर्णय लिया। इस दिन हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। नव-निर्मित राष्ट्र के सामने उपस्थित विभिन्न चुनौतियों तथा भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी के वर्चस्व को देखते हुए इसे राजभाषा घोषित किया गया। भारत के इतिहास में पहली बार जनभाषा को राजभाषा का दर्जा दिया। इसलिए भारत वर्ष में प्रत्येक 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह जनभाषा हिंदी है क्योंकि भारत भूमि में सदियों से हिंदी ही (चाहे जिस रूप में भी रही) एक ऐसी भाषा रही है जो पूरे भारत वर्ष में किसी-न-किसी रूप में लिखी, पढ़ी या बोली अथवा समझी जाती रही है तथा संपर्क का माध्यम रही है। आम जनता के बीच बोली और समझी जाने वाली आम भाषा है। वह भारतीय राष्ट्रीयता के स्वरूप को साकार करने में एक अहम कारक भी रही है।

तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने स्पष्ट कहा था कि, 'हिंदी को किसी भाषायी श्रेष्ठता के कारण अखिल भारतीय भाषा नहीं बनाया गया बल्कि इसलिए बनाया गया क्योंकि यह अधिकांश भागों में फैली हुई है। साथ ही सबसे अधिक आसान भी है।'

देवनागरी लिपि भारत की प्रधान लिपि है। भारतीय संविधान ने इस लिपि को 'राजलिपि' का दर्जा पंदान किया है। देवनागरी लिपि को बाएं ओर से दायीं ओर लिखा जाता है। हालांकि देवनागरी लिपि मूलत: वर्णाक्षरी लिपि है, लेकिन व्यवहार (उपयोग) में यह अक्षरिक लिपि है। देवनागरी में लिखित प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खींची होती है। यही रेखा शिरोरेखा कहलाती है।

स्वतंत्र भारत के संविधान ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में नहीं, शासकीय प्रयोजनों के लिए भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। इसके लिए संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक प्रावधान किए गए। हिंदी के प्रबंध में अनुच्छेद 343 (1) में कहा गया है कि भारत संघ की राजभाषा

*डी-6, साइट-1, सिटी सेंटर, ग्वालियर (म०प्र०)-474001.

हिंदी होगी और उसकी लिपि देवनागरी होगी। हिंदी के विकास के लिए संविधान के अनुच्छेद 351 में यह प्रावधान है कि ''हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'' अर्थात भारत सरकार मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द-सम्पदा ग्रहण करते हुए हिंदी का विकास इस रूप में करेगी कि वह भारत की सामासिक संस्कृति के समस्त तत्वों की सम्यक, अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सके। अंकों के मामले में भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को अपनाया गया तथा देश की समस्त प्रमुख प्रांतीय भाषाओं (आज उनकी संख्या 22 है) को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल कर राष्ट्रीय (महत्व की) भाषा का दर्जा दिया गया।

संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार संविधान लागू होने के दिन से 15 वर्षों तक हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी को भी भारत संघ की सह-राजभाषा के रूप में जारी रखा जाना था और उसके बाद हिंदी को ही पूरी तरह से राजभाषा के रूप में लागू कर दिया जाना था। 26 जनवरी, 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ, तदनुसार 26 जनवरी, 1965 से हिंदी को पूरी तरह से राजभाषा के रूप में लागू हो जाना था। उसी को ध्यान में रखकर भारत की संसद ने 1963 में राजभाषा अधिनियन पारित किया, हालांकि परिस्थितिकजन्य कारकों के चलते 1967 में उसमें कतिपय संशोधन करने पड़े। उसी अधिनियम के प्रावधानों के तहत राजभाषा नियम 1976 बने तथा संसदीय राजभाषा समिति आदि का गठन हुआ।

राजभाष नीति पूरी तरह प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित है तथा राज्यों के विधानमंडलों में निहित है और संघ की राजभाषा का कार्यान्वयन कार्यक्रम केंद्रीय कर्मियों के हिंदी ज्ञान के स्तर पर आधारित है। यदि किसी केन्द्रीय कर्मी का हिंदी का अपेक्षित ज्ञान नहीं है तो उसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण का प्रावधान सरकारी खर्च पर कार्यालय अवधि के दौरान है।

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य बनता है कि वो राष्ट्र के लिए राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान की तरह हिंदी का भी राष्ट्र भाषा के रूप में सम्मान करे और उसकी गरिमा को बनाए रखे। इसी में हमारा सम्मान निहित है।

प्राचीन समय से ही हिंदी हमेशा संपर्क भाषा रही है।

❑

राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या मसौदा हिंदी या अँग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे। कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज़ के अँग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज़ विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं। विशिष्ट दस्तावेज़ विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं, वो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा। केंद्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिंदी में प्रवीनता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट दिए जाएँ, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

भाषा, लिपि, उच्चारण, वर्तनी एवं मानकीकरण में सामंजस्य

—शशिकांत पशीने 'शाकिर'*

भाषा संवाद का माध्यम होती है और मानव-मन की भावनाओं, आवश्यकताओं को अभिव्यक्त करती है। मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्व है। वैचारिक आदान-प्रदान, व्यापार-व्यवहार का आधार भाषा है, अर्थात् भाषा संप्रेषण का माध्यम है। भाषा का पहला रूप 'बोली' है। किसी भाषा के क्षेत्र में बोली जाने वाली उस भाषा के उपरूप को 'बोली' या 'विभाषा' कहते हैं। उदाहरणार्थ-हिंदी भाषा क्षेत्र में अवधि, ब्रज, छत्तीसगढ़ी, बुंदेली, हरियानवी आदि बोलियां हैं। कभी-कभी कुछ भाषाओं के अंतर्गत कुछ ऐसे बड़े रूप मिलते हैं, जिनमें हर एक के अंतर्गत कई बोलियां होती हैं—इन्हें 'उपभाषा' या 'बोलीवर्ग' कहते हैं। उदाहरण के लिए हिंदी के अंतर्गत पांच उपभाषाएं मानी गई हैं, यथा-पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, पहाड़ी तथा बिहारी।

मोटे तौर पर भाषा के दो भेद होते हैं—कथित भाषा और लिखित भाषा। निकटवर्ती लोगों से विचार-विनिमय के लिए कथित भाषा, अर्थात् बोलचाल की भाषा का प्रयोग होता है तथा दूरवर्ती लोगों से विचार-विनिमय के लिए लिखित भाषा का। जब बात मौखिक हो रही हो तो व्याकरण की अशुद्धियों पर ध्यान नहीं दिया जाता लेकिन यह स्वतंत्रता लिखित भाषा में नहीं मिल पाती है। भाषा के लिखित रूप की अपनी सीमाएं हैं। प्रयोग की दृष्टि से किसी भाषा का आदर्श रूप 'मानक भाषा' कहलाता है, अर्थात् मानक भाषा प्रबंद्ध समाज द्वारा किसी विशिष्ट रूप की स्वीकृति है। भाषा का यही रूप उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शिक्षा, प्रशासन, साहित्य सृजन तथा औपचारिक विचार-विनिमय आदि का माध्यम होता है।

डॉ॰ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं डॉ॰ कैलाशचंद्र भाटिया के मतानुसार हिंदी भाषा के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का स्वरूप इस प्रकार है: सामान्य भाषा—मानक भाषा—मानकीकरण——आधुनिकीकरण—पारिभाषिक शब्दावली

लिपि

'लिप्यते' शब्द से लिपि की व्युत्पत्ति बताई गई है, जिसका अर्थ है-लिखावट। प्रत्येक अक्षर को अंकित करने के लिए परंपरागत चिह्न निर्धारित है। इन्हीं व्यवस्थित चिह्नों की श्रृंखला को 'लिपि' कहते हैं। भाषा के संरक्षण और प्रसार ज्ञान को स्थायी बनाने तथा उसे आगे बढ़ाने एवं भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षणार्थ 'लिपि' का निर्माण किया गया। इसलिए लिपि को भाषा का आवरण और परिधान माना गया है। तात्पर्य यह है कि कर्णगोचर भाषा को नेत्रगोचर बनाने के लिए जिन प्रतीक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है वही 'लिपि' है।

लिपि के विकास के विविध चरणों, यथा-चित्रलिपि, भाव लिपि, भाव ध्वनि लिपि और ध्वनि 'लिपि में से देवनागरी लिपि अंतिम अवस्था में है। देवनागरी लिपि अक्षरात्मक और वर्णात्मक का समन्वित रूप है। इसे 'अर्ध-अक्षरात्मक' या 'वर्णात्मक' कहा गया है क्योंकि इसकी सभी व्यंजन ध्वनियों में 'अ' स्वर अंतर्भुक्त है।

भाषा ध्वनि प्रतीकों की समष्टि है और लिपि वर्गों का संयोजन है। भाषा ध्वनियों की व्यवस्था है किंतु लिपि वर्णों का संयोजन है। एक भाषा की समस्त ध्वनियों और वर्णों के लिए दूसरी भाषा में भी सभी उपयुक्त लिपि चिह्न उपलब्ध हों यह आवश्यक नहीं है।

उच्चारण

भाषा का आदिस्वरुप उच्चारण है। उसको मूर्त रूप देने के लिए ही लिपि और वर्तनी होती है। सामाजिक सुविधा और भाषायी समरुपता के लिए एक ही प्रकार का उच्चारण और समान वर्तनी आवश्यक है। वर्तनी और लिपि के मूल में उच्चारण है। उच्चारण के अनुरुप ही वर्तनी बनती है। और उच्चारण के लिए ही लिपि। उच्चारण पहले है, लिपि और वर्तनी बाद में। वास्तव में इन तीनों का अन्योन्याश्रित संबंध है।

*नामदेव महाराज मंदिर के समीप, गाडगे नगर, अमरावती-444 603. मो॰ 8796310035

उच्चारण में विविधता को बढ़ाने में भौगोलिक, ऐतिहासिक, वैयक्तिक, जातिगत, साहित्यिक, वैज्ञानिक इत्यादि कई प्रभाव कार्यरत रहते हैं। डॉ. अचलानंद जखमोला का अभिमत है कि ''उच्चारण वैविध्य के मूल में मुखसुख, क्षिप्र भाषण या प्रयत्नलाघव तथा अशिक्षा प्रमुख कारण हैं, जो ध्वनि परिवर्तन की दृष्टि से आगम, लोप, विकार, वर्णविपर्यय,समीकरण, विषमीकरण, स्वरभक्ति आदि के रूप में प्रकट होते हैं।'

फारसी माध्यम से आए और हिंदी में गृहीत जिह्वामूल (हलक) से उच्चरित कुछ अरबी भाषा की ध्वनियों को अंकित करने के लिए देवनागरी में स्वतंत्र लिपि-चिह्नों की व्यवस्था। है। पांच व्यंजन वर्णों - क, ख, ग, ज और फ के नीचे नुक्ता (बिंदु) लगाने की व्यवस्था है। नुक्ता लगाने और न लगाने से इनके सूक्ष्म उच्चारण और अर्थ में बड़ा अंतर आ जाता है। उसकी प्रकार अंग्रेजी के शब्दों के सही उच्चारण के लिए भी हिंदी में लिपि - चिह्न हैं।

वर्तनी

कोई शब्द वर्णमाला में जिस रूप और क्रम में लिखा जाता है, वह उस शब्द की 'वर्तनी' है। शब्दों की वर्तनी का निर्णय कई आधारों पर होता है, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण आधार उच्चारण है। वर्तनी पर समय के अंतराल और विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव पड़ता है। और यही विभिन्न प्रकार की वर्तनी दोषों का मुख्य कारण होता है।

अक्षरों के मेल से अर्थपूर्ण शब्द बनतें हैं तथा शब्दों में आए वर्णों का जो एक निश्चित क्रम या विधान होता है - उसे ही वर्तनी कहा जाता है, जो लिपि में अंकित होती है। वर्तनी एक प्रवहमान् प्रक्रिया है। वर्तनी उच्चारण की अनुगामिनी होती है। बच्चे पहले भाषा उच्चारित करते हैं, बड़ों से बोलना सीखते हैं तथा लिखते बाद में हैं।

प्रत्येक भाषा में शोधन, परिष्करण और परिवर्तन का आवश्यक अंग रहा है। हिंदी वर्तनी की यथासाध्य एकरुपता हेतु मानकों के निर्धारक नियम आवश्यक हैं। ये नियम, नियमन और चलन मितव्ययिता और भेदकता तथा ऐतिहासिक परंपरा और विकासपरक सुविधा के समन्वय पर आधारित हैं। भाषा की मानकीकरण प्रक्रिया के दौरान भी वर्तनी में परिवर्तन आता है। मानक वर्तनी का निर्धारण करना ही शब्दकोश का प्रमुख कार्य है।

हिंदी भाषा की उच्चारण तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों से बचने के लिए कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है। हिंदी वर्तनी के मानकीकरण से संबंधित मुख्य समस्याओं को निम्नलिखित मुद्दों में बांटा जा सकता है :—

(1) वर्ण-विचार
(2) एक रूप एक अर्थ की दृष्टि से चयन
(3) संयुक्त वर्णों अथवा अक्षरों का रूप
(4) विभक्ति चिह्न/कारक चिह्न का प्रयोग
(5) क्रियापदों का प्रयोग
(6) अनुस्वार तथा अनुनासिक में अंतर
(7) अव्यय का प्रयोग
(8) ड तथा ढ का प्रयोग
(9) श्रुतिमूलक 'य' तथा 'व' का प्रयोग
(10) विसर्ग का प्रयोग
(11) हल् चिह्न का प्रयोग
(12) हाइफन (योजक चिह्न)
(13) स्वन परिवर्तन
(14) 'ऐ' तथा 'औ' का प्रयोग
(15) विदेशी भाषा के शब्दों की ध्वनियाँ
(16) पंचमाक्षर का ज्ञान और अनुस्वार का प्रयोग
(17) संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग
(18) हल-चिह्न और रेफ
(19) इत, ईय तथा इक प्रत्यय का प्रयोग
(20) समरूपी अथवा दो रूपों वाले शब्दों का प्रयोग
(21) तीन व्यंजनों को संयोग वाले तत्सम शब्दों का प्रयोग
(22) सम्मानार्थक शब्दों का प्रयोग
(23) श्रुतिमूलक 'य' का प्रयोग
(24) विभिन्न विराम चिह्न
(25) शिरोरेखा

मानकीकरण

'मानक भाषा' यह समाज द्वारा स्वीकृत भाषा का एक रूप है, जिसे हम चयन की प्रक्रिया भी कह सकते हैं, जबकि भाषा के रूप को कोडबद्ध करने की प्रक्रिया 'मानकीकरण' है। अत: मानकीकरण मानक भाषा के बाद का सोपान है। जब

भाषा का मानक रूप निश्चित हो जाए तो उसे मानकीकृत किया जाता है ताकि वर्णमाला या वर्तनी में एकरूपता हो, सर्वत्र उसका उच्चारण एक जैसा हो और वाक्य संरचनाओं में विविधता और संदिग्धता न हो। मानकीकरण का अज्ञान कई प्रकार के भाषा-दोषों का कारण बन जाता है।

डॉ. सूरजभान सिंह के मतानुसार ''मानकीकरण भाषा-विकास-प्रक्रिया का एक सहत प्रतिफलन है। भाषा के रूप लोक-व्यवहार से परिष्कृत और सिद्ध होते हैं। जब समाज सामूहिक रूप से इनका व्यवहार करने लगता है तो वे रूप रूढ़ और मानक हो जाते हैं ओर भाषा-परंपरा के अंग बन जाते हैं। सभी मानव भाषाओं के इतिहास में सामान्य रूप से मानकीकरण की यही अघोषित प्रक्रिया रही है।''

हिंदी भाषा में आधुनिकीकरण के विकास के लिए भाषा का मानकीकरण आवश्यक है।

आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके सहारे आधुनिकता के लक्ष्य को साधता है। भाषा का आधुनिकीकरण भी एक प्रकार का परिवर्तन है, अर्थात् आधुनिक युग की आवश्यकता के अनुसार भाषा को आधुनिक बनाने की प्रक्रिया ही 'आधुनिकीकरण' है। आधुनिकीकरण में भाषा-परिवर्तन, भाषा विकास तथा भाषा-प्रसार सभी समाहित हो जाते हैं। इसमें समाज अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप भाषा को अधिक उपयोगी और प्रभावी बनाने का प्रयास करता है।

शब्द-भंडार, शैली-प्रवहमानता की दृष्टि से मानक हिंदी के निरंतर विकसित और व्यापक होते आधुनिक रूप में संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी आदि के हज़ारों प्रचलित शब्द पूरी तरह धुल-मिल और मिल-जुल कर प्रयुक्त हो रहे हैं। हिंदी में इंजन, बल्ब, ट्यूब आदि शब्द ग्रहण कर लिए जाने के बाद हिंदी को आधुनिकीकृत माना जाता है।

निष्कर्ष

मूल ध्वनियों को 'स्वन ध्वनि' और फिर वर्ण कहा गया है। तदनुसार स्वर और हलंत व्यंजन वर्ण हैं। अक्षर में एक या अनेक वर्ण रहते हैं और शब्द में एक या अनेक अक्षर। अत: क्रमागत विकास में स्वन ध्वनि, वर्ण, अक्षर, शब्द, भाषा और लिपि आते हैं। भाषा में सहज और स्वाभाविक परिवर्तन होते रहते हैं। ये परिवर्तन भाषिक नियमों के सरलीकरण तथा सामान्यीकरण द्वारा होते हैं। जब सर्व सम्मत और स्थापित एकरूप प्रयोगों से इतर कुछ लिखा जाता है तो वह 'दोष' या अशुद्धि की संज्ञा पाकर लेखन की गुणवत्ता को कम कर देता है। वर्तनी पर समय के अंतराल और विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव पड़ता है और यही विभिन्न प्रकार की वर्तनी दोषों का मुख्य कारण होता है। हिंदी भाषा की अंतरात्मा तक पहुचने के लिए उच्चारण, वर्तनी लिपि के साथ-साथ शब्दों, प्रयोगों आदि के ठीक अर्थों और आश्यों तथा भाषा की प्रकृति और स्वरूप को जानना नितांत ज़रूरी है।

संदर्भ ग्रंथ

1) *डॉ. अचलानंद जखमोला*
उच्चारण, वर्तनी और लिपि के अंतर्सम्बंध, राजभाषा भारती अप्रैल-जून 2012, पृ. 6

2) *डॉ. सूरजभान सिंह*
व्यावहारिक हिंदी व्याकरण, अनुवाद तथा रचना, लेखक डॉ. एच. परमेश्वरन।

❑

राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत नियम 3 और नियम 4 में से किसी बात के होते हुए भी, हिंदी में पत्रादि के उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे। अधिनियम की धारा (3) की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अँग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज़ हिंदी और अँगेजी दोनों में ही तैयार किए जाते हैं, निष्पादन किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

विश्व पटल पर हिंदी — विश्व भाषा के रूप में

— वन्दना सक्सेना*

हिंदी भारत की राजभाषा है। परन्तु अब हिंदी दिवस भारत में ही नहीं विश्व में भी हिंदी दिवस में मनाए जाते हैं। हिंदी भारतीय सभ्यता/संस्कृति की भाषा है। भारत की स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित किया था क्योंकि हिंदी पहले से ही भारत की सम्पर्क/सम्प्रेषण की भाषा रही है। इसके बाद हिंदी देवनागरी लिपि में 14 सितम्बर 1949 को भारत संघ की राजभाषा भी बना दी गई (संविधान का अनु॰ 343)। अर्थात् सरकारी कामकाज की भाषा बन गई। लेकिन अब तो हिंदी विश्व भाषा बन रही है। हिंदी को विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा का सम्मान मिल रहा है। इसके परिप्रेक्ष्य में विश्व हिंदी सम्मेलनों ने हिंदी का गौरव और अधिक बढ़ाया है। ताकि हिंदी विश्वभर में प्रतिष्ठित हो।

संपूर्ण विश्व में हिंदी भाषा के बढ़ते प्रचार-प्रसार की वजह से सन् 1975 में नागपुर में विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ। जिसमें हिंदी को विश्व भाषा बनाने का प्रयास पारित हुआ। आज हिंदी विश्व के बहुत से देशों में किसी न किसी रूप में प्रचलित है। मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद, सुरीनाम, गयाना जैसे देशों में हिंदी खूब प्रचारित है। खाड़ी देशों में भी हिंदी सम्पर्क भाषा है। भूमंडलीकरण/उदारीकरण/व्यावसायीकरण/बाजारीकरण आदि के इस दौर में भी हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। विदेशी कंपनियों ने भी हिंदी का महत्व समझा है। अमेरिका में भी हिंदी सिखाने हेतु काफी खर्च किया जाता है। अब हिंदी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा बनाए जाने के प्रयास जारी हैं। अभी चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश एवं अरबी संयुक्त संघ की आधिकारिक भाषाएं हैं। इसमें सातवीं भाषा के रूप में हिंदी को स्थान प्राप्त होने पर हिंदी विश्व भाषा पर प्रतिष्ठित हो सकेगी। लेकिन अब हर भारतवासी का कर्त्तव्य है कि राष्ट्रभाषा/राजभाषा को विश्व भाषा रूप में प्रतिष्ठित करवाने का पुरजोर प्रयास करें।

बहुभाषी देश भारत में हिंदी की वाणी में भारत बोलता है क्योंकि इसमें भारत की आत्मा बसती है, सभ्यता/संस्कृति बसती है। इसका उद्भव प्राचीन भाषा संस्कृत से हुआ है। हिंदी संस्कृत से उद्भूत होकर पाली, प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए हिंदी बनी। 12वीं सदी में मुगलों के शासन में 'फारसी' के साथ हिंदी भी सहभाषा बनी। इसके बाद में हिंदी निरंतर विकास करती गई और विश्व पटल पर छा गई। 'मॉरीशस' में सन् 1926 में 'हिंदी प्रचारिणी सभा' की स्थापना 'तिलक विद्यालय' के रूप में हुई। इसके बाद विश्व हिंदी सम्मेलनों ने हिंदी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्वभर के हिंदी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार एवं हिंदी प्रेमी आते हैं।

विश्व हिंदी सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करना।
2. समय-समय पर हिंदी के विकास का आंकलन करना।
3. विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग/प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना।
4. हिंदी के प्रति प्रवासी भारतीयों के रिश्तों को गहराई/मान्यता प्रदान करना।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि हिंदी को विश्व भाषा बनाने में विश्व हिंदी सम्मेलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अभी तक नौ विश्व हिंदी सम्मेलन हो चुके हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर - 10 जनवरी 1975 से 14 जनवरी 1975
2. द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन, पोर्टलुई मॉरीशस - 28 अगस्त 1975 से 30 अगस्त 1976

*एम.एफ (1) सरस्वती नगर (पानी टंकी के पास) भोपाल-462003

3. तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन, दिल्ली (भारत) – 28 अक्टूबर 1983 से 30 अक्तूबर 1983

4. चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस – 2 दिसम्बर 1993 से 4 दिसम्बर 1993

5. पांचवां विश्व हिंदी सम्मेलन, त्रिनिदाद और टोबेगो – 4 अप्रैल 1996 से 8 अप्रैल 1996

6. छठवां विश्व हिंदी सम्मेलन, लंदन – 24 सितम्बर 1999 से 23 सितम्बर 1999

7. सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन, सूरीनाम – 5 जून 2003 से 9 जून 2003

8. आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यूयार्क – 13 जुलाई 2007 से 15 जुलाई 2007

9. नवम् विश्व हिंदी सम्मेलन, जोहांसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) – 22 सितम्बर 2012 से 24 सितम्बर 2012

इनके द्वारा हिंदी विश्व मंच पर आई। इसी क्रम में भारत सरकार ने प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाए जाने का भी निर्णय किया। जबकि हिंदी दिवस 14 सितम्बर को मनाया जाता है। इस दिशा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का भी योगदान है। दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन भोपाल में 10 सितम्बर 2015 से 12 सितम्बर में हुआ है।

हिंदी को विश्व भाषा के रूप में मान्यता हेतु भारत सरकार ने 'महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय' की स्थापना की है। फरवरी 2008 में मॉरीशस में 'विश्व हिंदी सचिवालय' की स्थापना की गई है। इससे विश्व हिंदी त्रैमासिक निकलती है। हिंदी को विश्व भाषा बनाने में विदेशों से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं का भी योगदान है। कुछ निम्नलिखित हैं—

1. 'भारत दर्शन' – न्यूजीलैंड से प्रकाशित।

2. 'सरस्वती' – कनाडा से प्रकाशित।

3. 'अन्यथा' – अमेरिका से प्रकाशित।

4. 'हिंदी परिचय' एवं — गर्भनाल' प्रवासी भारतीय द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिकाएं हैं। (अमेरिका)

इनके अलावा विश्व हिंदी न्यास समिति द्वारा 'कलायन', कर्मभूमि' हिंदी यू॰एस॰ए॰ की त्रैमासिक पत्रिकाएं भी प्रकाशित की जाती है। इसके अलावा 'प्रवासी टुडे' एवं 'पुरवाई' भी विदेशों से प्रकाशित होती है। अमेरिका का 'टेक्सास' प्रांत हिंदी लोकप्रियता में अव्वल है। इसके अलावा विदेशी माध्यमों द्वारा हिंदी में समाचारों में प्रसारण ने भी हिंदी को विश्व भाषा बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई है। बी॰बी॰सी॰ लंदन, वायस ऑफ अमेरिका, जर्मन रेडियों, विविध भारती (सीलोन) आदि से समाचारों का प्रसारण प्रमुख है। इसके अलावा बहुत बड़ी संख्या में हिंदी संस्थाओं द्वारा विदेशों में हिंदी शिक्षण होता है। हिंदी विश्व के अनेक देशों में पढ़ाई जाती है। 'इंटरनेट' पर सरल हिंदी डॉट काम वेबसाइट पर हिंदी शीर्षक के अंतर्गत हिंदी समाचार, हिंदी विकिपीडिया, हिंदी जाल निर्देशिका एवं यूनिकोड संबंधी जानकारी प्राप्त होती रहती है। अब हिंदी 'भूमंडलीकरण युग' में विश्व भाषा बन चुकी है। विश्व में हिंदी भाषा की लोकप्रियता बहुत बढ़ गई है। अब इसे विश्व की प्रथम भाषा का गौरव बनने में अधिक समय नहीं है।

हिंदी – विश्व भाषा के रूप में

विश्व भाषा के रूप में हिंदी समग्र भूमंडल की तीसरी भाषा है। मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों में हिंदी का प्रयोग व्यापक है। यहां हिंदी को लोग अपनी संस्कृति का अंग मानते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी विश्व भाषा है। मॉरीशस हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष 'श्री जयनारयण राम' के शब्दों में 'हिंदी उपनिषद, रामायण और गीता की बेटी बनकर आयी और उनके धर्म एवं संस्कृति का अंग बनकर अभी भी जीवित है।' यहां सामाजिक, सांस्कृतिक तथा जनसंपर्क की भाषा हिंदी है। इसे मानक हिंदी कहते हैं। इसी में समाचार पत्र, पत्रिकाएं निकलती हे। मॉरीशस में 1903 में 'हिन्दस्तानी' एवं 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' का प्रकाशन हुआ। बाद में 'आभा', 'दर्पण' 'रणभेरी' आदि भी प्रकाशित हुई। फीजी में सन् 1923 में 'फीजी समाचार' निकला। इसके बाद 'भारत पुत्र', 'बृद्धिवाणी, 'जाग्रति', 'जयफीजी', सनातन संदेश' का प्रकाशन हुआ। जिन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाया। विश्व भाषा तक पहुंचाया। प्रमुख चेक शिक्षाविद 'डॉ॰ ओदेलोन स्मेकल' के शब्दों में 'हिंदी ज्ञान मेरे लिए अमृतपान है, जितनी बार भी पीता हूं, उतनी बार लगता है, पुनः जीता हूं।'

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी बंगलादेश, श्रीलंका, इंडोनेशिया, मलेशिया, कम्बोडिया आदि देशों में सामाजिक, सांस्कृतिक, जनसम्पर्क की प्रेरणा है। इसके अलावा अमेरिका, इंग्लैड, रूस, फ्रांस, जापान, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का काम हो रहा है। आज हिंदी विश्व के कई देशों में पढ़ाई जाती है। लगभग 175 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इनमें से 45 विश्वविद्यालय अमेरिका में हैं। जिनमें कैलिफोर्निया, शिकागों, टेक्सास, कोलंबिया प्रमुख है। हिंदी सामर्थ्यवान भाषा है, जिसकी जड़ें मजबूत हैं। इसलिए यह विश्वभर में किसी न किसी रूप में जीवित है। हिंदी आज सिर्फ भारत की राष्ट्रभाषा न रहकर विश्व की महान भाषा बन गई है। भूमंडलीकरण/उदारीकरण के दौर में भारत के बाहर भी कई देशों जैसे नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद, कानेटा आदि में सभ्यता/संस्कृति को जोड़ने वाली भाषा बन गई है। 'विश्वगांव' की परिकल्पना में हिंदी सम्प्रेषण की दृष्टि से व्यापार व्यवसाय, वाणिज्य, सभ्यता, संस्कृति को जोड़ने वाली उपयोगी भाषा बन गई है। हिंदी की विश्व भाषा के रूप में व्यापकता बढ़ाने में दृश्य मीडिया एवं हिंदी फिल्मों का भी खासा योगदान है। विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों की संपर्क भाषा हिंदी है। हिंदी प्रचार-प्रसार में संचार माध्यमों की भूमिका भी कम नहीं है।

हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में हिंदी साहित्य के साहित्यकारों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसमें प्रवासी हिंदी साहित्यकार जैसे फिजी के समला प्रसाद मिश्र, मॉरीशस के अभिमन्यु अनन्त, प्रो॰ वासदेव विष्णु दयाल, सूरीनाम के ब्रजेन्द्र कुमार भगत, मुंशी रहमान खान आदि प्रमुख है। फिजी में हिंदी संवैधानिक संसदीय मान्यता प्राप्त भाषा है। चीन के प्रो॰ चिन्हिन होन ने 'रामचरितमानस' का हिंदी में अनुवाद किया है। टोक्यों विश्वविद्यालय के 'प्रो॰ पाथाओ दोई' ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सराहनीय परिश्रम किया है। चेक के प्रवासी साहित्यकार 'श्री अेदेलन स्मेकल' का योगदान भी महत्वपूर्ण है। विश्व स्तर पर हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है। श्री अटल बिहारी के शब्दों में—

> **''गूंजी हिंदी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार।**
> **राष्ट्रसंघ के संघ में - हिंदी की जयकार।।''**

21वीं सदी में हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, संचार माध्यम की भाषा, आडियो, वीडियो, फोर्स मीडिया, दृश्य मीडिया, सिनेमा, समाचार रेडियो के साथ-साथ विश्वभाषा बन गई है क्योंकि हिंदी सर्वाधिक सहज, सरल, सुबोध, बोधगम्य, प्रवाहमयी भाषा है। इसके अलावा इसमें हर भाषा के शब्दों को ज्यों का त्यों आत्मसात करने की विलक्षण शक्ति है। इसीलिए इसमें ऊर्दू, फारसी, अरबी, संस्कृत, पालि, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के शब्द भी शामिल हैं। हिंदी का यही लचीलापन उसे विश्वभाषा में विकसित करता है। इसीलिए हिंदी की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त हो रही है। हिंदी अपनी मनोवैज्ञानिक लिपि देवनागरी में विश्व स्तर पर विकास करती जा रही है। आज हिंदी अपनी अधोसंरचना, मनोवैज्ञानिक, प्रभविष्णुता, सर्वग्राह्यता, सम्प्रेषणीयता, सरलता, सुलभता, रोचकता, समृद्ध शब्द भंडार, वैज्ञानिकता के कारण विश्व भाषा का रूप ले चुकी है। अभी चीनी भाषा प्रथम स्थान पर है पर हिंदी प्रथम स्थान पर आने की दौड़ में शामिल है। विश्व के लगभग चालीस से अधिक देश के लोग हिंदी समझते हैं क्योंकि हिंदी की शब्द सम्पदा विशाल है। हिंदी शुरू से ही साधु, संतों, फकीरों, पर्यटकों एवं जन-सामान्य की सम्पर्क एवं सम्प्रेषण की भाषा रही है। इसीलिए हिंदी में असीमित साहित्य सृजन हुआ है। जो विश्व भर में फैला है। पढ़ा जाता है। जाना जाता है।

आज विश्व के लगभग 70 करोड़ से अधिक लोग हिंदी जानते हैं। डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल की शोध रिपोर्ट- 2015 के अनुसार हिंदी सबसे लोकप्रिय भाषा है। इन्हीं की रिपोर्ट की एक साधारण गणना निम्नलिखित है—

1. भारत में हिंदी जानने वाले	1012 मिलियन
2. पाकिस्तान में हिंदी जानने वाले	165 मिलियन
3. बंगलादेश में हिंदी जानने वाले	70 मिलियन
4. नेपाल में हिंदी जानने वाले	25 मिलियन
5. 6 राष्ट्रों में हिंदी जानने वालों का योग	1272 मिलियन
6. विश्व के अन्य राष्ट्रों में हिंदी जानने वाले	28 मिलियन
सम्पूर्ण विश्व में हिंदी जानने वाले	1300 मिलियन

(डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा किए गए शोध अध्ययन-2015 के अनुमानित आंकड़े)

केरल में संपर्क भाषा-हिंदी

—अरविंदाक्षन एम॰*

एक भाषा-भाषी जिस भाषा के माध्यम से किसी दूसरी भाषा के बोलने वालों के साथ संपर्क स्थापित कर सके, उसे संपर्क-भाषा कहते हैं। अत: ''संपर्क-भाषा से तात्पर्य उस भाषा रूप से है, जो समाज के विभिन्न वर्गों या निवासियों के बीच संपर्क के काम आती है। इस दृष्टि से भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलने वालों के बीच हिंदी एक संपर्क-भाषा है।''

आमतौर पर हिंदी के विविध रूपों में राष्ट्रभाषा हिंदी, राजभाषा हिंदी राज्यभाषा हिंदी, संपर्क भाषा हिंदी प्रमुख है। हिंदी कई राज्यों की राज्य भाषा है, संघ एवं कई राज्यों की राजभाषा है, कई हिंदीतर राज्यों में संपर्क भाषा के रूप में भी प्रयोग किया जा रहा है। संपर्क भाषा का प्रयोग तब आ जाता है जब किसी हिंदीतर राज्य के लोग अन्य भाषा भाषी राज्य में जाते वक्त प्रयोग करता है। जैसे केरल का एक व्यक्ति तमिलनाडु या कर्नाटक जाता है, तथा उस व्यक्ति को तमिल या कन्नड की जानकारी नहीं है तो वहां के लोगों से संपर्क करने के लिए जो भाषा का प्रयोग करता है उसे संपर्क भाषा कहलाती है।

आज हिंदी भारत में हर जगह बोली और समझी जाती है। इस दृष्टि से हिंदी भिन्न-भिन्न बोलियों-भाषाओं को बोलने वाले अनेक वर्गों के बीच संपर्क-भाषा की भूमिका निभा रही है। अखिल भारतीय भाषाओं में से केवल हिंदी ही ऐसी भाषा है, जो संपर्क-भाषा के रूप में प्रयोग होती है। देश के किसी भी कोने में चले जाएं, कहीं भी चले जाएं, लोग हिंदी बोलचाल की भाषा के रूप में थोड़ी बहुत ही सही, किंतु बोल और समझ ही लेते हैं। स्थिति यह है कि हिंदी पूरे भारत की सांस्कृतिक चेतना से जुड़ी हुई है।

एक संपर्क भाषा पूरे देश के लोगों को आपस में जोड़ने की ताकत रखने वाली भाषा होनी चाहिए। दो भिन्न भाषा-भाषी राज्यों के बीच एक भाषाई माध्यम उपलब्ध होने के लिए एक सशक्त संपर्क भाषा की जरूरत है। निस्संदेह हम कह सकते हैं कि हिंदी में वह ताकत व गुण अन्य भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी की तुलना में सर्वाधिक हैं।

केरल की वर्तमान स्थिति

हाल ही में लिए गए गणना के अनुसार केरल में लगभग 25 लाख से ज्यादा कामगार हैं, जो भारत के अन्य राज्यों जैसे बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि इलाकों से केरल में अपने कारोबार करने के लिए आ गए हैं। केरल उनके लिए एक दूसरा गल्फ राज्य जैसा है चूंकि यहां मजदूरी की दर बहुत ज्यादा है तथा विविध प्रकार के काम की उपलब्धता बहुत है। वे अपने इलाके की भाषा जैसे बंगाल राज्य के बंगाली भाषा, महाराष्ट्र की मराठी, राजस्थान की राजस्थानी आदि का प्रयोग केरल में नहीं करते हैं। वे हिंदी के जरिए केरल वासियों से संवाद करते हैं।

केरल में मछली बिकने वालों से लेकर प्रोविषणल स्टोर के स्टोर कीपर तक को अपने धंधा चलाने के लिए कुछ बोलचाल हिंदी की जानकारी बहुत अनिवार्य बन गया है। आजकल कालिकट के प्रत्येक होटल से लेकर बारबर शॉप तक कम से कम एक हिंदी भाषा बोलने वाले को कामगार के रूप में पाया जाता है। वे हिंदी में ही बात करके अपना धंधा करते हैं। इन दिनों केरल वासी मलयाली को होटेल में भोजन का ऑर्डर देने से लेकर अपने बाल कटवाना तक किसी भी कार्य सुगमता से निभाने हेतु कुछ बोलचाल की हिंदी का प्रयोग करना पड़ रहा है। इन लोगों के संपर्क की वजह से हर एक मलयाली द्वारा आजकल दिन ब दिन एक-एक हिंदी शब्द जोड़कर अपनी हिंदी की वृद्धि की जा रही है। इस प्रकार मलयालियों के संपर्क से हिंदी भाषी कुछ मलयालम भी सीख लेते हैं। तो फायदे दोनों भाषाओं के हो रहे हैं। इस प्रकार दोनों भाषा-भाषियों के आपस में मेल से मलयालम एवं हिंदी बोलने वालों की वृद्धि हो रही है। इस संदर्भ में हाल ही में जारी यह पत्र वार्ता महत्वपूर्ण हैं कालिकट के एक सरकारी प्राइमरी विद्यालय के पहली कक्षा में लगभग 15 छात्र-छात्राएं अन्य राज्यों से आए

*'वृंदावन', करूवश्शेरी, कोषिक्कोड-673010, केरल

कामगारों के बच्चे हैं और वे सब प्रथम भाषा के रूप में मलयालम सीखने जा रहे हैं।

कालिकट शहर में हिंदी के प्रयोग जानने के लिए आप एक संडे को मिटाई तेरु (कालिकट का एक प्रशस्त स्ट्रीट) का भ्रमण करें। वहां मार्केट में कपड़े बेचने वालों से लेकर जूते पोलिष करते कामगार तक किसी से भी आप सुगमता से हिंदी में बात कर सकते हैं। चूंकि वे सब समझ गए हैं कि हिंदी बिना संडे मार्कट में सफलता से कारोबार करना बहुत मुश्किल है तथा वे अपने निरंतर संपर्क से बोलचाल की हिंदी सीख लिए हैं।

एक बार जब मैं कारप्परंब के बैपास के किनारे पर लगे मछली मार्किट में खड़ा था। वहां मछली बेच रहे एक दुकान में तीन-चार बंगाली लोग पहुंचे और दुकानदार से हिंदी में पूछा–मछली क्या भाव है ? दुकानदार को पता चला कि वे मछली का भाव पूछ रहे हैं लेकिन वे उनके सवाल के जवाब देने में असमर्थ रहे। पड़ोस वाला दुकानदार, जिन्हें हिंदी आती है, वह यह सुनी तथा उन्हें पास बुलाया–आओ भाई मछली लो आयला सौ के चार। बंगाली लोग उस दुकानदार से मछली लेकर चले गए। जिस दुकानदार हिंदी न जानने की वजह से अपनी मछली नहीं बेच सका उन्होंने मुझसे पूछा तो मैंने उन्हें मलयालम के जरिए हिंदी में मछली की भाव–जैसे चार अयला का सौ रुपए या पांच का सौ आदि बताने संबंधी जानकारी दी। बाद में मुझे पता चला कि वे कुछ ही दिनों में अपने निरंतर प्रयास से बोलचाल की हिंदी में सक्षम बन गए। इस तरह संपर्क भाषा का ज्ञान इन लोगों की आवश्यकता बन गई है। अत: भाषा जब पेट का साधन बन जाते हैं तो उसे किसी भी तरीके से हासिल करने के लिए लोग प्रयास करते हैं।

पंतीरंकाव से मानंचिरा तक और वापसी जाने वाली एक बस के सभी स्टोपों का नाम हिंदी-मलयालम में बड़े अक्षरों में बस के दोनों तरफ इसलिए लिखा गया है कि मलयालम न जानने वाला लोग भी किसी से बिना जगह पूछे बस में सफर कर सकें। मतलब यह भी है कि इससे बस मालिक ज्यादा पैसा भी कमा सकें। कालिकट के किसी भी स्ट्रीट में आप घूमिए आपको कम से कम जरूर एक हिंदी विज्ञापन देखने को मिलेगा जिसमें हिंदी में लिखा होगा–होटल के लिए बैरा चाहिए, बारबर चाहिए, टैलर चाहिए जैसे। यह क्यों ? जरूर उन कामगारों को आकर्षित करने के लिए है, जो अन्य भाषा-भाषी हो, जिन्हें हिंदी की जानकारी हो।

आजकल केरल वासियों को किसी भी घरेलू कार्य करवाने के लिए हमारे इलाके के कामगारों की सेवा बहुत विरल से मिलती जा रही है। ज्यादातर हमें केरल में आए अन्य भाषा-भाषी लोगों से काम करवाना पड़ रहा है। इसके लिए हमें भी अपनी हिंदी की वृद्धि करनी पड़ रही है। इस तरह हम निस्संदेह स्थापित कर सकते हैं कि आपसी मिलन से संपर्क हिंदी की लोकप्रियता केरल में बढ़ रही है।

आज हिंदी, लोगों के हृदय की भाषा बन चुकी है तथा इसका प्रचार-प्रसार पहले की अपेक्षा काफी बढ़ा है। हमें अपनी भाषा व उसके दायित्वों के प्रति सजग रहने की आवश्यकता हैं हिंदी को बहता नीर बनाएं कूप का जल नहीं। हिंदी को बहने दीजिए, उस प्रवाह में अधिक ऊर्जा प्रधान करके बहाव को तेज करें। हिंदी सभी भारतवासियों को एकता के सूत्र में पिरोती है जिसके कारण भारतवासी गर्व से कहते हैं—

''हिंदी है हम वतन है हिंदोस्तां हमारा'' ❑

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा आयोजित त्रैमासिक अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में हिंदी अनुवादकों के अतिरिक्त अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण हेतु नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी अँग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा इस कार्य के लिए किया जा सकता हो।

मनोरंजन जगत और हिंदी

—डॉ रविता पाठक*

विश्व में हॉलीवुड के बाद फिल्म निर्माताओं में भारत के बॉलीवुड का दूसरा स्थान माना जा रहा है। भारत में सर्वाधिक फिल्में हिंदी में बनाई जाती हैं। देश की अधिकांश जनता हिंदी को समझने व बोलने लगी हैं। विदेशों में भी हिंदी की फिल्मों का व्यावसायिक दृष्टि से काफी बड़ा क्षेत्र विशेषकर इस्लाम देशों में हो चुका है।

फिल्मों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। यदि भारतीय फिल्मों और भारतीय गानों की बात करें तो इनके प्रति देश-दुनिया में दीवानगी बढ़ी है। हिंदी फिल्म उद्योग 'बॉलीवुड' ने भी भारतीय सभ्यता व संस्कृति के विभिन्न चित्रों को उकेरा है। हिंदी का विरोध कर रहे कुछ क्षेत्रों में भी हिंदी फिल्मों की मांग बढ़ रही है। देश में ही नहीं विदेशों में भी टेलीविजन पर सबसे अधिक हिंदी चैनल ही प्रचलित एवं प्रसिद्ध हैं जो इस भाषा की लोकप्रियता व व्यापकता का प्रमाण है। 'शोले', 'रंग दे बसंती', 'लगान', बजरंगी भाई, तथा ऑस्कर विजेता 'स्लमडॉग मिलेनियम' जैसी फिल्मों ने विश्व का ध्यान हिंदी सिनेमा की ओर खींचा है तथा नए कीर्तिमान स्थापित किया है। प्रशसकों की इस दीवानगी ने हिंदी भाषा के साथ-साथ हिंदी फिल्मों के फलक को नई उँचाइयां दी हैं। मोटे दामों में बिकते भारतीय फिल्मों की ओवरसीज राइट विदेशों में हिंदी फिल्मों के बढ़ते बाजार और इनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इस तरह मनोरंजन जगत और बाजार से होते हुए हिंदी, देश व क्षेत्र की सीमाओं से परे अपनी वैश्विक पहचान बना रही है। इसका श्रेय भूमंडलीकरण, केबल टीवी एवं सेटेलाइट टीवी नेटवर्क को ही जाता है।

हिंदी जनभाषा के कारण ही विदेशी मीडिया के सबसे बड़े व्यवसायी रूपर्ट मर्डोक 'स्टार चैनल' लेकर आए। इस अंग्रेजी चैनल का बड़ी धूमधाम से शुभारंभ किया गया। सोनी, डिस्कवरी आदि भी अन्य अंग्रेजी चैनल हिंदी भाषा में कार्यक्रम लेकर आए। बदलते परिवेश को अनुभव करके सभी ने अंग्रेजी चैनल को हिंदी में परिवर्तित करना पड़ा ताकि दर्शकों की अपार संख्या बढ़ाकर अपने आर्थिक व्यापार की अभिवृद्धि से अधिक धन कमा सकें। यूरोप ओर अमेरिका में भी हिंदी का कार्य पगति पर है। एक शोध के अनुसार अमेरिका में टी वी चैनल के कार्यक्रमों में हिंदी कार्यक्रम सबसे अधिक देखे जाते हैं। फ्रांस, इटली, स्वीडन, आस्ट्रेलिया, नार्वे, डेनमार्क, स्विटजरलैंड, हालैंड, पोलैंड, चेक, जर्मन, रोमानिया, बलगेरिया, हंगेरी आदि राष्ट्र भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में कदापि पीछे नहीं हैं। इन सभी देशों में हमारी हिंदी फिल्में बड़े चाव के साथ देखी जाती हैं तथा उसकी मांग बढ़ी है।

टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यमों में सबसे सशक्त संचार माध्यम है। दूरदर्शन द्वारा हिंदी प्रचार का जो अभियान आरंभ किया गया, उसकी कमान अब विभिन्न सेटेलाइट चैनलों ने संभाल ली है। टी आर पी में दर्ज आंकड़ों पर गौर करें तो आज देश में हिंदी समाचार और मनोरंजन चैनलों के दर्शकों की संख्या सर्वाधिक है। हिंदी धारावाहिकों के पात्रों की लोकप्रियता केवल इन पात्रों या कथानकों भर की लोकप्रियता नहीं बल्कि भारत में हिंदी की लोकप्रियता की भी कसौटी है। टेलीविजन पर प्रसारित रामायण, महाभारत, चंद्रकांता, झांसी की रानी, टीपू सुल्तान, अशोका सम्राट, द्वारकाधीश श्रीकृष्ण, जय वीर हनुमान, सास भी कभी बहू थी, पवित्र रिश्ता, यह रिश्ता क्या कहलाता है ? मेरे अँगने में, ससुराल, गेंदा फूल, चित्रहार, रंगोली, छायागीत, भजन संध्या, खाना खजाना, कृषि दर्शन, योग प्राणायाम, डिस्कवरी, बच्चों के कार्टून, चुलबुली फिल्में चटपटी गपशप के साथ हिंदी भाषा के बदलते स्वरूप के रूप

*सोमिन्द्रा पाली, भूबंदंगा, बंधेर नीचे, वार्ड नं॰ 05, डॉ॰ बोलपुर, जिला: बीरभूमि-731204 (पश्चिमी बंगाल)

में विभिन्न चैनल्स कोमीडी सर्कस, कौन बनेगा करोड़पति, रियालिटि शो, जस्ट डांस, बिग बॉस आदि प्रसारित हो रहे धारावाहिक हिंदीतर भाषियों में भी हिंदी के प्रति उत्साह पैदा करते हैं। इससे यह बात साफ होती है कि लोग बहुत अच्छी तरह हिंदी समझ तो लेते हैं मगर बोलने से कतराते हैं। भविष्य में यह मीडिया का साधन हिंदी भाषा को विश्व भाषा बनाएगा।

रेडियो पर हिंदी में प्रसारित कार्यक्रमों ने लाखों लोगों को हिंदी सीखने पर मजबूर कर दिया। फिल्मी गाने, समाचार, आपकी पसंद, आपके पत्र हमारे जवाब तथा विविध भारती से प्रसारित कार्यक्रमों में 'अमीन सायानी' की आवाज तथा सखी सहेली हिंदी प्रेमियों के सिर चढ़कर बोलती है।

आज के अधिकांश अखबार और चैनल हमारे विचारों के साथ हमारी भाषा भी परिष्कृत कर रहे हैं।

इलेक्ट्रानिक माध्यमों ने भी हिंदी को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विभिन्न राष्ट्रीय समारोहों तथा खेल आयोजनों का हिंदी में प्रस्तुत किया गया आंखों देखा हाल आज लगभग सभी चैनलों पर बहुत बड़े दर्शक वर्ग द्वारा देखा जाता है।

आज हिंदी रेडियो के प्रसार के कारण शिक्षा, सूचना और मनोरंजन की भाषा बन गई है। इतना ही नहीं तो वायस ऑफ अमेरिका, चीन रेडियो, बीबीसी, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश के प्रतिष्ठित रेडियो में हिंदी कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं।

दूरदर्शन के कारण भी हिंदी का विकास हो रहा है। हिंदी फिल्मों ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अंग्रेजी को पीछे छोड़ दिया है। हिंदी फिल्मों ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाई है। अरबी, फारसी बोलने वालों की दुनिया में हिंदी अनजानी नहीं है। हिंदी मनोरंजन चैनलों ने वहां भी हिंदी को फैलाया है।

हिंदी अपने बलबूते पर फल-फूल रही है और गैर हिंदी भाषी प्रान्तों में टीवी, न्यूज चैनलों, सिनेमा, दूरदर्शन सीरियलों एवं हिंदी गीतों के माध्यम से घर-घर में विराजमान हो रही है। बच्चे, बूढ़े, जवान सभी की जुबान से हिंदी गीत, फिल्म एवं टीवी सीरियलों के संवाद सुनने को मिलते हैं। ❑

राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत केंद्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य यथा संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि, आसाधारण दशाओं को छोड़कर हिंदी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अँगेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा। 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों आदि को पत्रादि मामूली तौर पर हिंदी में होंगे और यदि इनमें से किसी को पत्रादि अँग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनकी हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

अनुवाद

साहित्य संतरण का सुरमई सेतु - अनुवाद

—राधेश्याम भारतीय*

किसी फिल्मी गीतकार ने अपने प्रियतम के अनिद्य सौंदर्य की शब्दों में अभिव्यक्ति की बेचारगी को कुछ यूं बयां किया है—

''तुमको देखा है मेरी नजरों ने, तेरी तारीफ हो मगर कैसे?
ना जुबां को दिखाई देता है, ना निगाहों से बात होती है।।''

अपनी प्रियतमा की सौंदर्य-प्रशंसा की अभिव्यक्ति के लिए केवल वाणी अथवा चक्षुओं की अक्षमता से उपजी बेबसी में गाई गई ये पंक्तियां भले हमें कितनी ही सीधी-सादी सी प्रतीत होती हों लेकिन इन दो पंक्तियों के ह्वाद में छुपे हुए अन्तर्भाव को हूबहू शब्द, भाव अथवा मर्म को 'लक्ष्य भाषा' में अनूदित कर सकने में छिपी लाचारगी की टीस बहुत स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर हो जाती है। जहां एक ओर जीभ जिसका मूल कर्तव्य वैशिष्ट्य ही वाणी की वाग्मिता होता है, अपने प्रियतम के सौंदर्य की सटीक प्रशंसाभिव्यक्ति नहीं कर पा रही है। क्योंकि जिह्वा के पास चाक्ष्य-सामर्थ्य बिल्कुल भी नहीं होने के कारण वह अपने प्रियतम को प्रत्यक्षत: देख ही नहीं पाती है। वहीं दूसरी ओर दृष्टि-संपन्न वे मृग लोचन जिनमें दृष्टव्य शक्ति के लिए नेत्र ज्योति के वैशिष्ट्य गुण धर्म की उपलब्धता तो अवश्य है लेकिन उनके पास कथनी के लिए जिह्वा नहीं होने के कारण उनके लिए भाव-प्राकट्य असंभव है। यानि दृष्टि-चैतन्यता की संज्ञा वाले नेत्रों के पास जिह्वा नहीं है और वाग प्रवीणा जिह्वा के पास नेत्रों का संबल नहीं है। कुछ कुछ ऐसी ही 'गूंगे के गुड की सी' अव्यक्तता की दुरुह स्थिति होती है 'स्त्रोत भाषा' के शब्द, अर्थ, भाव एवमं वाक्य विन्यास को 'लक्ष्य भाषा' में अनुवाद करने में भी। फिर भी मानव सभ्यता के साथ-साथ आदि काल से ही भाषा विकासोन्मुखी सृष्टि, दृष्टि, दिशा दशा, गति मति आदि से कार्य-व्यवहार का निर्वहन करते हुए सुसंवाद के अधिकतम और सटीक संप्रेषण-कर्म सतत जारी है–निर्बाध गति से। भले ही शब्दों के साथ-साथ अनेक बार मौन, श्वास, प्रश्वास, संकेत 'नैनन कहत, भौंहन नटत' जैसे किसी भी माध्यम से अनुवाद, 'स्रोत भाषा' से 'लक्ष्य भाषा' की ओर यात्रायित होता ही रहता है, अविरल अविराम।

विकासोन्मुखी भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद के सृजन, पुष्पन पल्लवन, संवर्धन की सृष्टि, दृष्टि, दिशा, दशा, गति मति भले क्षिप्रतर ना सही लेकिन मंथर गति से निरन्तर आगे ही आगे समप्रवाहित होती ही रहनी चाहिए–यही हमें अभीष्ट भी है और अनिवार्य भी। नि:संदेह किसी एक मन की बात गंतव्य तक पहुंचाने का कोई तो रास्ता होना ही चाहिए। किसी भी साहित्य, धर्म, दर्शन, संस्कृति इतिहास को दूसरी जुबां वालों तक पहुंचाने का हमें जो सीधा और सरल एक मात्र नजर आता है, वह है अनुवाद। साधारण अनुवाद, प्रशासनिक/कार्यालयीन अनुवाद, शैक्षणिक अनुवाद, भावानुवाद, वैज्ञानिक अनुवाद आदि अनुवादों की श्रेणियों में भी सर्वाति दुष्कर किंतु महत्वपूर्ण है–साहित्यिक अनुवाद।

रामचरित मानस रूस में लोकप्रिय नहीं हुई होती यदि अल्कसी बारानिक्कोव उसे रूसी में अनुवादित नहीं करते। पंजाबी कवि वारिस शाह कौन थे? या अमृता प्रीतम का 'पिंजर' क्या कहता है? यह फ्रांसीसी नहीं जान पाते यदि उसे फ्रांसीसी/फ्रेंच में अनुवादित नहीं किया जाता। और तो और रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' 'साग आफरिंग' (अंग्रेजी में स्वयं अनुवादित) में परिवतर्तित हुए बगैर भारत को नोबुल पुरस्कार प्राप्तकर्ता का गौरव भी नहीं दिला पाती। अनूदित हुए बिना तो हिंदी भाषा भाषियों के लिए विख्यात लेखिका अरुंधति राय का बुकर पुरस्कार विजेता नावेल 'A God Of Small Things' 'मामूली चीजों का देवता' नहीं बन पाता। अनूदित हुए बिना ग्रीक के इलियड और ओडेसी तथा संस्कृत के रामायण और महाभारत विश्व स्तर पर चर्चित, सम्मानित और व्याख्यायित नहीं हो पाते। कहने का तात्पर्य यह कि न केवल परस्पर विचारों के आदान प्रदान के लिए वरन् समग्र साहित्य व संस्कृति की परस्पर समझ बूझ के लिए आज की दुनिया की अनिवार्यता है–अनुवाद। कहने सुनने में बहुत आसान से लगने वाले शब्द 'अनुवाद' की व्यवहारिक

*281-सी, विनोबा विहार, माडल टाउन के पास, मालवीय नगर, जयपुर-302017

डगर इतनी सीधी सादी नहीं है। अनेकानेक कठिनाइयों से दोचार होना होता है।

एक सीमा तक ही शब्द, शब्दों का अर्थ और उसके पर्याय अपनी अभिव्यक्ति दे पाते हैं फिर आगे एक ऐसा भी क्षण आता है जब शब्दों की जगह मौन अथवा उसके अंर्तहार्द भाव जीवित हो उठते हैं जहां संवेदन ही संवाद बन मुखरित हो उठता है। किसी भाव प्रवण कवि ने तो वाचिक शब्दों का भी मजाक उड़ाते हुए कहा है:—

''जीभ तो व्यर्थ ही शब्दों का समा रचती है।
आंख ही बस आंख का सब हाल बता सकती है।।''

यद्यपि विश्व की लगभग 6326 ज्ञातव्य भाषाओं (कैम्ब्रिज इन्साइक्लोपीडिया ऑफ लैंग्वेज के अनुसार) को जानना समझना किसी भी एक व्यक्ति के बूते के बाहर की बात है किंतु किसी भी साहित्य को कह पाना तब बहुत ही आसान हो जाता है जब उसे लक्ष्य भाषा में अंतरित कर दिया जाए। एक भाषा में व्यक्त संवेदनों का दूसरी भाषा में अनुवाद कर पाना दोनों भाषाओं के साथ न्याय कर पाना संभव नहीं हो पाता। साहित्यिकों और अनुवादकों का एक ऐसा वर्ग है जो अक्षर दर अक्षर हूबहू साहित्यिक अनुवाद को असंभव मानता है। क्रौंचे, वर्जिनिया वूल्फ, दांते, सैमुअल जॉनसन, वाल्टेयर, सर जॉन डेनहाम, शावरमैन, जवाहरलाल नेहरु, राजगोपालाचारी आदि इसी श्रृंखला के साहित्य प्रेमी हैं। दूसरा वर्ग ऐसा है जिसने साहित्यिक अनुवाद को असंभव तो नहीं मानता पर अत्यंत दुष्कर अवश्य मानता है। इसमें महादेवी वर्मा, सिसरो, ड्राइडेन, सेरवांते, रवीन्द्र नाथ टैगोर के नाम उल्लेखनीय हैं। क्या कल कल बहता जल, हवा के चलने की सरसराहट, पक्षियों की चहचहाहट, चितवन की छांव, थरथराते ओंठ, काजल लिखी आंखों, हवा में लापरवाह बिखरी केशराशि को किसी भी भाषा में ज्यों का त्यों अनुवादित किया जा सकता है?''कविता का अनुवाद असंभव है। क्या संगीत का अनुवाद हो सकता है?''–एक ओर वाल्टेयर जब यह कहते हुए साहित्य के अनुवाद के अस्तित्व को ही नकार देते हैं तो दूसरी ओर सेरवांते उसकी उलट छवि को स्वीकारते हुए कुछ आस बंधाते हैं, ''एक भाषा से दूसरी भाषा में किए गए अनुवाद को देखना किसी छपे कपड़े को उल्टी तरफ से देखने के समान है।'' ऐसे में रवीन्द्र नाथ टैगोर की उक्ति सहज स्वीकार्य है कि ''लालित्य की रक्षा करते हुए स्पष्टता के साथ छंदानुवाद अत्यंत दुष्कर कार्य है।'' वास्तव में एक शीशी से दूसरी शीशी में इत्र डालने जैसा काम अनुवाद है। इत्र भी डल जाए और गंध भी न बिखरे।

कवि राबर्ट फ्रास्ट की सर्वजनीय प्रसिद्ध पंक्तियां हैं—

"The woods are lovely dark and deep
But I have to promises to keep
Miles to go, before I sleep
Miles to go, before I sleep"

इन भावप्रवण प्रेरणात्मक पंक्तियों का किसी सिद्धहस्त कवि हृदय अनुवादक का लिखा अनुवाद मुझे मिला—

''गहन, सघन, मनमोहक वनतरु मुझको आज बुलाते हैं,
किंतु किए जो वादे मैंने, याद मुझे आ जाते हैं,
अभी कहां आराम बदा, ए मूक निमंत्रण छलना हैं,
अरे, अभी तो मीलों मुझको, मीलों मुझको चलना है।''

यह अनुवाद ही इतना परिपूर्ण, परिपक्व व भावप्रवण है कि अपने आप में पूरा लगता हैं किसी को यदि पता न हो कि यह अनुवाद है तो वह इसे ही मूल रचना समझ काव्य रस से विभोर हो उठेगा। मेरी अकिंचन दृष्टि में यही समरूपता उत्कृष्ट अनुवाद की पहचान है।

शेक्सपीयर के मैकबेथ नाटक का अनुवाद सर्वश्री मथुराप्रसाद चौधरी, हरिवंश राय बच्चन, रांगेय राघव तथा बी॰ शर्मा आदि कई साहित्यिकों ने किया है पर रघुवीर सहाय ने 'बरनम वन' के नाम से इसका जो अनुवाद किया है वह श्रेष्ठतम की गिनती में आता है क्योंकि उसमें जीवन मूल्यों के भावों की जो गमक है वह रचना के मूल सांस्कृतिक परिवेश को परिलक्षित करती है।

किन्हीं भी दो भाषाओं के मध्य बंधे सेतु का परिवेशानुकूल होना बेहद जरुरी है—

As white as snow (बर्फ जैसा सफेद)....विदेशी परिवेश
As white as milk (दूध जैसा सफेद)....भारतीय परिवेश

As easy as ABC (विदेशी परिवेश) है जबकि क ख ग जैसा आसान (भारतीय परिवेश)।'कुलदीपक' शब्द का शाब्दिक अंग्रेजी अनुवाद होगा–Lamp of the Family. जबकि विदेशी परिवेश के अनुसार उपयुक्त है–Hope of the Family. गद्य, पद्य अथवा नाटक के अनुकूल एक ही शब्द की प्रयोगाधारित कई विसंगतिपूर्ण संदर्भों में प्रयुक्तियां होती हैं। जैसे–I am upset. मैं परेशान हूं। My programme is upset.. मेरा कार्यक्रम

गड़बड़ा गया। भाषायी गठन के अनुरूप कई बार स्रोत भाषा के एक शब्द के लिए लक्ष्य भाषा के शब्द समूह का प्रयोग करना होता है। जैसे–शहर में बड़ी शांति थी। City was calm and quite. एक ही शब्द के लिए जब अनुवादक के सामने कई विकल्प होते हैं तो संदर्भगत उपयुक्तता अनिवार्य शर्त बन जाती हैं जैसे 'मुझे विश्वास है' के लिए I am sure/confident/ faith/certain etc. एकबारगी सभी ठीक प्रतीत होते हैं पर संदर्भगत उपयुक्तता का निर्धारण अनुवादक की जानकारी और विवेक पर निर्भर करता है। विचार करें तो किसी भी शब्द का कोई भी पूर्णरूपेण पर्याय एक सा हो ही नहीं सकता। सबके प्रयोगगत अर्थ अलग अलग होते हैं जैसे पानी (पीने जैसे साधारण अर्थ में), जल (मंदिर में), वारि (काव्यगत प्रयोग में), नीर (पवित्रता, शुचिता का प्रतीक) के प्रयोग पृथक होते हैं। इसी प्रकार औरत/नारी/स्त्री/अबला/महिला/वामा में अभिव्यक्तिगत बारीक सा फर्क हैं। अनुवादक को औरत के लिए Woman, अबला के लिए Weker Sex और महिला के लिए Lady शब्दों की आवश्यकता पड़ेगी। मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग में परिवेश के साथ सांस्कृतिक संस्थापनाओं के परिप्रेक्ष्य का विचार करना अनिवार्य है। एकबार बोझिल राजनीतिक बहसवाजी को हल्का फुल्का बनाते हुए जवाहर लाल नेहरु, ने पंतजी से कहा, You are monkeying with Country" पंतजी ने उसी हास्यास्पद लहजे में तुरंत जवाब दिया, "You are donkeying with Country" दोनों ही प्रयुक्तियां अंग्रेजी भाषा में भारतीय परिवेशानुसार सहज ही प्रयोग की गईं। यहां दोनों शब्दों का भारतीय परिवेशानुसार सीधा सीधा भावात्मक अनुवाद होगा—बंदरबांट और गधा पचीसी। न कि बंदरगिरी और गधागिरी। विदेशी परिवेश के "herculean effort" के लिए हिंदी में तो भगीरथ प्रयत्न ही सटीक है। 'सत्यम शिवम सुन्दरम्' के लिए किया गया शब्दिक अनुवाद–"the good, the truth, the beauty" उचित प्रतीत होता है जबकि 'शिवम' के अर्थ 'कल्याण' को यह शब्दानुवाद छू भी नहीं पाते।

मोटे तौर पर देखें तो स्रोत भाषा (जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है) और लक्ष्य भाषा (जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है।) दो समानान्तर रेखाएं हैं। अनुवाद उनके मध्य का सुगढ़ भाव सेतु है। साहित्यिक अनुवाद उनकी दूरी को कम कर लक्ष्य भाषा के दूसरी ओर खड़े जिज्ञासुओं को उसकी भावप्रवणता, साहित्यिकता और अंर्तहार्द का रसास्वादन कराने का प्रयास ही साहित्यिक अनुवाद है। यानि साहित्य संतरण का सुगढ़ सेतु है–अनुवाद। इसमें यह बेहद जरुरी हो जाता है कि अनुवादक को दोनों भाषाओं के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, रचनाकाल, सभ्यता संस्कृति, रीतियों कुरीतियों, भाषायी आभुषणों जैसे–मुहावरों, लोकोक्तियों, विशिष्ट अभिव्यक्तियों, शब्द शक्तियों, अलंकारों, रसों, छंदों इत्यादि का सम्यक ज्ञान हो क्योंकि यह सिर्फ किसी कृति का अनुवाद नहीं होता है। यह दो भिन्न संस्कृतियों के मध्य का मजबूत भाव सेतु होता है। साहित्य के अनुवाद के लिए अनुवादक का मस्तिष्क से जयादा हृदय से साहित्यिक होना पत्तियों में क्लोरोफिल तत्व होने के समान ही अति अनिवार्य है अन्यथा अनुवाद कम्प्यूटर साफ्टवेयरों से हो रहे हास्यास्पद और स्तरहीन शाब्दिक अनुवाद की भांति परिवेश के संदर्भों को बूझे बिना कुछ इस तरह अर्थ का अनर्थ कर डालेगा जिसे न स्रोत भाषाभाषी समझ सकेगा न लक्ष्य भाषाभाषी—

> ''चलती को गाड़ी (गाड़ दी है) कहै, जले दूध को खावा (दूध का सत्व पाने पर भी उसे खोवा)। रंगी को नारंगी (रंगयुक्त फल को बिना रंग का) कहै, देख कबीरा रोया।।''

कविता का अनुवाद करने के क्रम में कविता के समूचे परिवेश–शब्द, पद, बिंब, अलंकार दृष्टांत, छंद, लय, आदि का ध्यान रखते हुए लगभग मूल सी सजीव रचना बनानी होती है। इस संदर्भ में विश्वप्रसिद्ध काव्य अनुवादक फिट्जेराल्ड की दो स्थापनाएं महत्वपूर्ण हैं कि—1. अनुवाद को यथासंभव सजीव बनाना चाहिए। जीवित कुत्ता मेरे शेर से कहीं अच्छा होता है। 2. भूसा भरे गिद्ध की अपेक्षा जीवित गौरैया कहीं बेहतर है।

साहित्य की ऐसी ही भाव भूमि पर सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, हरिवंश राय बच्चन, केशव प्रसाद पाठक, रघुवंश लाल गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, धर्मवीर भारती ने अपने काव्य अनुवादों से हिंदी साहित्य प्रसाद को आकाशी ऊंचाइयां दी हैं। मूल रचना की आत्मा लेकर कथ्य को स्वयं की भाषा की शक्तियों और परिवेशानुकूल ढालने की स्वतंत्रता बेहतर अनुवाद की आवश्यक शर्त है। उमर खैयाम की रुबाई के दो प्रासंगिक अनुवाद सर्वपठनीय हैं—

> ''आमद सहरे निदा जे मयखनाए मा
> कि ए रिन्द ख़राबाती व दीवानाए मा
> बरख़ज कि पुरकुनेम पैमानाए ज़े मय
> जां पेश कि परकुनंद पैमानाए मा।।''

(प्रात:काल हमें अपने मयखाने से आवाज आई कि ए मदिरापान करने वाले व मेरे दीवाने, उठ और मय से अपना प्याला भर ले। कहीं ऐसा न हो कि हमारे जीवन का प्याला भर जाए अर्थात् मौत का बुलावा आ जाए।)

फिट्जेराल्ड ने अपने देश, काल ओर परिवेशानुसार इसका निम्न अनुवाद किया है—

"Dreaming when dawn's left hand was in the sky

I heard a voice within the tavern cry,

'Awake, my little ones, and fill the cup,

Before Life's Liquor in its cup be dry."

और मैथिलीशरण गुप्त के अनुवाद पर उनकी शैली का स्पष्ट प्रभाव भासता है—

''वाम-कनक-कर ने उषा के
जब पहला प्रकाश डाला,
सुना स्वप्न में मैंने सहसा
गूंज उठी यों मधुशाला–
उठो, उठो, ओ मेरे बच्चों,
पात्र भरो, न विलंब करो,
सूख न जावे जीवन हाला
रह जावे रीता प्याला।''

इसी रुबाइ को हरिवंशराच बच्चन, केशवप्रसाद पाठक, रघुवंशलाल गुप्त, समुमित्रानंदन पंत, ने अपने अपने ढंग से कहा है। सभी की काव्य कमनीयता, रसात्मकता, रागात्मकता और भाव भंगिमा अलग अलग है पर रुह उसी रुबाइ में बसी है। यही है अनुवाद का सुगढ़/सुरमई सेतु।

अंग्रेजी की एक बहुश्रुत कविता है– 'Foot prints in the sand'। एक भावप्रवण अनुवादक द्वारा किया गया इसकी अंतिम पंक्तियों का अनुवाद कुछ इस प्रकार का बना है—

'.....The Lord said
"My precious child,
I never left you during your moments of trial.
Where you see only one set of footprints—
I was carrying you."

''प्रिय शिशु,/तुम्हारे कठिनतम क्षणों के बीच/मैंने तुम्हें कभी अकेला नहीं छोड़ा/तुम बाल में जहां कहीं भी ..... / एक ही पदचिह्न/देख रहे हो/तो यह मेरे हैं।/तुम तो उस वक्त मेरी गोद में थे।''

इस कविता का शब्दानुवाद इस कविता की आत्मा के बहुत पास ही धड़कता प्रतीत होता है। यह विद्वज्जन ही बता पाएंगे पर 'I was carrying you.' के लिए मुझे 'तुम मेरी गोद में थे' पद्य बंध मूल के समानार्थी और अधिक नजदीक लगा।

कथा साहित्य के अंतर्गत आने वाली विधा कहानी और उपन्यास के अनुवादक को भी स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की संस्कृति का गहन जानकार होना परमाश्वक है। विविध किंतु समीचीन भाषा और आंचलिकता लिए हुए सांस्कृतिक शब्दों के यथार्थ भावानुवाद पर ही कृति का जीवंत सौंदर्य व साहित्यिक सौष्ठव विराजता है। प्रेमचंद की कहानी 'कफन' जिन अनुवादित संग्रहों में शामिल है उनमें प्रमुख हैं—Short stories by premchand (गुरुदयाल मलिक), a handful of wheat and other stories (प्रकाशचंद गुप्त), The World of Premchand (डेविड रुविन), Twenty four stories By Premchand (पी॰ लाल), इस कहानी के 'चमार' शब्द को मलिक ने अंग्रेजी अनुवाद में भी चमार ही प्रयुक्त किया है। प्रकाशचंद गुप्त ने Cobbler, रुबिन ने Untouchable Leather Worker तथा नोपेनी व पी॰ लाल ने Tanner का प्रयोग किया है, जो संभवत: कहानी के मूल में छिपी दयनीयता को उकेर नहीं पाता। सभी के अपने प्रायोगिक तर्क हैं, अपना साहित्यिक सौंदर्य हैं। ऐसे लोक भाषा के शब्दों जैसे कुल्हड़, बुढ़ऊ, लालटेन, मटका, पिढ़िया, टोटका, मठ, मंतर, डिठौना, मांग भरना, मौलाना, चिमटा इत्यादि का अनुवाद प्राय: दुरुह होता है। ऐसे शब्दों को भले ही समझा इस सरीखे शब्दों में अनुवादित कर दें लेकिन उन्हें दूसरी भाषा में लिया नहीं जा सकता।

काव्य के मुकाबले आसान से दिखने वाले नाटक का अनुवाद और भी चुनौती पूर्ण है। इसमें पात्रों का स्तर भेद, देश, काल और पात्र निष्ठता, आंचलिकता, बोली, प्रयुक्तियां, स्लैंग, मानकेतर शब्द प्रयोग, अभिनेयता, संवादों की उच्चारण अनुसार घोषता-सघोषता, उतार-चढ़ाव आदि का पूरा पूरा ध्यान रखना होता है। इन्हीं विवेचित मूल्यों में ही हिंदी में अनुवादित विजय तेंदुलकर के नाटकों ने उनहें विश्व का चर्चित नाटककार ('घासीराम कोतवाल' अनुवादक वसंतदेव) बना दिया, इसे सभी स्वीकारेंगे। इसमें दो राय नहीं है कि यह जितनी नाटककार

की सफलता है उतनी ही अनुवादक की भी। इन्हीं मायनों में प्रतिभा अग्रवाल रांगेय राघव, नेमिचंद जैन ने नाटकों के अनुवादों को सफल एवं प्रभावोत्पादक अनुवाद से संज्ञापित किया जा सकता है।

रचनाकार द्वारा स्वयं ही अपनी रचना का अनुवाद दूसरी भाषा में करके भी रचना की आत्मा को मय शरीर दूसरी भाषा में आत्मसात करके भी पाठक तक पहुंचाया जा सकता है। परंतु इसके लिए भी यह आवश्यक है कि रचनाकार लक्ष्य भाषा में भी उतना ही पारंगत हो जितना कि स्रोत भाषा में। मि॰ सी॰ एफ॰ एंटूज के लगातार अनुरोध पर कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जब गीतांजलि का अनुवार स्वयं ही अंग्रेजी भाषा में किया तो सोने में सुहागे के मानिंद हो गया था। उनके इसी कृतित्व और अनुवादकत्व के कारण साहित्य जगत को अद्वितीय कृति तो मिली ही साथ ही देश को साहित्य का नोबेल पुरस्कार का सम्मान भी पहली बार पाने का सौभाग्य मिला। इसी प्रकार प्रेमचंद ने जब अपनी उर्दू कहानियों व उपन्यासों–'बाजार ए हुस्न', गोश-ए-अफियत तथा चौगाने हस्ती के क्रमशः 'सेवासदन' 'प्रेमाश्रम' एवं 'रंगभूमि' के नाम से हिंदी अनुवाद किए तो उनका मूलरस अक्षुण्ण बना रहा।

अनुवाद मूल के अत्यंत नजदीक हो इस मूल समस्या का यथोचित समाधान यह नहीं है कि साहित्यकार स्वयं ही उसे अनुवादित करे। रचनाकार और अनुवादक का अलग अलग होना ही सहज और स्वभाविक है। मन में गहरे से लगा एक दंश यह भी है कि अनुवादक को अपनी पूरी शक्ति, प्रतिभा, कल्पनाशीलता और श्रम लगाने के बावजूद भी रचना के लिए हमेशा सौतेला ही माना जाता है। विचारों का सुसंवाहक होते हुए भी उसे रचनाकार के पासंग भी सामाजिक प्रतिष्ठा व श्रेय का हकदार नहीं माना जाता। विश्व फलक पर व्याप्त इस समस्या का समाधान अपने देश समाज से ही निकलेगा। समस्या सामाजिक है अतः हल भी नींव निर्माता समाज से ही निकलेगा। तब तक अनुवादक को तो—

''बेघर शब्दों के बियावान जंगलों में
तपना और तचना है,
आंधी और तूफानों के ज्वारों में
बार बार भटकना है।''

जब तक मानव मस्तिष्क की उर्वरा भाव भूमि में 'स्त्रोत भाषा' से 'लक्ष्य भाषा' के अनुवाद के विचर-बीज चाहे वे सुप्तावस्था में ही विद्यमान क्यों न हो, वपित रहेंगे, तमाम अनुकूल प्रतिकूलताओं के दरम्यान भी शब्द, अर्थ, भाव, अथवा मर्म के अनुवाद का यह सिलसिला निरन्तर बस चलता ही जाएगा .... नए आयाम, नव से नवीनतम शिखराति शिखरों की ऊंचाइयों को छूता हुआ।

❑

राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत केंद्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिंदी या अँग्रेजी में हो सकते है। 'क' क्षेत्र में स्थित संलग्न अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी में होंगे। 'ख' और 'ग' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादी हिंदी या अँग्रेजी में हो सकते हैं। यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद उनके साथ भेजा जाएगा। परंतु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

राष्ट्रपिता का राष्ट्रभाषा संबंधी चिंतन

—चेतनादित्य आलोक*

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को उनके पारिवारिक नाम मोहनदास करमचंद गांधी के अलावे हम कई नामों से जानते हैं, यथा –महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता और बापू! 'महात्मा' की उपाधि उन्हें कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने दी थी, जिसके कारण वे बाद में महात्मा गांधी कहलाए। इसी प्रकार 'राष्ट्रपिता' उपाधि उन्हें राष्ट्र–गौरव नेताजी सुभाषचंद्र बोस से मिली थी जिसके कारण वे कालांतर में राष्ट्रपिता कहलाए, और बापू की उपाधि उन्हें कदाचित देशवासियों ने अपने स्नेह और आशीर्वाद को प्रकट करने के लिए दी थी। ऐसा माना जाता है कि इनमें से 'बापू' उपाधि आजादी के फरिश्तों, नेताओं एवं देशभक्तों के मध्य ज्यादा प्रचलित हुई, लेकिन साथ ही आजादी के बाद के वर्षों में 'राष्ट्रपिता' उपाधि हमारे राष्ट्र में बच्चे, वृद्ध और जवान सभी के बीच सर्वाधिक प्रचलित एवं मान्य हुई। हालांकि बापू को वैश्विक समाज गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा दी गई उपाधि 'महात्मा' से ही जानता–पहचानता है। बहरहाल, भारत राष्ट्र के हम सभी लोक उन्हें राष्ट्रपिता ही मानते हैं, क्योंकि वास्तव में ऐसा करने से हमारा और हमारे राष्ट्र का गौरव तो बढ़ता ही है, साथ ही हमें बापू के महान् व्यक्तित्व एवं उनकी अतुलनीय क्षमताओं का आश्रय भी प्राप्त होता है। राष्ट्रपिता के रूप में उन्हें संबोधित करने से अपने लिए अनुशासन की एक सीमा रेखा स्वत: ही खिंचने लगती है। उन्हें राष्ट्रपिता कहने भर से हमारे जेहन में उनके अभिभावक्त की मूर्त अनुभूति होती है और हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। इसीलिए वे हम सभी भारतीयों के लिए राष्ट्रपिता ही हैं।

जहां तक राष्ट्रभाषा की बात है, यह कितना दुख:द है कि इस विषय में हम भारत के लोग आज भी आपस में उलझे हुए हैं, जबकि सच तो यह है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी राष्ट्रभाषा की गुत्थी को सुलझाने में आज से लगभग 98 वर्ष पहले ही लग गए थे, लेकिन दुर्भाग्यवश आजादी के बाद बहुत दिनों तक बापू हमारे साथ नहीं रह सके। अन्यथा राष्ट्रभाषा का मामला आज तक इस कदम उलझा नहीं होता बल्कि यह हमारे लिए गौरव का विषय होता। बहरहाल, इस संदर्भ में यह कहना सर्वथा उचित होगा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी राष्ट्रीय स्तर पर भारतवर्ष के संदर्भ में हिंदी भाषा के महत्व इसकी भूमिका और क्षमता से पूर्णरूपेण अवगत थे। उनके जीवन से जुड़ी सन् 1917 की एक घटना इस बात को साबित करने में सक्षम है। घटना है कि 15 अक्तूबर सन् 1917 को बिहार के भागलपुर में आयोजित एक छात्र सम्मेलन में उन्होंने अपने वक्तव्य में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था। उक्त छात्र सम्मेलन में इसी संदर्भ में दिया गया उनका वक्तव्य यहां उल्लेखनीय है – ''इस सम्मेलन का काम इस प्रांत की भाषा में हो, और वही राष्ट्रभाषा भी है, करने का निश्चय करके आपने दूरंदेशी से काम लिया है।'' कदाचित उन दिनों भी और आज के समय में भी यह बात हममें से सभी लोग जानतें होंगे कि बिहार की भाषा हिंदी ही है। साथ ही यह भी गौरतलब है कि श्री गांधी जी के 'इस प्रांत की भाषा एवं और वही राष्ट्रभाषा भी है' का संबंध हिंदी भाषा से ही था। इसे आज भी कोई नकार नहीं सकता क्योंकि यही सच है कि उक्त प्रसंग में राष्ट्रपिता का स्पष्ट वक्व्य हमारी प्रिय भाषा 'हिन्दी' के संबंधी में ही था।

ऐसा प्रतीत होता है कि जब कभी भी राष्ट्रपिता और राष्ट्रभाषा के संदर्भ में बात की जाए तो सबसे पहले यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि श्री गांधी जी एक तरफ हमारी प्रिय हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में तो देखना चाहते थे लेकिन दूसरी ओर इसकी दशा–दुर्दशा से भी वे अनभिज्ञ नहीं थे। उन्होंने स्वंय स्वीकार किया था— ''हमने मातृभाषा का अनादर किया है। इस पाप का कड़वा फल हमें जरूर भोगना पड़ेगा।'' इतना हीं नहीं, बापू ने तो यह भी माना था – ''मातृभाषा का अनादर मां के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है वह देशभक्त कहलाने के लायक ही नहीं है।'' उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों का परिभ्रमण किया था। साथ ही समाज एवं जन सरोकारों वाले विषयों पर उनकी अच्छी पकड़ भी थी तभी तो उन्होंने लिखा था – ''बहुत से लोग ऐसा कहते हुए सुने जाते हैं कि हमारी भाषा में ऐसे शब्द नहीं हैं, जिनमें हमारे ऊंचे विचार प्रकट किए जा सकें। किन्तु यह भाषा का दोष नहीं है। भाषा को बनाना और बढ़ाना हमारा अपना

*द्वारा श्री एम॰ के॰ द्विवेदी, रोड नं॰ 3, विद्या नगर (पश्चिम) हरमू, रांची–834002 मो॰ 94315–65285

कर्त्तव्य है।'' बिल्कुल ठीक कहा था बापू ने कि मातृभाषा माता समान होती है। यह भी सच है कि इसके बिना हम गूंगे-बहरे हो जाएंगे। और यह तो निश्चित ही है कि जब मां का अपमान किया तो इस पाप का कड़वा फल भी हमें भोगना ही पड़ेगा।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा की कुर्सी पर आसीन देखना चाहते थे। वहीं कुछ विद्वानों के बीच एक मान्यता यह भी प्रचलित है कि श्री गांधी जी के राष्ट्रभाषा संबंधी चिंतन-प्रसंग को दो चरणों में विभाजित कर देखना उपयुक्त होगा। उनके अनुसार इसका पहला चरण सन् 1909 ई. से लेकर 1936 ई. तक की अवधि को माना गया है, जबकि उक्त प्रसंग का दूसरा चरण सन् 1936 ई. के बाद का है। जो उपर्युक्त मत प्रकट करते हैं, उन कुछ विद्वानों के अनुसार उक्त राष्ट्रभाषा संबंधी चिंतन-प्रसंग के प्रथम चरण में श्री गांधी जी हिंदी को लगातार और अभूतपूर्व तरीके से राष्ट्रभाषा बनाए जाने की पुरजोर वकालत करते रहे, लेकिन द्वितीय चरण में उन्होंने आश्चर्यजनक ढंग से हिंदी की जगह हिन्दुस्तानी को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया था।

हालांकि उन विद्वानों के इस तर्क से सहमत होना संभव नहीं लगता और ऐसा करना उचित भी नहीं होगा क्योंकि उनके द्वारा किए गए तर्कों से इतर बापू से संबंधित प्रकाशित सामग्रियों का अध्ययन-अनुशीलन करने पर कुछ ऐसे तथ्य भी मिलते हैं जिनसे उनकी बात गलत प्रतीत होती है। साथ ही उन तथ्यों से यह भी साबित होता है कि सन् 1936 से पहले भी कुछ अवसरों पर श्रद्धेय बापू ने हिंदी के बदले हिन्दुस्तानी भाषा के समर्थन में अपने विचार व्यक्त किए थे। यंग इंडिया नामक पत्र में 22 जनवरी सन् 1920 को राष्ट्रभाषा के समर्थन में प्रकाशित मद्रास के नाम एक अपील में बापू की ओर से जो विचार व्यक्त किए गए हैं वे हिंदी नहीं बल्कि हिन्दुस्तानी भाषा को ही राष्ट्रभाषा के रूप में आगे बढ़ाते हैं, और जो यहां पर महत् उल्लेखनीय हैं। उन्होंने उक्त पत्र में लिखा था - ''सन् 1915 में मैं एक के सिवा कांग्रेस की सभी बैठकों में शामिल हुआ हूं। उसके कारोबार को अंग्रेजी के बदले हिन्दुस्तानी में चलाने की उपयोगिता के विचार से मैंने उसका खासतौर से अभ्यास किया है। मैंने सैंकड़ों प्रतिनिधियों और हजारों प्रेक्षकों से इसकी चर्चा की है।''

श्री गांधी जी ने अपनी उस अपील में आगे लिखा है कि ''राष्ट्र का कारोबार चलाने के लिए या विचार विनिमय के लिए हिन्दुस्तानी को छोड़कर दूसरी कोई भाषा शायद ही राष्ट्रीय माध्यम बन सके।'' उन्होंने आगे लिखा है कि ''व्यापक अनुभव के आधार पर मेरी यह पक्की राय बनी है कि पिछले दो सालों को छोड़कर बाकी सभी सालों में करीब-करीब सारा ही काम अंग्रेजी में चलाने से देश को बहुत नुकसान उठाना पड़ा है।'' इसी प्रकार राष्ट्रभाषा के संदर्भ में बापू ने 19 अगस्त सन् 1921 के अंक में 'हिंदी नवजीवन' पत्र में लिखा था - ''हिन्दुस्तानी के सिवा दूसरी भाषा राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती, इसमें कोई शक नहीं। जिस भाषा को करोड़ों हिन्दू-मुसलमान बोल सकते हैं, वही अखिल भारतवर्ष की सामान्य भाषा हो सकती है।''

श्री गांधी जी यह बात बखूबी जानते थे कि भारत एक विविधताओं से भरा देश है। वास्तव में यहां अनेक प्रकार की विविधताएं सर्वत्र व्याप्त हैं; जाति, गोत्र, धर्मादि से संबंधित विविधताएं। यहां अनेक प्रकार की जीवन शैलियां अपनाई जाती हैं, अनेक धर्मों और मतों के लोग निवास करते हैं, अनेक नहीं बल्कि कहना चाहिए कि हजारों भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं, और यहां अनेक प्रकार के रीति-रिवाज एवं संस्कृतियों का संगम है। ऐसे में पूरे देश में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठापित कराना उस समय शायद उन के लिए भी आसान नहीं होता, जैसा कि यंग इंडिया के 22 जनवरी 1920 के अंक में राष्ट्रभाषा के समर्थन में प्रकाशित मद्रास के नाम अपील में उन्होंने स्वीकार भी किया है। साथ ही उनके उस वक्तव्य से कि ''पिछले दो सालों को छोड़कर बाकी सभी सालों में करीब-करीब सारा ही काम अंग्रेजी में चलाने से देश को बहुत नुकसान उठाना पड़ा है'' स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस की बैठकों में अंग्रेजी का उपयोग धड़ल्ले से होता था। इसका प्रमुख कारण शायह यह रहा होगा कि बैठक में चलने वाली कार्यवाही को देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले सभी सदस्य बखूबी समझ सकें।

जाहिर है कि श्री गांधी जी को बहुत अच्छी तरह से मालूम था कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठापित कराने का सारा प्रयास व्यर्थ ही जाने वाला है, क्योंकि उस दौर में जब देश को एक सूत्र में पिरोने, आपस में समन्वय को पुष्ट करने और उस स्थिति को बनाए रखने की ज्यादा जरूरत थी, बजाए इसके कि एकदम अचानक से अंग्रेजी को हटाकर हमारी हिंदी को उसकी जगह पर बैठा दिया जाता। वैसे भी भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में उचित यही होगा कि यहां की राष्ट्रभाषा एक ऐसी भाषा को बनाया जाए जो लगभग सभी को अर्थात् देश की अधिकांश जनसंख्या को मान्य हो। साथ ही देश की अधिसंख्य जनता के द्वारा उसका उपयोग किया जाता हो। कदाचित् इसीलिए बापू एक ऐसी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दिलाने का

प्रयास कर रहे थे जो लगभग संपूर्ण राष्ट्र में बोली जा सकती थी, और सभी को समझ में आ सकती थी, वह भाषा थी हिन्दुस्तानी। निश्चित रूप से उनका यह प्रयास तार्किक रूप से भी सही था और नैतिक रूप से भी.... क्योंकि सचमुच हिन्दुस्तानी भाषा में वे ताकतें विद्यमान हैं जिनका वर्णन ऊपर में किया गया है।

इसी प्रकार लिपि के प्रश्न पर भी हमारे राष्ट्रपिता ने अपने विचार दिल खोलकर रखे हैं। 21 जुलाई 1927 के हिंदी नवजीवन तथा तीन मार्च 1937 एवं 18 फरवरी 1939 के हरिजन सेवक के अंकों में उन्होंने स्पष्ट रूप से देवनागरी को ही राष्ट्रभाषा के लिए लिपि के रूप में आगे बढ़ाया था। उनके ही शब्दों में – ''देवनागरी के समान सरल, जल्दी सीखने योग्य और तैयार लिपि दूसरी कोई है ही नहीं। उर्दू और रोमन से भी वैसी संपूर्णता और ध्वन्यात्मकता नहीं है जैसी कि देवनागरी लिपि में है।'' बाद में जब उन्हें मालूम हुआ कि आसाम के कुछ क्षेत्रों कुछ जातियों को देवनागरी की जगह रोमन लिपि में लिखना-पढ़ना सिखाया जा रहा है तब उन्होंने इसका कड़ा विरोध किया था। उन्होंने इस संबंध में हरिजन सेवक के 18 फरवरी 1939 के अंक में लिखा था कि ''अगर हिन्दुस्तान में सर्वमान्य हो सकने वाली कोई लिपि है तो वह देवनागरी ही है, फिर भले ही उसमें सुधार की गुजाइश हो या न हो। विज्ञान और भावना दोनों ही दृष्टियों से रोमन लिपि नहीं चल सकती।'' राष्ट्रभाषा और लिपि के संबंध में अपने विचारों को और दृढ़ करते हुए श्री गांधी जी ने हरिजन सेवक के 12 फरवरी 1942 के अंक में तो यहां तक लिख दिया था – ''अगर मेरी चले तो देश में सभी प्रांतीय भाषाओं के लिए भी नागरी का इस्तेमाल हो।''

राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय लिपि के प्रसंग में यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय लिपि से संबंधित चिंतन प्रक्रिया के क्रम में श्रद्धेय गांधी जी के विचार विशुद्ध रूप से राष्ट्रवादी अवधारणओं पर केन्द्रित थे जो कि वास्तव में भारतीयता का प्रतीक भी थे। यहां पर भारतीयता का प्रतीक से मतलब एक राष्ट्र के रूप में भारत के विविधतापूर्ण एवं बहुआयामी स्वरूप से है। कदाचित् इसीलिए वे हिंदी के स्थान पर 'हिन्दुस्तानी' को राष्ट्रभाषा की कुर्सी दिलाने के हिमायती हो गए थे। और यह काम उन्होंने सन् 1936 से काफी पहले ही शुरू कर दिया था। वैसे 'हिन्दुस्तानी' भाषा के समर्थन में विद्वान लोक 1936 के हरिजन में लिखी उनकी बातों को ज्यादा महत्व देते हैं। प्रसिद्ध पत्र हरिजन के अक्तूबर 1936 के अंक में श्री गांधी जी ने इसी संदर्भ में 'हिन्दुस्तानी, हिंदी और उर्दू' शीर्षक से एक आलेख लिखा था। उक्त आलेख में उन्होंने 'हिन्दुस्तानी' भाषा के संदर्भ में अपने विचार प्रकट किए थे – ''इस हिन्दुस्तानी को एक-एक शब्द के अनेक पर्याय होने चाहिए ताकि यह विभिन्न प्रांतीय भाषाओं से समृद्ध और विकासोन्मुख राष्ट्र की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। बंगालियों या दक्षिण भारत के लोगों के सामने बोली जानेवाली हिन्दुस्तानी में संभवत: संस्कृत से लिए गए शब्दों का अधिक प्रयोग होगा। वही भाषण जब पंजाब में दिया जाएगा तब उसमें अरबी-फारसी शब्दों की बहुलता होगी। यही बात उस श्रोता वर्ग के संदर्भ में लागू होगी जिसमें मुसलमानों की प्रमुखता हो क्योंकि वे संस्कृत के लिए हुए बहुत से शब्द नहीं समझ सकते।''

राष्ट्रभाषा के संदर्भ में गांधी जी की उक्त दृष्टि समन्वयकारी है। निश्चित रूप से भारत जैसे बहुआयामी एवं विधितापूर्ण राष्ट्र की राष्ट्रभाषा में उक्त समन्वयकारिणी शक्ति का होना अनिवार्य भी है। इससे भारत के विभिन्न समाजों-सम्प्रदायों में परस्पर भावनात्मक संबद्धता बढ़ेगी। इस प्रकार हमारा राष्ट्र सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से एकीकरण की ओर अग्रसर होगा। स्पष्ट है कि गांधी जी का राष्ट्रभाषा संबंधी चिंतन भारत राष्ट्र के व्यापक हितों को साधने वाला है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि राष्ट्रभाषा के संदर्भ में हिन्दुस्तानी का विकल्प भारत के सांस्कृतिक फलक पर गांधी जी की व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण को रेखांकित करता है।

जरा सोचिए कि संपूर्ण राष्ट्र की एक ही भाषा हो, बोलने की भी और लिखने की भी, साथ ही सरकारी कामकाज की भी। यानी कि यही 'हिन्दुस्तानी' हमारी राष्ट्रभाषा भी हो और राजभाषा भी। यदि ऐसा होता तो कितना अच्छा होता न। सचमुच यदि ऐसा हो जाए तो चमत्कार हो सकता है। गौर करने की बात है कि इस विशाल भारतवर्ष के किसी भी कोने में चले जाइए – उत्तर, दक्षिण, पूरब या पश्चिम..., कहीं भी भाषा को लेकर कभी कोई कठिनाई नहीं होगी तो यह चमत्मकार ही होगा न। काश! हम भारत के लोग कम से कम राष्ट्रभाषा-राजभाषा और राष्ट्रीय लिपि के संदर्भ में अपने राष्ट्रपिता का अनादर नहीं करते। क्या ऐसा आज भी संभव है; क्या भविष्य में कभी संभव होगा? अपने देश में ऐसा चमत्कार घटित होते हुए देखना आज सपने देखने जैसा लगता है। बहरहाल, निश्चित रूप से हम सभी को सपने देखने का अधिकार है। ... अच्छे-अच्छे सपने! ... सुनहरे भारत के सपने!! .... चाहे राष्ट्रभाषा -राजभाषा के संदर्भ में ही क्यों न देखें; ... हमें अवश्य देखने चाहिए ऐसे सुनहरे सपने!!! (इतिश्री) ❑

पुरानी यादें — नए परिप्रेक्ष्य में

मानवतावादी कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और उनकी गीतांजलि

—जयनाथ मणि त्रिपाठी*

विश्व के महान साहित्यकार एवं अग्रणी लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुर को संसार भर में जो अपार ख्याति और यश मिला है, वह किसी भी चिंतक-सर्जक के लिए ईर्ष्या की बात हो सकती है। उनकी रचनाएं देश की प्रमुख भाषाओं के अतिरिक्त विदेशी तमाम भाषाओं में अनूदित एवं चर्चित हूई हैं। रवि बाबू की कविताओं में दिव्य और कोमलतम भावनाओं की मदिर गंध तो है ही उनमें शिशुओं की अबोध सहजता का सम्माहेन भी है जो मानव मन को बहुत गहराई तक प्रभावित और स्पन्दित करता है। वे सही अर्थों में मानवतावादी कविताएं हैं जिनके मनन और अनुशीलन से अंतस् का कोना-कोना आलोकित हो उठता है। रवीन्द्र के गीत मनुष्य की आत्मा को जीवन की झंझाओं से खेलने की शक्ति प्रदान करते हैं, सामर्थ्यवान बनाते हैं। वास्तव में रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिभा का परिचय चिरन्तन विश्व की व्यापकता में ही मिल सकता है। वह ऐसे कवि थे जिनकी प्रतिभा को भौगोलिक सीमाओं में सीमांकित नहीं किया जा सकता। वह सारे संसार के कवि थे विश्व मानवता के कवि, कविनां कवितम: गीतांजलि उनकी सर्वाधिक चर्चित एवं 'नोबुल पुरस्कार' से सम्मानित कृति है जिसके माध्यम से संसार को वैचारिक सोच की एक नई दिशा मिली और कवि को मिला ससीम का असीम में समाहित कर एक व्यापक फलक पर उरेहने के लिए भावनाओं की समर्थ शक्ति, निष्कलुष दृष्टि और आत्मबोध।

बांग्ला भाषा का अपना माधुर्य है। इसका जैसा उच्चारण लालित्य हिंदी में नहीं है। दोनों के व्याकरण में भी पर्याप्त अंतर है। फिर भी बंगला रचनाओं के हिंदी अनुवाद थोड़े बहुत अंतर के साथ काफी कुछ समरसता पैदा करने में समर्थ है और अब बंगला से सीधे रूपान्तर हिंदी में सहजता के साथ हो रहे हैं, जो मूल भावना को कहीं से भी क्षतिग्रस्त नहीं करते हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर अपने जीवन काल के तेरहवें वर्ष से ही कविता लिखने लगे थे। प्रारम्भिक रचनाओं में 'बनफूल' और 'कविकाहिनी' उल्लेखनीय है। उनके काव्य की मूल धारा की शुरूआत 'साध्य संगीत' से होती है। रवीन्द्रनाथ जी ने 1000 से अधिक कविताएं और 2000 के लगभग गीत लिखा है। गीतांजलि रवीन्द्रनाथ जी के गीतों का संग्रह है। जिसके दो प्रकार के संस्करण हैं। उपलब्ध बंगला संस्करण में 157 गीत हैं और दूसरा अंग्रेजी का संस्करण है जिस पर इन्हें 'नोबुल प्राइज' मिला है में 203 गीत हैं। अंग्रेजी संस्करण तैयार करते समय कवि ने अपने कुछ अन्य काव्य संग्रहों से गीत लेकर इसमें जोड़ दिया है। इन गीतों में खोया, नैवेद्य, चयनिका तथा चैताली आदि से भी गीत जोड़ दिया गया है। मूल गीतांजलि का बंगला भाषा में प्रकाशन 1910 में हुआ। 1901 में नैवेद्य, 1906 में खेया नामक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके थे। अंग्रेजी गीतांजलि में इन - संग्रहों से कुछ गीतों को लेकर इसे तैयार किया गया है। इस तरह अंग्रेजी गीतांजलि के गीतों की संख्या 203 हो गई है। बंगला और अंग्रेजी गीतांजलि में यही भेद है। 1913 ई॰ में जब रवीन्द्रनाथ जी 52 वर्ष की अवस्था में पहुंच चुके थे इन्हें नोबुल पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार देने के लिए जिन विशेषताओं को रेखांकित किया गया वह निम्नवत है—

> "For, reasons of the innear depth and the high aim revealed in his poetic writing; aiso for the brilliant way in which the translates the beauty and freshness of his oriental thought into the accepted forms of western belles-letters."

भक्ति की व्याकुलता कवि हृदय को बराबर झंकृत करती रही है और इनके तमाम गीत काव्य उसी परमपिता को सम्बोधित एवं निवेदित हैं जो जीवन का परम सत्य है।

सत्यकाम विद्यालंकार के शब्दों में यदि कहा जाय तो ''इनकी 'शेष लेखा' मृत्यु के पद शब्द के साथ उसी की आवाज में सुनाई पड़ती है। मृत्युपथ यात्री की विचित्र अभिज्ञाता से युक्त ए कविताएं

सम्पादक, 'अंचल भारती' त्रैमासिक, राजकीय औद्योगिक आस्थान, गोरखपुर मार्ग, देवरिया (उ॰प्र॰)-274001

संसार की श्रेष्ठतम कविताओं में हैं। अवसना चेतना की गोधूली बेला में कालिन्दी के काले स्रोत में कवि अपने देह को अपनी अनुभूतियों तथा विचित्र वेदना के साथ बहते देखता है। इसी विचित्र वेदना के भीतर ही उनकी प्रार्थना वाणी उच्चारित हुई है। मानो जीवन मृत्यु के संधिक्षण में खड़ा कवित अपने जीवन की चरम् उपलब्धि सीमा के साथ असीम की एकात्मा को भूल नहीं पाया है।

''हे पूषन, तुमने अपनी किरणें समेट ली थीं
अब उनको फिर से फैलाओं जिससे मैं तुम्हारे
कल्याणतम रूप को देख सकूं और एक ब्रह्म
की उपलब्धि कर सकूं''

जहां तक बांग्ला-हिंदी रूपान्तरण का प्रश्न है, हमें यह ध्यान रखना होगा कि यदि हम हिंदी काव्य में बंगला रिदिम भरने का प्रयास करेंगे तो हिंदी छन्दों की छीछालेदारी हो जाएगी। काव्य के भावों को आत्मसात कर उसे अपनी भाषा के उच्चारणनुसार सम्यक शब्दों को लेकर छन्दों में ढालना ही उचित होगा। इस सम्बन्ध में पं॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'विचार और वितर्क' के 'कवि के रियायती अधिकार' नामक निबंध से निम्नांकित अंश प्रस्तुत करना समीचीन समझता हूं।

''संस्कृत और हिंदी के छन्दों में दो बातें लक्ष्य करने की है। पहली तो यह कि हर आठवीं मात्रा पर स्वर का झुकाव होता है और दूसरी यह कि सगण को विशुद्ध उच्चारण की कसौटी पर खरा उतारने की चेष्टा की जाती है। उर्दू का कवि इस बात की ओर एकदम निश्चिंत है, क्योंकि उसे छन्द शस्त्र के मर्यादा की उतनी परवाह नहीं है। जितना अपनी भाषा के लचीलेपन के विश्वास से।

द्विवेदी जी आगे लिखते हैं ''उर्दू का कवि भी दीर्घ स्वर को प्रसारित करके ह्रस्व कर सकता है और बंगला का कवि भी वैसा करने में स्वतंत्र है पर गरीब हिंदी का कवि न तो दीर्घ स्वर को ह्रस्वों में बदल सकता है और न एक ह्रस्व स्वर के रूप में उच्चारण कर पाता है। करता है, हलंत वर्ण का स्वरांत उच्चारण, पर यह समझ कर कि वह वस्तुत: ऐसा नहीं कर रहा है..... ''वह आगे कहते हैं, ''इस सारी विवेचना का निष्कर्ष यही है कि खड़ी बोली के कवि को रियायती अधिकारों का न मिलना कुछ गर्व की बात नहीं है दोष हो सकता है।'' कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद में गीतों को गेय रखने और भाषा में अधिक लोच लाने के लिए यदा-कदा रियायती अधिकारों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

बंगला भाषा की क्रिया में लिंग-भेद नहीं है। इस कारण प्राय: कवि की अंतरवाणी को समझना कठिन हो जाता है। कवि की अनुभूति विरल होती है। वह कभी अपने को नारी स्वरूप देखता है तो कभी विकट पुरुष प्रेमी। वह कभी प्रकृति प्रेयसी के साथ अभिसार करता है तो कभी स्वयं प्रकृति का अंग बन जग सृष्टा की प्रेयसी बनना चाहता है। ऐसी स्थिति में कभी-कभी बंगला से अनुवाद करते समय अनुवादक भ्रम में पड़ जाता है। जैसे गीतांजलि के एक गीत प्रवासी यूं लिखते हैं—

''यहां जो गीत गाने की चली
वह गीत गा न सकी
रही स्वर साध्वी केवल
सदिच्छा को निभा न सकी,

इसी का अनुवाद सत्यकाम विद्यालंकार इस प्रकार करते हैं—

''यहां जो गीत गाने आया था, उसे नहीं गा सका
आज केवल वीणा के तारों का स्वर साधता रहा
गाने की आस मन में ही रह गई''

कैलाश कल्पित इसी गीत को इस प्रकार व्यक्त करते हैं—

गा न सका वह गीत जिसे मैं गाने आया,
वीणा के तारों का स्वर रह गया साधता
गाने की जो साध जगी थी सुप्त रह गई
सारे दिन सम भीड़ और स्वर रहा बांधता।

रविन्द्रनाथ टैगोर किसी एक भाषा या देश के कवि नहीं हैं। इनकी आत्मा सच्ची भारतीय आत्मा है। इस लिए इनकी गीतों को बंगाल से इतर भाषाओं में रूपान्तरित करते समय टैगोर को उसी भाषा के अनुरूप ढाल कर रूपान्तरण करना होगा। टैगोर के बहु आयामी व्यक्तित्व की हर धारा मानवता की धरोहर है।

इनकी कविताएं इसीलिए सर्वप्रथम मानवतावादी कविताएं हैं बाद में और कुछ। ❑

व्यक्तित्व विशेष

रामेश्वरम् से रामेश्वरम् तक.....

—डॉ॰ पी॰ आर वासुदेवन शेष*

विद्या देती नयी कल्पना, कल्पना लाती नए विचार
नए विचारों से मिले ज्ञान, ज्ञान बनाए आपको महान।।

—डॉ॰ ए पी जे अब्दुल कलाम

डॉ॰ ए पी जे अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्तूबर 1931 को तमिलनाडु के तीर्थस्थल रामेश्वरम में हुआ था। उनका परिवार बहुत ही साधारण मध्यम वर्गीय परिवार था। उन्होंने बचपन से ही बहुत संघर्ष कर अपनी शिक्षा पूरी की। कॉलेज की पढ़ाई के लिए उन्होंने अपनी बड़ी बहन के गहने गिरवी रखकर पूरी की। वे तड़के उठकर रामेश्वरम रेलवे स्टेशन जाकर समाचार पत्रों को उठाकर घर घर वितरित करते थे। वे दिन भर कड़ी मेहनत करते थे। खाने का समय भी उन्हें नहीं मिलता था। उनकी मां खाने के लिए कहती थी फिर भी वे अपने किसी काम में व्यस्त रहते थे। अपनी कमाई से नयी किताबें खरीदते थे। किताबें पढ़ने का उन्हें बचपन से ही शोक था। वे प्रतिदिन 18 घंटे काम करते थे। एक आदर्श छात्र की तरह वे भाषणों में अपनी सफलता का श्रेय अपने शिक्षकों को देते थे। बचपन की कहानी सुनाते हुए उन्होंने हमें एक प्रेरक संदेश दिया है। उस घटना के वर्णन उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत है:

''जब में दस वर्ष का था, तब पांचवी कक्षा में पढ़ता था। मेरे अध्यापक श्री शिवसुब्रहमयम अययर हमें पढ़ा रहे थे।'' ''पंछी कैसे उड़ते हैं?'' यह प्रश्न करते हुए उन्होंने श्याम पटट पर एक चिड़िया का चित्र बनाया। उसकी चोंच, पैर, पंख और पुंछ बनाने के बाद वे हमें बताने लगे कि चिड़िया कैसे उड़ती है? वे करीब 45 मिनट तक यही समझाते रहे। फिर उन्होंने हमसे पूछा, ''कितने छात्रों की समझ में यह बात आयी? बहुत से हाथ उठे किंतु हममे से तीन बच्चे ऐसे थे, जिनके हाथ नहीं उठे। उसी समय घंटी बज गई। उन्होंने कहा ''जो समझ नहीं पाये, वे छात्र शाम को मेरे घर आएं।'' शाम को हम सब उनके घर पहुंच गए। वे हमें समुद्र तट पर ले गए। उन्होंने एक चिड़िया की ओर इशारा करते हुए कहा, ''देखों पंख पर ध्यान दो। पंख फड़फड़ा रहे हैं अब दुम उठी पंख हिले और दिशा बदल गई। अच्छा, यह बताओं। चिड़िया कैसे उड़ती है? कार और हवाई जहाज में मशीन लगी होती है, चिड़िया में ऐसा क्या होता है? मैंने कहा ''इसमें जीवन होता है।'' उन्होनें हां शबाश। यह जीवन ही है, जो हमारे मस्तिष्क को बनाए रखता है।''

उस दिन से मुझे 'चिड़िया का उड़ना 'पाठ प्रेरणा देने लगा। मैं कुछ कर गुजरना चाहता था। नन्ही चिड़िया इतनी ऊंचाई तक उड़ सकती है तो मनुष्य क्यों नहीं उड़ सकता? मेरे शिक्षक इतने अच्छे थे कि उन्होंने मेरे स्वप्न में उड़ने के भाव को साकार करने का मनोबल दिया।

कॉलेज की शिक्षा पूर्ण करके कलाम जी ने मद्रास इंस्टीटयूट ऑफ टेकनॉजी से एरोनाटिकल इंजिनियंरिंग की डिग्री हासिल की। उसके बाद इसरो में रॉकेट इंजिनियंरिंग का कोर्स करके वहीं से अपने कैरियर की शुरूआत की। वे विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर, सतीश धवन स्पेस सेंटर में भी रहे। वे बीस वर्ष तक तिरूवनंतपुरम में रहकर पढ़े। कई वैज्ञानिकों को उन्होंने प्रशिक्षित किया। SLV3 को लांच किया। अग्नि मिसाइल को लांच किया। वाजपेयी जी के प्रधान मंत्रीत्व काल में उन्होंने राजस्थान में पोखरण में मिसाइल को लांच किया। वे एन डी ए सरकार में प्रधान मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त हुए। DRDO विभाग में निदेशक पद पर रहे। उनकी इस उपलब्धि को देखते हुए विदेशों से उन्हें अपने यहां काम करने का मौका मिला परंतु उन्होंने वह सब मौके यह कहकर इन्कार कर दिया कि वह केवल भारत के लिए ही कार्य करेंगे।

वे अपने शिक्षकों का सदैव सम्मान करते थे। वे कहते थे कि ''मेरे शिक्षकों ने मुझे इतना ऊंचा उठा दिया कि उनके कारण ही मैं आज बुलन्दियों को छू रहा हूं। आगे वे कहते है कि हमारे जीवन में हमें शिखर पर लाने वाले तीन व्यक्ति ही होते हैं। वे हैं माता पिता और गुरू। ये तीनों ही हमारे मन में सर्वोत्तम विचार और चरित्र का बीजारोपण कर सकते हैं।

*हिंदी अधिकारी कार्यालय महालेखाकार (ऐ एंव ई) 361, अन्ना सलाई, चेन्नई-600018

अब्दुल कलाम जी सभी धर्मों को समान आदर भाव देते थे चाहे वह हिंदु हो, सिक्ख हो, मुसलमान हो अथवा कोई भी अन्य धर्म का हो, हिंदु लोग कलाम अयर के नाम से भी पुकारते थे। तमिल भाषा से उन्हें विशेष लगाव था। उन्हें महाकवि सुब्रमणियम भारती के लिखे राष्ट्रीय गीत एवं महान संत तिरुवल्लूवर के लिखे तिरुकुरल्ल के पद भी पसंद थे। वे हर जगह इन्हें गीतों और पदों को लोगों के समान रखते थे। वे किताबों के साथ-साथ कला एवं संगीत प्रेमी भी थे। उन्हें हिंदुस्तान का बादय यंत्र रुद्रवीणा अच्छा बजाना आता था। वे अविवाहित रहे और हमेशा राष्ट्र की प्रगति, उन्नति कैसे हो यही विचार सोचा करते थे। देश की संसद ठीक रूप से कार्य करे, चले और सांसद देश की भलाई में एक जुट होकर कार्य करे यही उनकी मंशा थी। खासकर बच्चों एवं देश के युवाओं से उन्हें विशेष लगाव था। वे बच्चों एवं युवाओं से मिलकर ढेर सारी बातें करते थे। वे युवा पीढी में भारत का भविष्य देखते थे। उनका निजी जीवन बड़ा ही सादगी पूर्ण था। वे शाकाहारी भोजन ही खाते थे। वैसे तो उनके जीवन में कई घटनाऐं घटी एक यहां प्रस्तुत है: एक दुकानदार ने उन्हें भेट स्वरुप एक ग्रांइडर दिया। बदले में कलाम जी ने उन्हें चेक दिया। दुकानदार ने वह चेक का भुगतान नहीं करवाया यह जानकर कि वे महान वैज्ञानिक एवं राष्ट्रपति का चेक है। अपने पास रख लिया। लेकिन इसका पता चलते ही डॉ कलाम ने कहा अगर तुम रुपए 4850/- का नहीं लोगे तो वह तुरंत ग्रांइडर लौटा देगें।

कहना न होगा कि डॉ अब्दुल कलाम की गणना विश्व के सर्वर वैज्ञानिकों में की जाती है। विज्ञान के क्षेत्र में कई कामयाबियां हासिल की और देश का नाम रोशन किया। उन्होंने कई किताबें भी लिखीं। युवाओं और बच्चों के लिए विशेषकर किताबें लिखीं। 'अग्नि की उड़ान' 'विजिन 2020' उनकी प्रसिद्ध किताबें हैं।

डॉ अब्दुल कलाम का भारत के उपग्रह संबंधी योजनाओं में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। भारत सरकार ने इनको 'पदम भूषण, 'पदम विभूषण' और 'भारत रत्न' जैसे सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया। उन्हें लोग मिसाइल मैन कलाम कहते हैं। वे सन 2002 से सन 2007 तक भारत के ग्याहरवें राष्ट्रपति के पद पर रहे। राष्ट्रपति भवन में वे सिर्फ एक ही कमरे में रहते थे। और केवल पांच ही व्यक्ति उनकी सेवा में थे जो उन्हें खाना बनाकर खिलाते थे। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में स्थित मुगल गार्डन अपने कार्यकाल के दौरान आम जनता के दर्शनार्थ खुलवा दिया। जब वे अपना कार्यकाल पूरा कर राष्ट्रपति भवन से जा रहे थे तो अपने साथ उन्होंने सूटकेस रखा था उसमें केवल किताबें थी। एक पत्रकार ने जब उनसे पूछा ''कि इसके बाद आप क्या करेंगे? तो उन्होंने मुस्कराते हुए जवाब दिया अब मैं अपनी पूरी सेवा देश के युवाओं को पढ़ाने में लगाउंगा। उन्होंने कभी अपने वेतन का उपयोग अपने खर्च हेतु नहीं किया। गरीब बच्चों की पढ़ाई और कल्याणकारी कार्यों में खर्च किया। वे किसी से भी उपहार लेना पंसद नहीं करते थे। वे काम में इतने मशगुल रहते थे कि कभी अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया।

शिलांग में IIM के छात्रों के बीच दिए गए विषय पर व्याख्यान देते हुए वे अवस्स्थ होकर गिर पड़े और कुछ समय उपचार के बाद उनका देहांत हो गया। यह महान वैज्ञानिक सदा-सदा के लिए हम सबको छोड़कर चले गए। 83 वर्ष की आयु में 27 जुलाई 2015 को उनका आकस्मिक निधन हुआ। राष्ट्र के लिए बड़ी क्षति है।

रामेश्वरम से आरंभ हुई यात्रा आखिरकार रामेश्वरम् में जाकर खत्म हो गई। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसने उनके निधन पर आंसू न बहाया हो। भारत माता का सपूत माता की गोद सूनी कर चला गया।

उनकी अंतिम यात्रा में लाखों लोगों ने भाग लिया। महात्मा गांधी, पं नेहरू, डॉ अम्बेडकर के बाद ऐसा जन अपार समूह इस महान विभुति की अंतिम यात्रा में देखने को मिला। वे सबके चहेते थे।

वे हमेशा कहते थे कि ''सपना वे नहीं जो नींद में देखते है, सपना तो वह है जो हमें सोने न दे।'' आइए हम सब मिलकर उस महान सपूत के सपनों को पूरा करने का संकल्प लें। यही उनके प्रति सच्ची श्रंद्धाजलि होगी।

❑

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान एवं उप-संस्थानों में हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का पुर्णकालिक गहन प्रशिक्षण दिया जाता है।

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

'ग' क्षेत्र

मुख्य आयकर आयुक्तालय, शिलांग

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2015-16 की द्वितीय बैठक दिनांक 30 सितंबर, 2015 को दोपहर 12:30 बजे श्री एल॰सी॰ जोशी राणी, भा॰रा॰से॰, प्रधान आयकर आयुक्त, शिलांग की अध्यक्षता में कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई।

बैठक में विस्तार से चर्चा की गई और तत्संबंधी नियम के अनुपालन तथा हिंदी पत्राचार के प्रतिशत को बढ़ाने हेतु एकमत से सहमति जताई गई। अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिए कि हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेज अनिवार्यत: द्विभाषी रूप में जारी किए जाए और किसी भी स्थिति में धारा 3(3) एवं नियम 5 का उल्लंघन न हों।

सदस्य सचिव ने अध्यक्ष महोदय को यह सूचित किया कि वित्तीय वर्ष में हिंदी से अंग्रेजी व अंग्रेजी से हिंदी शब्दकोष की खरीद की गई है और साथ ही इसे आयकर विभाग, शिलांग व मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय शिलांग के अंतर्गत सभी अधीनस्थ कार्यालयों को वितरित भी किया जा चुका है।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि फाइलों पर छोटी छोटी टिप्पणियां यथासंभव हिंदी में ही की जाए। हिंदी प्रयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा विकास अनुभाग द्वारा दिए गए सुझावों पर अमल किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी निदेश दिया कि सभी फाइलों एवं रजिस्टरों की सूची को द्विभाषी रूप में तैयार करने के लिए हिदी अनुभाग में भेजे जाए।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, ग्रुप केंद्र, खटखटी

श्री अरूणन्द्र प्रताप, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केंद्र, केरिपुबल, खटखटी की अध्यक्षता में सितम्बर 2015 को समाप्त तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एकीकृत बैठक दिनांक 06/10/2015 को कल्याण निधि की मासिक बैठक के उपरांत आयोजित की गई, जिसमें रेंज मुख्यालय खटखटी, ग्रुप केंद्र, अंचल प्रशिक्षण केंद्र तथा शस्त्र कार्यशाला-5, केरिपुबल, खटखटी के अधिकारी/कर्मचारी शामिल हुए।

अध्यक्ष महोदन ने कहा कि राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज जैसे-कार्यालय/स्वीकृति आदेश, प्रेस विज्ञप्तियां, टेंडर नोटिस, विज्ञापन आदि को द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य है। कोई भी दस्तावेज केवल अंग्रेजी में जारी करना धारा 3(3) का उल्लंघन है। उन्होंने मद का अनुपालन बनाए रखने के निदेश दिए। सदस्य सचिव ने अनुरोध किया कि विभिन्न कार्यालय/स्वीकृति आदेशों के हिंदी प्रारूपों का उपयोग सुनिश्चित किया जाए तथा यदि कोई सहायक धारा 3(3) के तहत जारी होने वाले दस्तावेज अंग्रेजी में प्रस्तुत करे, तो अनुभाग प्रभारी ऐसे दस्तावेज हिंदी में तैयार करने के लिए सहायक की तत्काल लौटाना सुनिश्चित करें।

अध्यक्ष महोदय ने आंकड़ों की समीक्षा करते हुए हिंदी पत्राचार को संतोषप्रद बताते हुए कहा कि राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित है। हमें अपना समस्त कामकाज राजभाषा हिंदी में ही निपटाने की ओर अग्रसर रहना चाहिए तथा प्रयत्न करना चाहिए कि हम हिंदीतर भाषी कार्मिकों को भी इस दिशा में अपनी प्रेरणा और प्रोत्साहन से सरकारी कामकाज राजभाषा में सम्पन्न कराने में सफलता प्राप्त कर शत प्रतिशत सरकारी कामकाज राजभाषा में करें।

आंकड़ों की समीक्षा करते हुए अध्यक्ष महोदय ने मद के अनुपालन को संतोषप्रद बताया तथा निदेश दिए गए कि भविष्य में भी हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिया जाना हर स्तर पर सुनिश्चित किया जाए तथा यदि कहीं इस मद के उल्लंघन की स्थिति पाई जाए, तो प्रथम स्तर पर ही पर्यवेक्षक अधिकारी/कार्मिक संबंधित सहायक को प्रस्तुत डाक/जवाब लौटाते हुए राजभाषा में निपटान कराया जाना सुनिश्चित करें।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि हिंदीतर भाषी कार्मिकों को सेवा के प्रारम्भिक वर्षों में ही हिंदी भाषा व टंकण का प्रशिक्षण भी दिलाया जाता है, उसके बाद किसी को भी सरकारी कामकाज राजभाषा में निपटाने के संवैधानिक दायित्व के निर्वहन में किसी भी प्रकार की झिझक नहीं होनी चाहिए।

सभी कार्यालयों द्वारा मद के अनुपालन की पुष्टि की गई, तथापि अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिए कि सेवा पुस्तिकाओं तथा पंजिकाओं में हिंदी में इन्दराज करने के उपरांत हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का नाम व पदनाम भी हिंदी में लिखा जाए तथा पंजिकाओं में बजट विनियोजन, कार्मिकों के नाम इत्यादि विभिन्न विवरण भी हिंदी में लिखे जाएं।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2015-16 के वार्षिक कार्यक्रम के दिशा निर्देशों में महानिदेशालय द्वारा सभी कार्यालयों को उसमें निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए गए हैं। खटखटी असम राज्य में है तथा 'ग' क्षेत्र में आता है। सभी कार्यालयों द्वारा न्यूनतम लक्ष्य प्राप्ति किए जा चुके हैं, तथापि यह प्रयास किए जाने चाहिए कि सभी कार्यालयों में समस्त विषयों पर पूर्ण कामकाज राजभाषा हिंदी में ही सम्पन्न हो।

इसके अतिरिक्त तिमाही बैठक के कार्यवृत्त के तहत निम्नलिखित निदेश अनुपालन हेतु जारी किए गए हैं:—

1. धारा 3(3) के तहत जारी होनेवाले सभी दस्तावेज अनिवार्य रूप से हिंदी में भी जारी किए जाएं।
2. सभी फाइलों व पंजिकाओं में शीर्षक, फाईल संख्या इत्यादि हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखे जाएं। पंजिकाओं में कार्मिकों के नाम, विनियोजना/सारांश तथा मोहर के ऊपर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी के नाम हिंदी में लिखे जाएं।
3. सभी बोर्ड, नाम पट्टिकाएं द्विभाषी में तैयार की जाएं।
4. सभी पर्यवेक्षीय अधिकारी सुनिश्चित करें कि राजभाषा संबंधी उपरोक्त वर्णित मदों का अनुपालन किया जाए। यदि उल्लंघन का कोई मामला प्रकाश में आए तो उसे संबंधित सहायक को प्रथम स्तर पर ही लौटा दिया जाए।
5. हिंदी में तैयार कार्यालय टिप्पणियों पर पर्यवेक्षीय अधिकारियों द्वारा हिंदी में ही अपनी अभ्युक्ति दर्ज की जाए, ताकि सक्षम प्राधिकारी भी हिंदी में ही आदेश पारित कर सकें।
6. प्रेषण पंजिका में नियमित रूप से क्षेत्रवार दैनिक सारांश संबंधित सहायक द्वारा तैयार किया जाए तथा अनुभाग प्रभारी पंजिका में हस्ताक्षर करते समय इसकी पुष्टि करें। माह के अंत में मासिक सारांश भी तैयार कर हिंदी अनुभाग में प्रस्तुत किया जाए।

प्रदर्शन सह तकनीकी सेवा केंद्र केंद्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान महताब रोड, हिरो होन्डा सो रूम के सामने कटक-753012 (उडिशा)

प्रदर्शन सह तकनीकी सेवा केंद्र, कटक की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 28वीं तिमाही बैठक केंद्र के वैज्ञानिक-सी एवं अध्यक्ष श्री जयन्त घोष की अध्यक्ष्यता में दिनांक 23.09.2015 को अपराहन 3.00 बजे वैज्ञानिक-सी कक्ष में सम्पन्न हुई केंद्र में राजभाषा कार्य में हो रही प्रगति पर अध्यक्ष महोदय एवं आमंत्रित अतिथि द्वारा प्रसन्नता व्यक्त की गई एवं वार्षिक कार्यक्रम 2015-16 लक्ष्यों को प्राप्त करने के सभी संभव प्रयास जारी रखने के लिए सदस्य संयोजकों को आदेश दिया। नियम का अनुपालन किया जा रहा है। फाईल में सारे टिप्पणियां हिंदी में लिखी जा रही है और भविष्य में टिप्पणियों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रयास जारी रखने के लिए अध्यक्ष महोदय ने अवगत कराया।

भविष्य में मूल पत्राचार का प्रतिशत बढ़ाने के लिए अध्यक्ष महोदय एवं आमंत्रित अतिथि ने सदस्य संयोजकों को अवगत कराया। तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति का 28वीं बैठक एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया एवं तिमाही के अन्त में शीर्षस्थ प्रशासनिक बैठक करने का निर्णय लिया गया।

बैठक के अन्त में श्री संग्राम किशोर स्वांइ, तकनीकी सहायक, सदस्य संयोजक, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अध्यक्ष महोदय, आमंत्रित अतिथि एवं सदस्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, राज्य कार्यालय, गांधी भवन, एम॰जे॰ रोड, नामपल्ली, हैदराबाद-500001

खादी और ग्रामोद्योग आयुक्त कार्यालय, राज्य कार्यालय, हैदराबाद, आंध्रप्रदेश राज्य की वर्ष 2015-16 की द्वितीय तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 3.09.2015 अपराह् 3.00 बजे सम्पन्न हुई। राज्य निदेशक डॉ॰ एम॰ए॰ खुद्दुस ने बैठक की अध्यक्षता निभाई।

अध्यक्ष महोदन ने कनिष्ठ हिंदी अनुवादक को निदेश दिया कि धारा 3(3) के अन्तर्गत आने वाले सभी कामकाज अवश्य रूप में द्विभाषी में ही जारी किए जाने चाहिए। चूंकि अधिकतर कार्यालय आदेश /परिपत्र स्थापना अनुभाग से जारी किए जाते हैं अत: अधीक्षक, स्थापना अनुभाग को इस संबंध में जांच बिन्दु बनाया जाए कि सभी कार्यालय आदेश/परिपत्र द्विभाषी में ही जारी किया जाए जिसके लिए आवश्यकता पढ़ने पर हिंदी कक्ष की सहायता भी ली जाए।

राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा राजभाषा कार्यान्वयन के अनुपालन पर निगरानी रखने हेतु अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि उप निदेशक महोदय को नोट दिया जाए कि वे हर माह प्रत्येक अनुभाग में राजभाषा से संबंधित कार्यान्वयन का निरीक्षण करें तथा समय-समय पर हो रही प्रगति को निदेशक महोदय को अवगत कराए।

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने निदेशक महोदय को सूचित किया कि चूंकि प्रचार निदेशालय द्वारा भेजे जा रहे बजट में पुस्तकों की खरीदी के संबंध में कोई भी मद शामिल नहीं है हिंदी पुस्तकों की खरीद नहीं की जा रही है। इस संबंध में अध्यक्ष महोदय ने कनिष्ठ हिंदी अनुवादक को सूचित किया कि अगर प्रचार शीर्ष के अन्तर्गत पुस्तकों की खरीद के संबंध में कोई शीर्ष शामिल नहीं है तो हिंदी पुस्तकों को कार्यालय के आकस्मिकता व्यय से खरीदा जाए तथा इससे संबंधित सूचना मुख्यालय को अवगत कराया जाए।

आयुक्त का कार्यालय, केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर, सेठी ट्रस्ट बिल्डिंग, पांचवीं मंजिल, जी॰एस॰ रोड, भांगागढ़ गुवाहाटी-781005

राजभाषा कार्यान्वयन समिति (राभाकास) की जुलाई-सितम्बर, 2015 को समाप्त तिमाही की बैठक दिनांक 07.10.2015 को 1500 बजे समिति के पदेन अध्यक्ष श्री विनय कुमार पॉल, आयुक्त केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर, गुवाहाटी की अध्यक्षता हुई। बैठक में विभिन्न मदों पर चर्चा हुई तथा अध्यक्ष महोदय द्वारा निम्नलिखित निदेश दिए:—

(क) हिंदी में मुल पत्राचार के लक्ष्य 55 प्रतिशत को हासिल करने के लिए सभी प्रकार के पत्रों के अग्रेषण पत्र द्विभाषी बनाया जाए।

(ख) हिंदी में जो भी पत्र प्राप्त होते हैं उनका उत्तर अनिवार्यत: हिंदी में ही दिया जाए।

(ग) हिंदी नोटिंग के लिए निर्धारित 30 प्रतिशत लक्ष्य को हासिल करने के लिए हिंदी कार्ड की सहायता से छोटी-छोटी टिप्पणियां हिंदी में लिखकर हिंदी में हस्ताक्षर करें।

(घ) हिंदी भाषा के प्रशिक्षण के संबंध में अध्यक्ष महोदय ने हिंदी कक्ष को निदेश दिया कि उन अधिकारियों जो हिंदी नहीं जानते अथवा कम जानते हों, उसकी सूची तैयार कर ली जाए और उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण दिलाने के लिए कदम उठाए जाएं।

(ङ) अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि विभागीय वेबसाइट के जितने भी कंटेंट अंग्रेजी में हैं, उसका अनुवाद कर लिया जाए ताकि वेबसाइट पूर्णरूप से द्विभाषी में हो सके।

(ट) सभी मंडल कार्यालय/शाखाएं पत्र शीर्ष का केवल द्विभाषी रूप का ही इस्तेमाल करें। फाइलों पर विषय आदि में हिंदी में लिखने के लिए आवश्यक कदम उठाया जाए।

(ठ) केंद्र सरकार के अन्य कार्यालयों से नेटवर्क स्थापित कर वहां राजभाषा संबंधी काम-काजों को कैसे आगे बढ़ाया जा रहा है उसे ध्यान दिया जाए।

(ढ) सभी कंप्यूटरों पर हिंदी सॉफ्टवेयर लगाया जाए।

अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि सभी मंडल कार्यालय और सभी शाखाएं हिंदी में जारी की जा सकने वाली और हिंदी

में जारी की न जा सकने वाली दस्तावेजों की सूची सौंपेंगे। साथ ही यह प्रमाणित करेंगे कि उन्होंने उन दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में भेजना शुरू कर दिया।

राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, केरल और लक्षद्वीप, कोट्टण हिल बंगला तिरुवनंतपुरम-695010

राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, केरल और लक्षद्वीप, तिरुवतंतपुरम के राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 130वीं बैठक 28 सितम्बर 2015 को अपराह्न 1600 बजे इस निदेशालय में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर इस निदेशालय के अपर महानिदेशक मेजर जनरल सी पी सिंह, इस बैठक का अध्यक्ष पर अलंकृत किया।

नामित राजभाषा अधिकारी श्री तुलसीधरन नायर ने कहा कि अब हम हिंदी पखवाड़ा मना रहे हैं। इस अवसर पर अपने अपने काम के ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में ही करें। हिंदी हमारी राजभाषा है, राष्ट्रभाषा है, हमें एक सूत्र में फिरोनेवाली एक संपर्क भाषा भी है।

श्री तुलसीधरन नायर, प्रशासनिक अधिकारी (सिव) ने बताया कि इस तिमाही में अपने अनुभाग से ज्यादा से ज्यादा से पत्र द्विभाषी में भेजा है। इसके अलावा हिंदी पखवाड़ा समारोह के अवसर पर अपने अनुभाग से ज्यादा कर्मचारी विविध प्रतियोगिताओं में भाग लिया है। उन्होंने बताया कि अपने अनुभाग से जारी किए गए सब दैनिक आदेश भाग-11 द्विभाषी में ही थे। आगे भी यह कार्रवाई ठीक तरह से ही करेंगे।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि इस कार्यालय में कंप्यूटर में हिंदी से संबंधित यूनिकॉड प्रशिक्षण सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को दिया है और हिंदी में काम करने के लिए बहुभाषा सोफ्टवेयर खरीद लिया हैं, इसे पूर्ण रूप से इस्तेमाल करना सब का कर्तव्य है। इस कार्यालय में बहुत हिंदी पुस्तकें खरीद ली है, इसका भी इस्तेमाल कीजिए। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि इसके अलावा कर्मचारी अपने-अपने टिप्पण व प्रारूप आदि सिर्फ हिंदी में ही जारी करें तो बहुत अच्छा है, इसके अलावा वे नकद पुरस्कार के लिए योग्य भी होंगे। कार्यालयीन भाषा के तौर पर हिंदी का उपयोग बहुत सरल रूप में कर्मचारियों को समझाने के लिए व हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए इस बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए:—

(क) हर कर्मचारी उपस्थिति रजिस्टर में अपना हस्ताक्षर हिंदी में ही करें।

(ख) ज्यादा से ज्यादा टिप्पण हिंदी में लिखें।

(ग) हर कर्मचारी हर दिन अपने-अपने फाईलों से दो-दो हिंदी पत्र भेजें।

(घ) कंप्यूटर में ज्यादा काम हिंदी में करें।

(च) ''रोज एक हिंदी शब्द सीखें'' योजना को पूर्ण रूप से उपयोग में लाए।

(छ) ''सोमवार'' को हिंदी दिवस के रूप में ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में ही करें।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, त्रिवेन्द्रम अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा, तिरुवतंतपुरम

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, त्रिवेन्द्रम अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा, तिरुवनंतपुरम में वर्ष 2015 का तृतीय तिमाही अवधि माह जुलाई-सितंबर के राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 31 अगस्त 2015 को 1430 बजे विमानपत्तन निदेशक के अध्यक्षता में भाविप्रा के प्रशासनिक भवन में स्थित सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई।

तिमाही प्रगति रिपोर्ट में दी गई सूचना के अनुसार तिमाही अवधि अप्रैल-जून 2015 में राजभाषा अधिनियम धारा 3(3) के अंतर्गत 178 कागजात जारी की गई है। राजभाषा अधिनियम धारा 3(3) का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है। अध्यक्ष महोदय ने समिति को निदेश दिया कि भविष्य में भी धारा 3(3) के अंतर्गत शामिल कागजातों को द्विभाषी में ही जारी करें।

अध्यक्ष महोदय ने सभी विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों से अनुरोध किया कि उक्त नियम का सख्त अनुपालन सुनिश्चित करें।

आकाशवाणी, विशाखापट्टणम

आकाशवाणी केंद्र, विशाखापट्टणम की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2015-16 की दूसरी तिमाही बैठक दिनांक 24.08.2015 को अपराह्न 04.00 बजे श्री डी.आर. प्रसाद, उप

महानिदेशक (अभि.) की अध्यक्षता में आयोजित हुई। अध्यक्ष महोदय के साथ-साथ समिति के सभी सदस्यों ने पिछली तिमाही के मुकाबले इस तिमाही में बेहतर आंकड़े दर्ज करने पर विशेषकर लक्ष्यों की प्राप्ति पर हर्ष व्यक्त किया। इस संदर्भ में सदस्य सचिव ने याद दिलाया कि हिंदी अनुभाग द्वारा सभी मानक मसौदों को द्विभाषी कर दिया गया है जिससे वर्तमान तिमाही में पत्राचार में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। अध्यक्ष महोदय ने सभी को बधाई देते हुए आगे भी हिंदी पत्राचार को और अधिक बढ़ाने एवं लक्ष्यों का प्राप्ति हेतु प्रयास जारी रखे जाने पर ध्यान देने के निर्देश दिए।

अपर महानिदेशक (अभियांत्रिकी) का कार्यालय (उत्तर पूर्व क्षेत्र) आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, गुवाहाटी तथा सिविल निर्माण स्कंध, आकाशवाणी, गुवाहाटी

दिनांक 23-09-2015 को पूर्वाह्न 12.00 बजे श्री एम.एस. अन्सारी, अपर महानिदेशक (अभियांत्रिकी) की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई। सदस्य सचिव ने जानकारी दी कि हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण हेतु हिंदी शिक्षण योजना के तहत गुवाहाटी में आगामी अक्टूबर माह से लेकर मार्च, 2016 तक विभिन्न पांच दिवसीय प्रशिक्षण सत्र चलाए जा रहें हैं जिसमें हर स्तर के अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशिक्षण ले सकते हैं। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हरेक सत्र में दो-दो सदस्यों को नामित किया जा सकता है। हिंदी अनुभाग कृपया इसे फाइल पर प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि जनवरी, 2016 से प्रारंभ होने वाले ''पारंगत'' पाठ्यक्रम के लिए भी कार्य साधक सदस्यों को एक-एक कर नामित किया जाए। उन्होंने अधीक्षण अभियंता, सिविल निर्माण स्कंध से भी अनुरोध किया कि वे अपने कार्यालय से भी हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए स्टाफ को नामित करें। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि आकाशवाणी एवं दूरदर्शन महानिदेशालयों द्वारा जारी आदेशानुसार विभिन्न कार्यावश आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के केंद्रों पर दौरे पर जाने वाले अधिकारियों को वहां राजभाषा संबंधी कार्यों का निरीक्षण भी किया जाना है। उन्होंने हिंदी अनुभाग को अनुदेश दिया कि इस संबंध में निरीक्षण प्रश्नावली वे उप निदेशक (अभि.) को सौंप दें ताकि अन्य निरीक्षण कागजातों के साथ उन्हें भी संलग्न किया जा सके।

कुछ सदस्यों ने बताया कि उनके कंप्यूटर पर द्विभाषी की-बोर्ड न होने के कारण उन्हें कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने में असुविधा होती है। दूसरे हिंदी सॉफ्टवेयर पर कैसे काम किया जाए इसकी भी जानकारी उन्हें नहीं है। सदस्य सचिव ने कहा कि आजकल हरेक कंप्यूटर या लैपटॉप पर हिंदी में काम करने की सुविधा उपलब्ध होती है। अलग से सॉफ्टवेयर आदि डालने की आवश्यकता नहीं है। सभी कंप्यूटरों के की-बोर्ड एक बार द्विभाषी रूप में बदल गए थे। हो सकता है नए कंप्यूटरों पर न हो। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हिंदी अनुभाग कंप्यूटरों पर हिंदी सॉफ्टवेयर एक्टिवेट करने संबंधी जानकारी सभी को दे और की-बोर्ड संबंधी समस्या का भी निदान करे। अगर द्विभाषी स्टीकर आदि उपलब्ध है तो उसकी जानकारी लेकर मंगवाएं। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि आजकल ईमेल के जरिए ही अधिकतर पत्र भेज दिए जाते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी पत्राचार के लिए निर्धारित लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए सभी अधिकारी इस दिशा में भरसक प्रयास करें खासकर महानिदेशालयों को भेजे जाने वाले पत्रों को हिंदी रूपांतरण के लिए हिंदी अनुभाग में अवश्य भेजें।

'ख' क्षेत्र

प्रधान आयकर आयुक्त पटियाला

पटियाला प्रभार की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक डॉ. जगतार सिंह, प्रधान आयकर आयुक्त, पटियाला की अध्यक्षता में दिनांक 29.09.2015 को सांय 3.30 बजे कार्यालय प्रधान आयकर आयुक्त, पटियाला के कक्ष में की गई।

उपस्थित सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए समिति के अध्यक्ष एवं प्रधान आयकर आयुक्त डॉ. जगतार सिंह ने कहा कि वैसे तो पटियाला प्रभार में पर्याप्त कार्य हिंदी में किया जा रहा है। फिर भी हम सब मिलकर यह प्रयास करें कि राजभाषा विभाग द्वारा हमें जो लक्ष्य दिए गए हैं उन्हें हम अवश्य प्राप्त करें क्योंकि राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य भी है। छोटे-छोटे निर्धारण आदेश हिंदी में ही पारित किए जाएं। आर.टी.आई. से संबंधित पत्राचार हिंदी में ही किया जाए। प्रशासन एवं डीडीओ से संबंधित समस्त कार्य हिंदी में ही किया जाए तो हम अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा जो भी निदेश दिए गए हैं हम सब उनका अनिवार्य रूप से स्वयं पालन करें एवं अपने कार्यालयों में भी पालन करवाएं।

'क' क्षेत्र

कार्यालय महाप्रबंधक/राजभाषा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 16.09.2015 को संपन्न हुई, इसमें 30.06.2015 को समाप्त तिमाही अवधि की समीक्षा की गई। बैठक की अध्यक्षता मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री ओ.पी. अग्रवाल ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में 14 सितंबर हिंदी दिवस की शुभकामना दी तथा कहा कि हिंदी दिवस उस भाषा को सम्मान दिलाने का दिन है, जिसे लगभग तीन चौथाई देश समझता और बोलता है। जिस भाषा ने देश को स्वतंत्रता दिलाने में अहम भूमिका निभाई, उस हिंदी भाषा के नाम यह दिन समर्पित है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि मुख्यालय के सभी विभागों में राजभाषा हिंदी में काफी अच्छा कार्य हो रहा है। उन्होंने सभी विभागों को बधाई दी कि वे राजभाषा प्रयोग के प्रति अपना संवैधानिक दायित्व समझते हुए निरंतर प्रयत्नशील हैं फिर भी अभी ऐसे बहुत से कार्य हैं जो अंग्रेजी में किए जा रहे हैं। उन्होंने ऐसे कार्यों को हिंदी में किए जाने पर बल दिया तथा इसके अनुरूप ही प्रगति रिपोर्ट में आंकड़े दर्शाए जाने का प्रयास करने का निर्देश दिया।

कार्यालय आयुक्त,केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, 117/7, सर्वोदय नगर, कानपुर

केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय, कानपुर में दिनांक 24.09.2015 को अपराह्न 12.30 बजे से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक माननीय आयुक्त महोदया सुश्री वन्दना के. जैन जी की अध्यक्षता में 31.03.2015 व 30.06.2015 को समाप्त तिमाहियों की हिंदी प्रगति रिपोर्टों की तुलनात्मक समीक्षा एवं अन्य मुद्दों व सुझावों पर चर्चा के लिए, आयोजित की गई। अध्यक्ष महोदया के निर्देश पर सचिव ने अवगत कराया कि झांसी मण्डल से पत्र द्वारा सूचित किया गया है कि वहां के सभी कंप्यूटरों पर हिंदी का यूनीकोड फॉण्ट सक्रीय करा दिया गया है तथा उस पर कार्य हो रहा है/निरीक्षण संबंधी कार्य मुख्यालय के सभी अनुभागों और चारों स्थानीय मंडलों का पूरा हो चुका है। अध्यक्ष महोदया ने प्रगति में गिरावट को देख कर नाखुशी जाहिर की, साथ ही लक्ष्य प्राप्त कर लेने वाले अनुभागों की सराहना करते हुए सभी को निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने हेतु रचनात्मक प्रयास करने को कहा।

आयुक्तालय केंद्रीय उत्पाद, सीमा शुल्क एवं सेवाकर, भोपाल

आयुक्तालय केंद्रीय उत्पाद, सीमा शुल्क एवं सेवाकर भोपाल में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की समीक्षा हेतु श्री हेमन्त भट्ट, प्रमुख आयुक्त, सीमा शुल्क, केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर की अध्यक्षता में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 09.10.2015 को प्रात: 11.30 बजे, मुख्यालय के सम्मेलन भवन में आयोजित की गई।

अध्यक्ष महोदय ने आयुक्तालय में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने के प्रयासों पर चर्चा की तथा हर प्रभाग एवं शाखा की राजभाषा हिंदी में कार्य की प्रगति की समीक्षा की और जहां भी हिंदी में कार्य का प्रतिशत संतोषजनक नहीं पाया वहां इस ओर सजग होकर और अधिक कार्य करने की आवश्यकता बताई।

हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस समारोह के सफल आयोजन पर प्रमुख आयुक्त महोदय ने हिंदी शाखा, मुख्यालय को बधाई दी।

अध्यक्ष महोदय ने निर्देश दिए कि अधिक से अधिक टिप्पणियां हिंदी में लिखी जाएं तथा समस्त अधिकारीगण हिंदी में ही हस्ताक्षर करें एवं हिंदी की मुहर लगाएं। पत्र शीर्ष/द्विभाषी रूप में अधिक से अधिक प्रयोग में लाएं जाएं। कारण बताओ नोटिस का अग्रेषण पत्र अनिवार्य रूप से हिंदी में जारी किया जाय।

माननीय प्रमुख आयुक्त महोदय ने निर्देश दिया कि प्रभागीय प्रमुख अपने अधीनस्थ प्रभाग व रेंजों का राजभाषा हिंदी से संबंधित औचक निरीक्षक समय समय पर किया जाए।

मुख्यालय व सभी प्रभागों में अधिकांश कंप्यूटरों पर यूनिकोड सॉफ्टवेयर संस्थापित कर दिए गए हैं और इसके प्रयोग के बारे में पुन: विस्तार से सभी को समझाया गया। तथा जिन कंप्यूटरों के विन्यास बहुत पुराने हो चुके हैं और जिनमें यूनिकोड सॉफ्टवेयर संस्थापित नहीं हो पा रहें हैं, उनको अपग्रेड करने के अध्यक्ष महोदय ने आदेश दिए, जिससे कि शत प्रतिशत कंप्यूटरों पर हिंदी में काम किया जा सके।

मुख्यालय, सीमा सड़क महानिदेशालय, सीमा सड़क भवन, रिंग रोड, दिल्ली छावनी, नई दिल्ली-110010

मुख्यालय सीमा सड़क महानिदेशालय, नई दिल्ली में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 99वीं बैठक श्री बी बी लाल, अपर महानिदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 07 अगस्त, 2015 को अपराह्न 0300 बजे महानिदेशालय के सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुई।

कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की झिझक दूर करने के लिए सीमा सड़क महानिदेशालय में दिनांक 03 से 05 अगस्त 2015 तक 03 दिवसीय हिंदी कार्यशालय का संचालन किया गया जिसमें 20 कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि सभी अधिकारी प्रशिक्षित कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करें।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि लिफाफों पर पता हिंदी में लिखने के लिए प्रयोग के तौर पर स्टिकर बनाकर दिए जाएं साथ ही वेबसाइट पर सामग्री द्विभाषी रूप में डाली जाए। कर्नल संजय कुमार ने कहा कि अधिकारियों के स्थानांतरण आदेशों की तरह ही ग्रेफ अभिलेख द्वारा भी ग्रेफ कार्मिकों के स्थानांतरण आदेश हिंदी में जारी किए जाएं। इस संबंध में आवश्यक आदेश अभिलेख कार्यालय को जारी कर दिए गए हैं।

आकाशवाणी, शिमला

आकाशवाणी शिमला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सितंबर, 2015 को समाप्त तिमाही की बैठक दिनांक 26.10.2015 को अपराह्न 3.00 बजे केंद्राध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

राजभाषा नियम-5 के अनुपालन पर सभी सदस्यों ने संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि केंद्र इस दिशा में उतरोत्तर प्रगति कर रहा है। इस पर अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सदस्यों को इसी उत्साह के साथ आगे भी काम करने का आह्वान किया।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि सभी अनुभाग प्रभारी यह सुनिश्ति करें कि उनकी ओर से जारी सभी पत्र हिंदी में ही हों। अत: इस संबंध में जारी किए गए जांच बिंदू का अनुपालन करना हम सब का नैतिक दायित्व भी है।

अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्यों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि वे कार्यालयीन हिंदी भाषा के प्रयोग में किसी समस्या की अवस्था में हिंदी प्रभारी से परामर्श व सहयोग लें तथा राजभाषा की गृहपत्रिका के लिए ज्यादा लेख लिखने में सभी अधीनस्थ कार्मिकों को प्रेरित करने को कहा।

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

जयपुर

जयपुर की 69वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 27.08.2015 को अपराह्न 3.00 बजे बहुउद्देशीय भवन, केंद्रीय विद्यालय नं॰ 1, बजाज नगर जयपुर, में आयोजित की गई। इस बैठक में प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक॰) राजस्थान, जयपुर एवं अध्यक्ष नराकास (के॰ का॰), जयपुर, श्रीमती सुदर्शना तलापत्रा, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य क्षेत्र) भोपाल से सहायक निदेशक श्रीमती साधना त्रिपाठी राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हुई।

डा॰ जयदीप दास उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन ने अपने संबोधन में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की भूमिका की भूरी-भूरी प्रशंसा की एवं बैठक आयोजन स्थल के रूप में केंद्रीय विद्यालय नं॰ 1 के बहुउद्देशीय भवन का चयन करने को एक अच्छा अवसर बताते हुए सभी केंद्रीय विद्यालयों में राजभाषा विभाग के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के बिंदुओं को पालना सुनिश्चित करने के प्रति प्रतिबद्धता जताई।

बैठक में श्रीमती प्रज्ञा पालीवाल गौड, पत्र सूचना कार्यालय ने सुझाव दिया कि नराकास कि वेबसाइट में सभी प्रकार के प्रतिवेदन एवं पत्रों को आनलाइन उपलब्ध करवाने के साथ-साथ अपलोड की सुविधा भी होनी चाहिए।

बैठक को संबोधित करते हुए राजभाषा प्रतिनिधि श्रीमती साधना त्रिपाठी ने कहा कि धारा 3(3) और नियम 5 का अनुपालन सुनिश्चित करने का उत्तरदायित्व कार्यालय के प्रमुख का ही है। तिमाही बैठकें अवश्य आयोजित की जाए एवं छ:माही प्रतिवेदन के प्रारूप में संशोधन कर एक कॉलम और बढ़ाया जाए, जिसमें तिमाही बैठकों के आयोजन की तिथियां अंकित की जाए। राजभाषा विभाग द्वारा तिमाही

प्रतिवेदनों को ऑनलाइन भिजवाने हेतु सभी कार्यालयों से पंजीकरण करवाने का अनुरोध किया गया। नराकास में सभी सदस्यों को रिपोर्ट भेजने व बैठक में भाग लेने की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रत्येक कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए विर्निदिष्ट अनुभागों का प्रतिशत 40% दर्शाया जाता है जिसके स्थान पर अब यह शत प्रतिशत होगा। हिंदी पदों की भर्ती प्रत्येक कार्यालय द्वारा पूरी की जानी चाहिए। केंद्रीय कार्यालयों की छ:माही बैठकों में बैंक व उपक्रम के अध्यक्षों को भी बुलाया जाए। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने संबोधन में यह भी कहा कि ''क'' क्षेत्र से ''क'' क्षेत्र में अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाए। वर्ष 2014-15 में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले कार्यालयों को बधाई दी।

छतरपुर (म०प्र०)

नराकास छतरपुर की बैठक आकाशवाणी छतरपुर के सहायक निदेशक (अभियांत्रिकी) केंद्राध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में केंद्रीय विद्यालय में संपन्न हुई। अध्यक्ष जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि अपना फर्ज समझ कर सदैव हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करें, हिंदी की उपेक्षा न करे और हिंदी राजभाषा को प्रचारित एवं प्रसारित कराने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करे।

सर्वप्रथम नराकास अध्यक्ष ने सदस्यों की संख्या कम होने पर खेद व्यक्त करते हुए कहा कि इस बैठक का बहुत बड़ा महत्व होता है और सभी सदस्यों को इस बैठक में हिस्सा लेना चाहिए। अध्यक्ष जी ने एजेण्डा पर चर्चा करते हुए कहा कि सभी सदस्यों की त्रैमासिक रिपोर्ट प्राप्त न होने के कारण समय पर समेकित तिमाही रिपोर्ट नहीं भेजी जा रही है, इसलिए समय पर त्रैमासिक रिपोर्ट जमा करें। आगे उन्होंने कहा कि सदस्यों की संख्या कम और आगीदारी कम होने से भोपाल और दिल्ली ने गम्भीरता से लिया है इसलिए सभी सदस्यों से उपस्थित रहने का अनुरोध किया।

इसके उपरान्त नराकास के सचिव श्री दिनेश रजक कार्यक्रम अधिकारी ने उपस्थित सदस्यों से त्रैमासिक हिंदी की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने लिए कहा, दो सदस्यों ने रिपोर्ट प्रस्तुत की कुछ सदस्य पूर्व में ही प्रगति रिपोर्ट प्रेषित कर चुके थे। नराकास सचिव ने धारा-3(3) का उल्लेख करते हुए कहा कि पत्र आदेश, कार्यालय आदेश, नाम पट्टी, चैक, ड्राफ्ट इत्यादि सभी हिंदी में लिखें, जिससे हिंदी का ज्यादा से ज्यादा लोग लाभ उठा सके।

इसके बाद क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय से पधारे श्री सुरेन्द्र सिंह रघुवंशी ने कहा कि नराकास बैठक की सूचना और अन्य इनसे जुड़ी हुई गतिविधियों की सूचना के लिए वॉट्सएप पर ग्रुप बनाकर दी जा सकती है इसका समर्थन आकाशवाणी के कार्यक्रम प्रमुख श्री शम्भूदयाल अहिरवार ने भी किया ताकि सूचनाओं का तत्काल आदान-प्रदान हो सके। आगे शिवमोहन त्रिपाठी, ने कहा कि सोशल ग्रुप बनाकर, तो वहीं आयकर विभाग के एन०एल० नागर ने कहा कि नराकास की आई०डी० बनाई जाए, तो वहीं बी०एस०एन०एल० के हिंदी अधिकारी ने नराकास की ई-मेल आई०डी० बनाने का सुझाव दिया। केंद्रीय विद्यालय के श्री रामगोपाल प्रजापति ने कहा कि जो प्रतियोगिताएं आयोजित करा रहे हैं जैसे-निबंध, कविताएं, वार्ताएं, कहानियां इत्यादि। वे आलेख प्रतियोगिता में प्रथम आते हैं तो उनको पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेज सकते हैं ताकि प्रकाशन सामग्री एकत्रित की जा सके। इन्होंने अपने कार्यालय की आई-डी www.kv.chhatarpur.com भी नोट करवाई। श्री राकेश पाल मिंज शाखा प्रबंधक युनाइटेड इंडिया और पंजाब नेशनल बैंक के अधिकारी श्री बलवंत कुमार ने भी अपने सार्थक विचार सभी के समक्ष प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि हमारे यहां सॉफ्टवेयर हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है परन्तु हमारे यहां पर भी हिंदी में कार्य हो रहा है।

न्यू इंडिया के श्री अनिल मिश्र ने कहा कि नए सदस्यों को भी इसमें सम्मिलित किया जाए जैसे कि नवोदय विद्यालय व अन्य बैंकों को जो अभी तक नहीं जुड़े हैं। आकाशवाणी के सहायक श्री पी०के० यादव ने कहा कि नराकास के लिए बजट में अलग से राशि का प्रावधान किया जाए। आकाशवाणी के श्री दिनेश रजक जी ने कहा कि कार्यालय के विभागीय अध्यक्ष नहीं आते हैं अपने अपने प्रतिनिधियों को भेज देते हैं जिससे निर्णय लेने में असमंजस्य की स्थिति बनी रहती है। क्योंकि प्रतिनिधि कहते हैं कि हम अपने केंद्राध्यक्ष से बात करके ही बता पाएंगे। इसलिए प्रतिनिधियों को न भेजकर केंद्राध्यक्ष ही उपस्थित हों।

(ग) कार्यशालाएं

'ग' क्षेत्र

अन्तरिक्ष विभाग, मुख्य नियंत्रक सुविधा, पो॰बा॰न॰ 66, हासन-573201

मुख्य नियंत्रक सुविधा, हासन में 29 सितंबर 2015 को एमसीएफ-हासन में कार्यरत वरिष्ठ तकनीशियन-ए एवं बी तथा वाहन चालकों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला सत्र का संचालन श्री महेश्वर घनकोट, हिंदी अधिकारी, एमसीएफ, हासन ने किया। कार्यशाला सत्र के दौरान उन्होंने बड़े ही रोचक ढंग से राजभाषा हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच समन्वय बताते हुए प्रायोगिक रूप से कर्मचारियों के कार्यक्षेत्रों में हिंदी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यशाला के दौरान सभी प्रतिभागियों को कार्यालयीन नेमी प्रपत्रों को भरने का भी प्रशिक्षण दिया। उन्होंने सभी कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का महत्व बताते हुए इस बात पर भी जोर दिया कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सबका संवैधानिक कर्तव्य है। जब हम एक राज्य से दूसरे राज्य में किसी काम से या फिर घूमने-फिरने जाते हैं तो हिंदी ही हमें अन्य राज्यों की जानकारी, पता या फिर अन्य संपर्क स्थापित करने में सहायता करती है।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने सभी मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि सभी कर्मचारी अपने दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।

राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय केरल और लक्षद्वीप, कोट्टण हिल बंगला, तिरूवनंतपुरम-695010

हिंदी कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों को अपना सरकारी काम-काज हिंदी में करने की कठिनाईयों का निराकरण करने और हिंदी में काम करने के प्रति उनकी झिझक दूर करने के लिए, उन्हें अधिकाधिक सरकारी काम हिंदी में ही करने के प्रति प्रेरित व प्रोत्साहित करने हेतु तारीख 23 सितम्बर, 2015 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित किया गया।

श्रीमती श्रीकला एस पिल्लै, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, सहायक आसूचना ब्यूरो, तिरुवनंतपुरम ने राजभाषा नीति, राजभाषा नियम व अधिनियम, मानक मसौदे, मानक टिप्पण, विभिन्न प्रकार के आवेदन, अभ्यावेदन, सामान्य आदेश के विविध रूप, वार्षिक कार्यक्रम, कार्यालयीन शब्दावली आदि विषयों पर अपेक्षानुसार सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी दी गई।

इस निदेशालय के निदेशक कर्नल श्रीजित वारियर, एस एम ने कहा कि भाषा के सदुपयोग में ही उसकी गरिमा है और हिंदी पढ़ना-पढ़ाना, हिंदी में काम करना राष्ट्रनिर्माण के कार्य हैं। उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार व इलैक्ट्रानिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव का उल्लेख करते हुए कंप्यूटर में हिंदी का प्रयोग करने का अनुरोध किया गया। उन्होंने बताया कि हिंदी में काम करना हम सबका उत्तरदायित्व है। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला से प्राप्त प्रशिक्षण का सदुपयोग करें और कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने में अपना-अपना दायित्व पूरा करें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में यह कार्यशाला सहायक सिद्ध होगी। इसके बाद उत्तीर्णता प्राप्त कर्मचारियों को उन्होंने प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। कार्यशाला के समापन समारोह में सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने मूल्यांकन में कार्यशाला की प्रशंसा की।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, राज्य कार्यालय, गांधी भवन, एम॰जे॰ रोड, नाम पल्ली, हैदराबाद-500001

खादी और ग्रामोद्योग आयुक्त कार्यालय, राज्य कार्यालय, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश में दिनांक 18.09.2015 पूर्वाह्न 4.00 बजे 'हिंदी कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि श्री कमालुद्दीन, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, सिकंदराबाद के साथ-साथ डॉ एम॰ए॰ खुद्दुस, राज्य निदेशक (आ॰प्र॰), श्री एन॰ राजा॰ प्रसाद, उप निदेशक, तथा कार्यालय के अन्य राजपत्रित अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

राज्य निदेशक डॉ एम॰ ए॰ खुद्दुस ने सभा की अध्यक्षता निभाई। अपने अध्यक्षीण भाषण में डॉ एम॰ ए॰ खुद्दुस ने सबसे पहले उपस्थित मुख्य अतिथि महोदय तथा सभी कर्मचारियों का कार्यशाला में स्वागत किया। आगे उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी अधिकारी व कर्मचारीगण को एकजुट होकर काम करना चाहिए। उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को

बताया कि हिंदी में काम करना कोई कठिन कार्य नहीं है केवल काम करने के लिए इच्छा व रुचि होना आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा कि इसी दृष्टि से हर तिमाही में 'हिंदी कार्यशाला' आयोजित किए जा रहे है ताकि कार्यालयीन कार्य में हिंदी में कार्य करने का झिझक मन से दूर कर सके तथा सुचारू रूप से हिंदी में काम कर सके।

राज्य निदेशक जी के वक्तव्य के पश्चात मुख्य अतिथि श्री कमालुद्दीन जी ने कार्यालयीन हिंदी में अधिकतर उपयुक्त शब्द तथा उनका प्रयोग के बारे में उपस्थित सभी कर्मचारियों को बताया। कार्यालयीन हिंदी में विदेशी भाषाओं के शब्द तथा उनका प्रयोग पर भी उन्होंने प्रकाश डाला।

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री के उदय किरण ने इस कहा कि हिंदी में टिप्पणियां लिखने वाले अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु लागू योजना के बारे में सविस्तृत समझाया।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण त्रिवेन्द्रम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, तिरूवनंतपुरम-695 008

त्रिवेन्द्रम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के तकनीकी ब्लॉक में स्थित विमान यातायात प्रशिक्षण केंद्र में दिनांक 24.08.2015 को प्रातः 1000 बजे से सायं 05.00 बजे तक संयुक्त रूप से भा॰वि॰प्रा॰ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजन किया। संयुक्त हिंदी कार्यशाला भाविप्रा के 30 कार्मिकों को नामांकित की गई। हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन समारोह प्रातः 1000 बजे प्रारंभ हुआ। उद्घाटन समारोह का संचालन श्री साजी॰सी॰ अब्राहम, प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया तथा हिंदी कार्यशाला के आयोजन के बारे में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि अपने अध्यक्षीय भाषण के तहत सूचित किया कि भा॰वि॰प्रा॰ प्रबंधन द्वारा इस तरह के कार्यशाला के आयोजन से सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए प्रत्येक तिमाही अवधि में प्रोत्साहन दिया जाता है तथा राजभाषा निरीक्षण के दौरान कार्यशाला में नामांकित प्रतिभागियों की उपस्थिति की समीक्षा करते हैं। उन्होंने यह भी सूचित किया कि कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करके कार्मिकों द्वारा कार्यालय उपस्थिति रजिस्टर पर हिंदी में हस्ताक्षर, हिंदी में टिप्पण व आलेखन तथा पत्राचार हिंदी में करके भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण का नाम गौरव करने का भरसक कोशिश करें एवं राजभाषा हिंदी को निरंतर अग्रणी स्थान प्रदान करने का प्रयास करें। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए विशेष अतिथि श्री एम॰ सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग द्वारा कार्यशाला के प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि भा॰वि॰प्रा॰ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा भारत के विभिन्न हवाई अड्डों में कार्य करने वजह से सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए दृढ़ संकल्पित तथा हिंदी पत्राचार को बढ़ाने में अपना भरसक प्रयास सुनिश्चित करें।

श्री सोमदत्तन जी द्वारा राजभाषा नीति, जांच बिंदु, वार्षिक कार्यक्रम, राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) से संबंधित दस्तावेज, राजभाषा जागरूकता, टिप्पण एवं प्रारूपण, प्रशासनिक एवं पारिभाषिक शब्दावली आदि विषयों में व्यख्यान दिए गए। कार्यशाला के दौरान उपर्युक्त विषयों पर अभ्यास और सक्रियात्मक ढंग से प्रतिभागियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया गया।

हिंदी कार्यशाला के द्वितीय सत्र अपराह्न 1400 बजे शुभारंभ हुआ। पत्राचार विभिन्न प्रकार एवं संघ के राजभाषा नीति आदि विषयों पर व्याख्यान दिया। संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण प्रश्नावली विषयों पर चर्चा किया,

भारत भारी उद्योग निगम लि॰, 26 राजा संतोष रोड, अलीपुर, कोलकाता-700027

हिंदी सप्ताह के दौरान 11.9.2015 को एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन कंपनी के निदेशक (परियोजना) श्री सुंदर बनर्जी ने किया। कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के प्रभारी अधिकारी, श्री सतीश कुमार पाण्डेय आमंत्रित थे। उन्होंने कंपनी के कर्मचारियों के बीच ''कंप्यूटर पर हिंदी कार्य करने में आने वाली समस्याएं तथा उपलब्ध यांत्रिक सुविधाएं'' पर ठोस जानकारी दी। राजभाषा नीति एवं राजभाषा नियमों की जानकारी भी दी गई। इस कार्यशाला का आयोजन कंप्यूटर पर कार्यालयीन काम-काज राजभाषा हिंदी में करने एवं हिंदी पत्राचार में कौशल बढ़ाने के लिए किया गया है। कार्यशाला में लैपटॉप और प्रोजेक्टर की सहायता से कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के सरल तरीके बताए गए एवं वर्तमान में राजभाषा विभाग द्वारा वेबसाइट पर दी गयी सभी तकनीकी सुविधाओं को अपनाने को कहा गया।

कंप्यूटर पर अंग्रेजी से हिंदी एवं हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद के लिए उपलब्ध ट्रांसलेशन टूल्स एवं कई सॉफ्टवेयरों के बारे में बताया गया। उनमें से कुछ प्रचलित एवं उपयोगी सॉफ्टवेयरों एवं इसके प्रयोग की सरल विधि की जानकारी दी गई। कार्यशाला में ई-महाशब्दकोष के उपयोग, हिंदी भाषा, लीला के माध्यम से हिंदी शिक्षण की सुविधाओं से अवगत कराया गया। साथ ही कंप्यूटरों पर ''यूनिकोड'' स्थापित करना एवं हिंदी टंकण कार्य करने के लिए आसान कुंजीपटल का उपयोग करना सिखाया गया। सभी प्रतिभागियों ने कंप्यूटर पर आयोजित इस कार्यशाला में हिंदी कार्य करने संबंधी उपयोगी, सूचनाप्रद व्याख्यान देने के लिए अतिथि संकाय, श्री पाण्डेय की प्रशंसा की। अंत में कंपनी के राजभाषा प्रभारी द्वारा श्री पाण्डेय एवं उपस्थित सभी के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान बहरमपुर-742101, जिला मुर्शिदाबाद, (पश्चिम बंगाल)

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर (प॰बं॰) में दिनांक 21.08.2015 को राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा राजभाषा नीति व इसके उपबंधों के सफल व सम्यक कार्यान्वयन और इसके प्रचार-प्रसार में गति लाने के उपयोगार्थ विकसित विविध टूल्स यथा ई-महाशब्दकोष, गुगल ट्रांसलेशन, यूनिकोड टाइपिंग पैकेज, ऑन लाइन हिंदी प्रशिक्षण आदि की विस्तृत जानकारी तथा इसके अनुप्रयोग व प्रचालन विधि पर व्यावहारिक प्रशिक्षण के निमित ''निमित ई-टूल्स के अनुप्रयोग'' पर प्रशिक्षण सह-कार्यशाला का आयोजन संस्थान के पदाधारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के साथ ही साथ राजभाषा हिंदी के प्रावधानों के सम्यक अनुपालन व इसके प्रभावी कार्यान्वयन हेतु अनुकूल माहौल की सृष्टि के उद्देश्य से किया गया।

कार्यशाला के आरंभ में संस्थान के सहायक निदेशक (राभा) द्वारा यूनिकोड के तकनीकी पहलुओं की व्याख्या करते हुए इसके माध्यम से कंप्यूटर पर किस तरह सरलता से हिंदी में कार्य किया जा सकता है, इस तथ्य पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कंप्यूटर पर हिंदी टंकण हेतु उपलब्ध नए-नए टूल्स की जानकारी दी, जिससे कि कार्यशाला में उपस्थित पदधारीगण अत्यंत प्रभावित तथा लाभान्वित हुए। इसके अलावा, सभी पदाधिकारियों को कंप्यूटर पर ई-महाशब्दकोष के माध्यम से वांछित शब्दों के अर्थ ढूंढने तथा यूनिकोड के संस्थापन की क्रिया-विधि से अवगत कराया गया ताकि सभी पदधारी अपने-अपने दैनिक सरकारी कार्यों को सहजतापूर्वक राजभाषा हिंदी में निष्पादित करने में सक्षम हो सकें।

आकाशवाणी, हैदराबाद

आकाशवाणी, हैदराबाद कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में दि॰ 09.09.2015 का अपराह्न 02.30 बजे से अपराह्न 05.00 बजे तक अधिकारियों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 20 अधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में अतिथि वक्ता ने भारत सरकार की राजभाषा नीति, संविधान में राजभाषा हिंदी से संबंधित धाराओं का उल्लेख करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 के बारे में विस्तार से बताया। साथ ही, उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2015-16 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में 'ग'-क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ण जानकारी दी। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन तथा उसकी बैठकों का हर तिमाही में नियमित रूप से आयोजन, नगर रा॰भा॰का॰स॰ की छमाही बैठकों में कार्यालय प्रमुख की अवश्य उपस्थिति, माननीय संसदीय राजभाषा समिति और उसकी निरीक्षण प्रश्नावली आदि से संबंधित विषयों पर भी व्याख्यान दिए।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में उन्होंने आकाशवाणी के अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। हिंदी के कार्य को करने के प्रभावी तरीके को बताया। हिंदी को राजभाषा के रूप में चुने जाने के महत्व पर प्रकाश डाला। हिंदी के बढ़ते वर्चस्व के एवं कार्य प्रणाली का संवैधानिक प्रारूप प्रस्तुत किया। राजभाषा के विकास में अधिकारियों के योगदान का महत्व बताया। राजभाषा के विकास से ही देश के विकास एवं एकात के संबंध पर प्रकाश डाला।

दिनांक 10.09.2015 को अपराह्न 2.30 से 5.00 बजे तक मल्टी टास्क कर्मचारियों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 16 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस कार्यशाला का संचालन राजभाषा विभाग, हिंदी शिक्षण

योजना के स्थानीय कार्यालय से आमंत्रित वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक श्री मोहम्मद कमालुद्दीन ने किया। कार्यशाला के प्रथम सत्र में व्याख्याता ने कर्मचारियों को ''हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस क्यों मनाते हैं?'' पर जानकारी दी। इसके बाद उन्होंने हिंदी वर्णमाला के स्वर और व्यंजन के बारे में बहुत ही सरल और आसान तरीके से हिंदी और तेलुगु में सविस्तार समझाया। साथ ही उन्होंने हिंदी के स्वरों की मात्राएं तथा व्यंजनों पर मात्राएं लगाने की विधि पर समझाया एवं सिखाया। इसके साथ-साथ, ''मात्रा सहित व्यंजनों (बारह खड़ी) को कैसे लिखते हैं?'' पर प्रकाश डालते हुए सोदाहरण समझाया। कार्यालय के दूसरे सत्र में उन्होंने ''हिंदी में दो, तीन और चार अक्षरों को मिलाकर शब्दों को कैसे लिख सकते हैं?'' पर जानकारी देते हुए आसानी से याद रखने वाले उदाहरण सहित प्रस्तुत करते हुए प्रशिक्षणार्थियों से अभ्यास करवाया। प्रशिक्षणार्थियों ने यह विचार व्यक्त किया कि कार्यशाला बहुत उपयोगी और ज्ञानवर्धक रही और उन्हें हिंदी के छोटे-मोटे शब्दों को लिखते समय आने वाले संदेहों को भी दूर करने का मौका मिला।

आकाशवाणी, विशाखापट्टणम

कार्यालय में सभी अधिकारियों के लिए दिनांक 28.04.2015 को विशेष एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसके प्रथम सत्र में हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक (टंकण एवं आशुलिपि), श्री घनश्याम प्रसाद नामदेव ने कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए यूनिकोड के प्रयोग पर पावर पाइंट प्रस्तुति के साथ विस्तृत व्याख्यान दिया और अच्छे से समझाया कि यूनिकोड के कुछ टूल्स की सहायता से किस तरह अधिकारी भी स्वयं हिंदी में आसानी से काम कर सकते हैं। सभी अधिकारियों ने बड़ी रुचि लेकर यूनिकोड के प्रयोग के बारे में अपनी-अपनी शंकाओं को दूर करने का प्रयास किया। इस कार्यशाला के दूसरे सत्र में पूर्वी नौ सेना कमान की सहायक निदेशक (राजभाषा), श्रीमती भाग्यलक्ष्मी ने राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आनेवाले सामान्य आदेश आदि सभी कागजातों के बारे में पूरी जानकारी दी और बताया कि इन कागजातों को शत प्रतिशत द्विभाषी में ही जारी करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है। अत: इन्हें जारी करते वक्त सभी अधिकारियों को सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि ऐसे कागजातों को द्विभाषी जारी करने की पूरी जिम्मेदारी विशेषकर उन पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की ही होती है। इसके अलावा उन्होंने हिंदी पत्राचार एवं धारा 3(3) के अंतर्गत आनेवाले कागजातों को जारी करने के लिए निर्धारित जांच बिंदुओं की भी पूरी जानकारी दी ताकि राजभाषा कार्यान्वयन को सुनिश्चित किया जा सके।

आकाशवाणी, कटक

आकाशवाणी, कटक में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा सरकारी कामकाज हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिनांक 22 और 23 सितम्बर, 2015 को आकाशवाणी के सम्मेलन कक्ष में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में आकाशवाणी, कटक के अधिकारी/कर्मचारियों के साथ-साथ विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, कटक एवं राष्ट्रीय प्रसारण और मल्टीमीडिया अकादमी, भुवनेश्वर के कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

दो दिवसीय इस कार्यशाला में राजभाषा हिंदी के विविध पहलुओं पर चर्चा हुई। दिनांक 22 सितम्बर को आयोजित कार्यशाला का विषय था ''गणमाध्यम और हिंदी''। इस विषय पर इमर्ती देवी महिला महाविद्यालय कटक के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ॰ कमलिनी पाणिग्राही ने विस्तार से चर्चा की। उन्होंने हिंदी की प्रचार प्रसार में गणमाध्यमों की अहम भूमिका पर प्रकाश डाला और कार्यालयीन काम काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए प्रतिभागियों को प्रेरित किया।

दिनांक 23 सितम्बर को आयोजित कार्यशाला का विषय था ''हिंदी भाषा और व्याकरण का सामान्य ज्ञान''। इस विषय पर रेवेंशा विश्वविद्यालय, कटक के हिंदी विभाग के प्रवक्ता डॉ॰ सुनातन बेहेरा ने व्याख्यान प्रदान किया। उन्होंने उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अत्यंत रोचक ढंग से प्रतिभागियों को समझाया एवं अभ्यास भी करवाया। प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ अभ्यास किया।

'ख' क्षेत्र

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, रुडा बिल्डिंग, 5वीं मंजिल, जामनगर रोड, राजकोट-360001

भारतीय कपास निगम लिमिटेड शाखा कार्यालय राजकोट में दिनांक 28 सितंबर 2015 को श्री मोहित शर्मा शाखा प्रबंधक

की अध्यक्षता में हिंदी पत्राचार के विभिन्न रूप विषय पर हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला को संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि अनेकता में एकता वाली भारतीय संस्कृति में एक सूत्र में बांधने का कार्य हिंदी ने किया है।

इस अवसर पर श्री संतोष कुमार शर्मा कार्यालय प्रबंधक (हिन्दी) ने हिंदी के प्रयोग पर प्रतिबद्धता दर्शाते हुए राजभाषा अधिनियमों के बारे में ध्यान आकृष्ट किया एवं कार्यालयीन कामकाज में हिंदी की प्रासंगिता का स्पष्ट चित्रण किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रति भागियों को हिंदी पत्रों के विभिन्न रूपों से अवगत कराया।

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, मेघानी नगर, अहमदाबाद-380016

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद में दिनांक 29 सितंबर 2015 को सुबह 9.30 बजे से सायं 4.45 बजे तक संस्थान के संगोष्ठी कक्ष में (1) संघ की राजभाषा नीति (2) हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन (3) सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी की उपयोगिता (सैद्धांतिक) तथा (4) सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी की उपयोगिता (प्रयोगात्मक) नामक विषयों पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी अनुभागों के हिंदी व हिंदीत्तर भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में आमंत्रित श्री वी दत्त ने सर्वप्रथम ''संघ की राजभाषा नीति'' के बारे में सभी को अवगत कराया। इसमें आपने धारा 343 से लेकर धारा 351 तक में दिए गए निर्देशों के बारे में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विस्तार से समझाया। इसके बाद आपने राजभाषा अधिनियम 1963, 1968 व राजभाषा नियम 1976 में क्रम संख्या 1 सं 12 में दिए गए निर्देशों के बारे में सभी को विस्तार से समझाया। तृतीय व चतुर्थ सत्र में आमंत्रित अतिथि वक्ता श्री पवन कुमार शर्मा, राजभाषा अधिकारी, केंद्रीय विद्यालय, गांधीनगर ने सूचना प्रौद्योगिकी के तकनीकी पहलुओं पर चर्चा करते हुए इसके माध्यम से कंप्यूटर पर किस तरह सरलता से हिंदी में कार्य किया जा सकता है, इसके बारे में विस्तार से समझाया। आपने कंप्यूटर पर हिंदी टंकण हेतु उपलब्ध नए-नए टूल्स की जानकारी दी, विशेषकर माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित लिप्यंतरण (ट्रांसलिटरेशन) की-बोर्ड की जानकारी से उपस्थित अधिकारी/कर्मचारी अत्यंत प्रभावित हुए क्योंकि इस तकनीक के माध्यम से ऐसे कर्मचारी भी कंप्यूटर पर अपना कार्य हिंदी में आसानी से कर सकते हैं जिन्होंने हिंदी टंकण का कोई पारंपरिक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है। हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया जा सकता है।

आकाशवाणी, नवरंगपुरा, अहमदाबाद

हिंदी पखवाड़ा 2015 के दौरान दिनांक 22.09.15 को आकाशवाणी के सभागार में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन करते हुए सचिव ने वक्ता एवं उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया। कार्यशाला में वक्ता के रूप में आसित आचार्य, अपर सहायक निदेशक, आयकर कार्यालय को आमंत्रित किया गया था।

बताया कि मानव जीवन के मुख्य रूप से कुल चार स्तंभ हैं। 1. राष्ट्रवाद, 2. आचार-विचार, 3. परम्परा, 4. भाषा। हिंदी एक सरल भाषा है जो दूसरी भाषाओं के शब्दों को समाहित करते हुए आगे बढ़ रही है। हमें अपना सरकारी कामकाज अपनी राजभाषा में ही करना चाहिए। वैसे भी कम लोग अंग्रेजी माध्यम से पढ़े लिखे हैं तो गलत अंग्रेजी लिखने से अच्छा है हम हिंदी में अपना कार्य करें। सरल एवं सहज होने से शब्द अपने आप मिलते जाते हैं। धीरे-धीरे आप की भाषा सही होती जाती है।

'क' क्षेत्र

भारतीय डाक विभाग कार्यालय पोस्टमास्टर जनरल इंदौर क्षेत्र, इंदौर-452001

पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय इंदौर में दिनांक 23.09.2015 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला कार्यालय में 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2015 तक मनाए गए हिंदी दिवस व हिंदी पखवाडा के दौरान आयोजित की गई। इसका उद्देश्य भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन व राजभाषा कार्यान्वयन को और गति प्रदान करना तथा सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक दूर करना था। प्रमुख वक्ता कार्यालय के कनिष्ठ अनुवादक श्री प्रवीण कोटवाला थे। प्रमुख वक्ता ने प्रारंभ में हिंदी कार्यशाला

की महत्ता प्रतिपादित की और कहा कि बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाने के कारण ही हमारे संविधान निर्माताओं ने देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर 1949 को स्वीकार किया था। प्रमुख वक्ता ने इस कार्यशाला में राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2015-16 की विस्तृत जानकारी सभी को दी तथा इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हर संभव प्रयास करने पर जोर किया। इसके अलावा हिंदी में मौलिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए चलाई जा रही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं और राजभाषा संबंधी विभिन्न नियमों/प्रावधानों की जानकारी सभी को दी।

(घ) हिंदी दिवस

'ग' क्षेत्र

राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, केरल और लक्षद्वीप, कोट्टण हिल बंगला, तिरुवनंतपुरम-695010

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए उत्साहपूर्वक वातावरण बनाने और भाषाई सद्भाव को सुदृढ़ बनाने के लिए इस कार्यालय में हर वर्ष हिंदी पखवाडा धूम-धूम के साथ मनाए गए हैं। हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14 सित 2015 से 28 सित 2015 तक विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के आयोजन हरेक दिन एक-एक कार्यक्रम चलाए गए। इसके अलावा हिंदी कार्यशाला, राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम और हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी भी चलायी गई।

28 सितम्बर 2015 को हिंदी पखवाड़े के विशेष समारोह के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम भी थे। इस अवसर पर निदेशालय के अपर महानिदेशक, मेजर जनरल सी पी सिंह, समापन समारोह का उद्घाटन किया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को इस निदेशालय के अपर महानिदेशक, मेजर जनरल सी पी सिंह, द्वारा पुरस्कार व प्रमाण पत्र वितरण किया।

महानिदेशालय, असम राइफल्स, शिलांग-793010

निदेशालय में दिनांक 08-22 सितम्बर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान कुल पाँच प्रतियोगिताएं हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए अलग-अलग आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए निदेशालय के अतिरिक्त प्रत्येक सेक्टर मुख्यालय से दो-दो कार्मिकों को भी आमंत्रित किया गया। समापन समारोह का आयोजन मेजर जनरल पी एन वर्मा की अध्यक्षता में किया गया। उन्हीं के कर कमलों से प्रत्येक श्रेणी के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार के तौर पर नकद एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। प्रतियोगिता में कुल 115 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, गांधी भवन, एम॰जे॰ रोड, नामपल्ली हैदराबाद

खादी और ग्रामोद्योग आयुक्त कार्यालय, राज्य कार्यालय, हैदराबाद, आंध्रप्रदेश में दि॰ 14 से 18 सितंबर, 2015 तक 'हिंदी सप्ताह समारोह' मनाया गया।

समारोह का उद्घाटन दि॰ 14.09.2014 को शाम 4.00 बजे राज्य निदेशक डॉ एम॰ए॰ खुद्दुस द्वारा किया गया।

उन्होंने कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग पर जोर देते हुए सभी अनुभागाध्यक्षों से आग्रह किया कि वे अपने अनुभाग में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें। उन्होंने सभी अधिकारी व कर्मचारियों से आग्रह किया कि न 'हिंदी सप्ताह' के दौरान बल्कि इसके पश्चात भी अपना कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने का भरसक प्रयत्न करें।

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन के मुख्यालय, शिलांग

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन के मुख्यालय, शिलांग में 01 सितम्बर 2015 को राजभाषा हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया। निगम के निदेशक (कार्मिक), श्री सत्यब्रत बरगोहाई ने प्रदीप प्रज्जवलित करके राजभाषा हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया।

अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि आप सभी सरकारी

कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने की पूरी कोशिश करें। जहां हिंदी के उपयुक्त शब्द नहीं मालूम पड़ते हैं वहां आप अंग्रेजी के प्रचलित शब्द जैसे-जनरेशन, ट्रांसमीशन का प्रयोग कर सकते हैं। हिंदी में हस्ताक्षर करके पत्राचार को बढ़ा सकते हैं। हिंदी के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाना हमारा दायित्व है।

दिनांक 14 सितम्बर, 2015 को हिंदी दिवस के मुख्य समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम, मुख्य अतिथि श्री पी॰ सी॰ पंकज, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों का हिंदी दिवस समारोह में आकर्षक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। श्री अशोक कुमार राय, हिंदी अधिकारी ने इस अवसर पर निगम में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों पर विशेष प्रकाश डाला।

त्रिवेन्द्रम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा
तिरूवनंतपुरम-08

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, त्रिवेन्द्रम अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा में दिनांक 14-09-2015 से 30-09-2015 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया।

श्री जोर्ज जी तरकन, विमानपत्तन निदेशक द्वारा अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आह्वान किया गया कि वे अपने अधिकाधिक दैनिक कार्य हिंदी में करें और गृह मंत्रालय द्वारा तय किए गए राजभाषा नीति नियमों का सही अनुपालन सुनिश्चित करके राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में बताए गए हिंदी पत्राचार का लक्ष्य को आवश्य प्राप्त करें।

हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह दिनांक 30 सितंबर 2015 को सायं 15.00 बजे सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई

श्री डी॰ कृष्ण पणिक्कर साहब, सेवा निवृत्त उप निदेशक (राजभाषा) विभाग द्वारा अपने आर्शीवाद भाषण में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाईयां देते हुए आग्रह किया कि जिन प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से प्रतियोगिता में भाग लिया उन्हें हिंदी पखवाड़े की समाप्ति के बाद भी उतने ही उत्साहपर्वूक अपना दैनिक कार्य हिंदी में ही करें।

विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि महोदय तथा विमानपत्तन निदेशक महोदय के कर कमलों से नकद पुरस्कार प्रदान की गई।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
बहरमपुर-742101, जिला मुर्शिदाबाद
(पश्चिम बंगाल)

दिनांक 01.09.2015 से 10.09.2015 तक विविध प्रतियोगिताओं यथा टिप्पण व आलेखन, शब्दावली, निबंध, वाद-विवाद, सुलेख व श्रुतिलेख, राजभाषा प्रश्नोत्तरी (क्वीज), अंत्याक्षरी तथा तात्क्षणिक भाषण का सफल आयोजन किया गया।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा, 2015 के मुख्य समारोह का भव्य आयोजन दिनांक 14.09.2015 के अपराह्न में संस्थान के प्रेक्षागृह में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रभारी महोदय डॉ॰ ए॰ के॰ साहा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर माननीय श्री जितेन्द्र कुमार रुडोला, डी॰ आइ॰ जी॰, सीमा सुरक्षा बल, रोशनबाग, मुख्य अतिथि द्वारा अपने अभिभाषण में यह उदगार व्यक्त किया कि हिंदी राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक है और हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है कि जो पूरे राष्ट्र की अखंडता को एकसूत्र में बांधकर रख सकती है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने यह भी कहा कि मुझे यह देखकर अत्यंत हर्ष का बोध हो रहा है कि यह एक अनुसंधान संस्थान होने के बावजूद भी यहां के सभी अधिकारी/पदधारी वर्ग हिंदी के प्रति निष्ठा रखतें है और अपना ज्यादातर कामकाज हिंदी में निष्पादित कर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन व तत्संबंधी संवैधानिक अपेक्षिताओं की पूर्ति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संस्थान के निदेशक प्रभारी डॉ॰ ए॰ के॰ साहा महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी सिर्फ सरकारी कामकाज की भाषा न होकर एक ऐसी वैज्ञानकि भाषा है जो पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकारी कामकाज के हर क्षेत्र में चाहे वह प्रशासनिक हो या शोध का क्षेत्र अर्थात् प्रत्येक क्षेत्र में अपना-अपना सरकारी कार्य हिंदी में ही कार्य निष्पादित करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। उन्होंने विजेता प्रतिभागियों के साथ-साथ संस्थान के अन्य अधिकारियों/पदधारियों को भी इस दिशा में कदम से

कदम मिलाकर आगे बढ़ने को कहा और यह विचार व्यक्त किया कि जब तक हम इस दिशा में सामूहिक प्रयास नहीं करेंगे तब तक सफलता हासिल नहीं हो सकती और आज हिंदी दिवस समारोह के इस अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम अपना ज्यादातर काम हिंदी में ही निष्पादित करेंगे।

एन एम डी सी लिमिटेड, खनिज भवन, 10-3-311 ए, कैसल हिल्स, मासाब टैंक, हैदराबाद-500028

14 से 28 सिमम्बर, 2015 तक 'राजभाषा पखवाड़ा, 2015' का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़े के अवसर हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए पृथक-पृथक रूप से हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण आलेखन एवं तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता, हिंदी कथा-कथन प्रतियोगिता (अनुसंधान एवं विकास केंद्र के कार्मिकों हेतु), हिंदी चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता (अनुसंधान एवं विकास केंद्र के कार्मिकों हेतु) आयोजित की गई।

दिनांक 28-09-2015 को राजभाषा पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री नरेन्द्र कुमार नन्दा, निदेशक (तकनीकी) ने की। अपने अध्यक्षीय उदबोधन में निदेशक (तकनीकी) श्री नरेन्द्र कुमार नन्दा ने कहा कि राजभाषा पखवाड़े के दौरान प्रज्जवलित की गई ज्योति निरंतर प्रकाशमान रहे तथा अपने प्रकाश से राजभाषा पथ को निरंतर आलोकित करती रहे। उन्होंने प्रतियोगिता में विजेताओं को बधाई दी तथा सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिता में भाग लेकर राजभाषा पखवाड़े को सफल बनाने में योगदान के लिए साधुवाद दिया।

नार्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कार्पोरेशन लि॰, रंगानदी जल विद्युत संयंत्र याजली, अरूणाचल प्रदेश

1 सितम्बर 2015 से 14 सितम्बर 2015 तक हिंदी पखपाड़ा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर संयंत्र प्रमुख श्री भट्टाचार्जी ने कहा कि हम सब कार्यालय के कार्य को राजभाषा हिंदी में ही करने का प्रयास करें। आप सब अपने दैनिक कार्यालय के काम में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करते हुए राजभाषा को मजबूती प्रदान कर लक्ष्य करने में तत्पर रहें।

हिंदी पखवाड़े का समापन तथा हिंदी दिवस समारोह 14-09-2015 को अपराह्न 3.30 बजे से रंगानदी जल विद्युत संयंत्र के सभागार कक्ष में किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री देबोतोष भट्टाचार्जी जी, संयंत्र प्रमुख रेहप थे।

हिंदी दिवस के अवसर सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को संबोधित करते हुए अपने अभिभाषण में मुख्य अतिथि महोदय ने हिंदी दिवस पर सबको बधाई देते हुए कहा कि 'हिंदी को और अधिक गतिशीलता प्रदान करना है।

राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान न॰ 8, बेल्लारी रोड़, बेंगलूर-560 003

हिंदी सप्ताह दिनांक 07 सितंबर, 2015 से 14 सितंबर, 2015 तक और हिंदी दिवस का आयोजन दिनाँक 21 सितंबर 2015 को किया गया। संस्थान के मुख्य द्वार पर हिंदी सप्ताह समारोह का बैनर एवं सभी अनुभागों में हिंदी पोस्टर लगाए गए। दिनाँक 07-09-2015 हिंदी सप्ताह समारोह का शुभारंभ किया गया। मंच पर संस्थान के अपर निदेशक, डॉ॰ ए॰ कृष्णामूर्ति एवं डॉ॰ सी॰ रविचन्द्रा राजभाषा अध्यक्ष मंच पर मौजूद सभी अतिथीगणों द्वारा दीपक प्रज्वलित कर, ''हिंदी सप्ताह समारोह'' का उद्घाटन किया गया।

संस्थान के अपर निदेशक डॉ॰ ए॰ कृष्णामूर्ति एवं मंच पर मौजूद सभी अतिथियों ने अपने-अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए। इनके बाद राजभाषा अध्यक्ष डॉ॰ सी॰ रविचन्द्रा ने मुख्य अतिथियों का धन्यवाद व्यक्त करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

दिनाँक 21.09.2015 को हिंदी दिवस कार्यक्रम मनाया गया है। जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमती जयसी फर्नांडिस अध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, बेंगलूर को आमंत्रित की गई। इनके साथ मंच पर विशेष अतिथी संस्थान की पूर्व निदेशक डॉ॰ (श्रीमती) प्रभा जगोता, निदेशक डा॰ प्रहलाद कुमार, अपर-निदेशक डॉ॰ ए कृष्णामूर्ति एवं डॉ॰ सी॰ रविचन्द्रा सदस्य सचिव राजभाषा समिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सभी अतिथि एवं मुख्य अतिथियों द्वारा हिंदी में भाषण दिए गए और हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आए सभी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथियों एवं कार्यालय के निदेशक, अपर-निदेशक एवं सदस्य सचिव राजभाषा द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण किए गए।

अंत में श्री बेंकटाचलाप्पा जी ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी सज्जनों को धन्यवाद समर्पण किया ओर साथ ही हिंदी सप्ताह एवं हिंदी दिवस समारोह में पिछले वर्ष की तुलना से अधिक लोगों का भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेना उत्साहजनक बताया। जिसे अगले वर्ष में और आगे बढाने के प्रयास किए जाएंगे। कार्यक्रम में मौजूद सभी सभगणों एवं अतिथिगणों को धन्यवाद समर्पण करते हुए हिंदी सप्ताह समारोह कार्यक्रम करे सम्पन्न किया।

केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, 112, जे॰सी॰ रोड, बेंगलूरू

केनरा बैंक प्रधान कार्यालय, बेंगलूर में दिनांक 30.09.2015 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन श्री राकेश शर्मा, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी की अध्यक्षता में किया गया। बैंक द्वारा ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' जीतने पर उन्होंने सभी कर्मचारियों को बधाई दी। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने बताया कि हिंदी भारत के अधिकांश लोगों द्वारा बोली व समझी जानेवाली भाषा है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है।

हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर, अपनी पूर्व परंपरा के अनुसार केनरा बैंक ने कन्नड मूल के हिंदी-कन्नड साहित्यकार व चिंतक डॉ॰ तिप्पेस्वामी को सम्मानित किया। अपने अभिभाषण में डॉ॰ तिप्पेस्वामी हिंदी भाषा के देश की राष्ट्रभाषा के साथ-साथ संपर्क भाषा के रूप में उभरते स्वरूव को उद्धृत किया।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालयस, बलमट्टा रोड, मंगलूरू-575 001

केनरा बैंक अंचल कार्यालय मंगलूरू में हिंदी-दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में मंगलूरू नगर स्थिति सभी शाखाओं/कार्यालयों के कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल कार्यालय के उपमहा प्रबंधक श्री जी॰वी॰ प्रभु ने की। मुख्य अतिथि के रूप में मंगलूरू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की डॉ॰ सुमा टी॰ रोडनवर उपस्थित थी।

मुख्य अतिथि डॉ॰ सुमा टी॰ रोडनवर ने अपने संभाषण में हिंदी भाषा के अतीत वर्तमान और भविष्य पर प्रकाश डालते हुए इसे हमारी संस्कृति का वाहक बताया और देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा तथा भारतीय संघ की राजभाषा के साथ-साथ भारत की सर्वमान्य राष्ट्रभाषा के रूप में रेखांकित किया। हिंदी के विश्व में प्रचलन और इसके भौगोलिक विस्तार पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी विश्वभर में 140 से अधिक देशों के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है। मॉरीशस, फिजी जैसे देशों में तो हिंदी को समर्पित अनेकों संस्थाएं काम कर रही हैं, जो साहित्य सृजन से लेकर हिंदी के पठन-पाठन से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय हैं। हमारे देश में हिंदी के महत्व को बताते हुए उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी ने कर्णाटक के बेंगलूर में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की, ताकि दक्षिण में हिंदी का विधिवत अध्ययन हो सके। जिसका केंद्र बाद में चैन्नई स्थानांतरित हुआ। संपूर्ण राष्ट्र में उसे समय भी यदि संपर्क की कोई एक सर्वमान्य भाषा थी तो वह भी उर्दू मिश्रित हिंदी ही थी। हिंदी और उर्दू को उन्होंने जुड़वा बहने कहा और उर्दू जुबान को भारत-भूमि की ही देन कहते हुए इसकी नजाक़त की खुश्बू को संपूर्ण वातावरण में घोल दिया। उन्होंने सभी से न केवल हिंदी सीखने का आहवाहन किया बल्कि इसे अपने दैनिक कामकाज में अपनाने पर भी बल दिया।

आकाशवाणी, कटक-753 001

दिनांक 01 सितंबर से 15 सितंबर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी कटक संयुक्त रूप से किया गया।

पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिराओं जैसे आलेखन टिप्पण, अनुवाद, निबंध लेखन कहानी कथन, अंताक्षरी, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

पखवाड़े का पुरस्कार वितरण समारोह 14 सितम्बर को

अपराहन 3.00 बजे आकाशवापणी के स्टुडिओं परिसर में किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान कटक के निदेशक डॉ॰ ओंकारनाथ सिह ने अपने अभिभाषण में कहा कि लोकतंत्र में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि वह सरकार और जनता की बीच संपर्क का माध्यम है। इसलिए हमारे संविधान में केंद्रीय सरकार के काम काज के लिए हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है। विवधिता के बीच एकेता ही हमारे देश की विशेषता है और हिंदी देश की सामाजिक और संस्कृतिक एकता की प्रतीक है। गुरूदेश रवीन्द्र नाथ टैगोर का कहना था – ''भारतीय भाषाएँ नदियाँ है। और हिंदी महानदी,''। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने अपने कर कमलों से प्रतियोगिताओं के सफल आने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए।

अध्यक्ष श्री आनंद चंद्र सुबुद्धि जी ने अपने भाषणा में कहा कि भारत के इतिहास में आज का दिन गौरव का दिन है। हिंदी का प्रयोग अब पूरे भारत में संपर्क भाषा के रूप में हो रहा है। इसलिए कार्यालयीन काम काज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। उन्होंने सभी विजयी प्रतिभागियों को बधाई देने के साथ साथ प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले समस्त प्रतिभागियों की सराहना की।

आकाशवाणी, चेन्नै

आकाशवाणी, चेन्नै में दिनांक 14.09.2015 से 29.09.2015 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोहों का उदघाटन दिनांक 14.09.2015 को उपराहन 3.00 बजे केंद्र के उप महानिदेशक (अभियांत्रिक) श्री पी. पी. बेबी ने किया।

हिंदी दिवस/पखवाड़े समारोह का समापन एवं केंद्र की वार्षिक गृह पत्रिका 'गोपुरम' का विमोचन समारोह दिनांक 29.09.2015 को संपन्न हुआ। विभागीय कलाकार डॉ. नर्मदा के प्रार्थना गीत का कार्यक्रम शुरू हुआ। जानी-मानी गायिका श्रीमती वाणी जयराम ने समारोह में भाग लेकर हिंदी के प्रति कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने समारोह का उदघाटन कर अपने भाषण में कहा कि भाषा, धर्म, जाति आदि कई विविधताओं के बावजूद भारत एक है । उन्होंने आगे कहा कि इस बहुभाषी भारत में एक आम भाषा की जरूरत है और हिंदी इस के लिए सर्वथा योग्य है।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा के उपलक्ष्य में कर्मचारियों के लिए आयोजित विभिन्न प्रतियोगितओं के विजेता कर्मचारियों को मुख्य अतिथि ने नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया। विज्ञापन प्रसारण सेवा एवं वाणिज्य राजस्व प्रभाग सहित कुल 44 कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

आकाशवाणी, विशाखापट्टणम

आकाशवाणी, विशाखापट्टम में 14 सितंबर 2015 को हिंदी दिवस एवं महानिदेशालय के निर्देशानुसार दिनांक 15.09.2015 से 30.09.2015 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

श्री पी. नागेश्वर उपनिदेशक (श्रो. अ.) ने अपने संबोधन में हिंदी को भारत जैसे बहुभाषी देश की एकमात्र संपर्क भाषा के रूप में अभिवर्णित करते हुए कहा कि हिंदी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी भी कोने में जाकर वहां के लोगों के साथ संपर्क कर सकता है और अपना काम चला सकता है क्योंकि हिंदी एक सरल भाषा है और अधिकतम भारतवासी हिंदी को समझ सकते हैं। आगे उन्होंने कहा कि सरकारी काम में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग होना चाहिए। श्री ए. मल्लेश्वर राव, सहायक निदेशक (कार्यक्रम) ने अपने अभिभाषण में राजभाषा हिंदी का महत्व बताते सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग पर जोर देते हुए कहा है कि हिंदी हमारी राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। हिंदी में काम करना हमारा दायित्व बनता है। समारोह में उपस्थित श्रीमती रा. हर्षलता, उप निदेशक (अभि.) ने अपने संदेश में कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को शुभकामनाएं देते हुए प्रशंसा की कि इस कार्यालय में हिंदी के प्रयोग की स्थिति संतोषजनक है ओर उम्मीद जताया कि यह कार्यालय हिंदी के प्रगामी प्रयोग में ओर आगे बढ़ेगा। तदनंतर श्री डी.आर. प्रसाद, कार्यालय प्रमुख ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी को राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूक एवं सचेत रहने की आवश्यकता पर बल दिया सभी को अपना दैनंदिन कार्य ज्यादा से ज्यादा राजभाषा हिंदी में करने का आग्रह किया। आगे उन्होंने सभी को प्रेरित करते हुए अपने संदेश में कहा कि केंद्र सरकार द्वारा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएं लागू की जा रही हैं उनका सदुपयोग करके हर एक को हिंदी में यथासंभव काम करना चाहिए।

आकाशवाणी : निजामाबाद और करीमनगर

14 सिंतबर हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14 से 30 सिंतबर 2015 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया ऑल इंडिया रेडियो निजामाबाद और करीमनगर दोनों स्टेशन में 14 सितंबर को हिंदी पखवाड़े 2015 आयोजित किया गया है।

मुख्य अतिथि श्री गुलम मुस्तफ, सहायक आचर्य, जी.जी. डीग्री, अपने भाषण में हर केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी प्रयोग के महत्व के बारे में जानकारी दी। वह भी विकसित देशों और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों सहित दुनिया में हिंदी के व्यापक प्रसार के उपयोग के बारे में विस्तार से बताया। वह कार्यालय में अपने दैनिक कार्यकाल में उपयोग करने के लिए कर्मचारियों से आग्रह किया। स्टाफ के कुछ सदस्य भी इस मौके पर कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के बारे में बताया।

आकाशवाणी, तिरुवनंतपुरम

दिनांक 1 सिंतबर से 30 सिंतबर तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। 14.09.2015 को सुबह 11.30 बजे हिंदी दिवस समारोह के साथ हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्‌धघाटन हुआ।

समारोह के मुख्स अतिथि श्री कृष्ण पणिक्कर, सेवा-निवृत्त उप निदेशक (कार्या.), बेंगलूरु ने कहा के सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग करते वक्त सबसे पहले अधिकारियों को इस बात में 'नमूना' बनना चाहिए।''यथा राजा तथा प्रजा''- इस मुहावरे पर ध्यान देनी चाहिए। हिंदी में काम करते वक्त व्याकरण पर ज्यादा ध्यान दें।

पखवाड़े के समापन समारोह तारीख 30-09-2015 को अपराह्न 3.30 बजे श्री आर.सी. गोपाल, केंद्र निदेशक की अध्यक्षता में आकाशवाणी के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुआ।

केंद्र निदेशक ने इस पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त सभी भागीदारों को बधाई दी। अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में व्यक्त किया कि एक कर्मचारी दो प्रतियोगिताओं में भाग लेने के शर्त रखने से ज्यादा कर्मचारी भाग ले सकते हैं और पुरस्कार भी प्राप्त कर सकते हैं।

आकाशवाणी, ब्रह्मपुर

आकाशवाणी ब्रह्मपुर केंद्र में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन सितंबर महीने में किया गया। 14 सितंबर को आयोजित उदघाटन समारोह की अध्यक्षता श्री डी सोमैया, कार्यक्रम निष्पादक ने की। उन्होंने सभी अधिकारी/कर्मचारियों का स्वागत किया, अपने वाक्तव्य में राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कार्यालयीन कामकाज में हमें राजभाषा के प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए। तत्पश्चात श्री जय देव भुए निष्पादक ने पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं का विस्तृत विवरण दिया। हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 25.09.2015 में संपन्न हुआ। वरिष्ठ कार्यक्रम निष्पादक श्री डी सोमैया ने स्वागत भाषण दिया था। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर दक्षिणांचल राजस्व आयुक्त श्री संजय कुमार सिंह जी ने समारोह का गौरव बढ़ाया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी सीखना जरूरी है और हिंदी के प्रचार-प्रसार में आकाशवाणी की भूमिका अतुलनीय है।

आकाशवाणी, हैदराबाद

दिनांक 14/09/2015 को हिंदी दिवस समारोह तथा ,' हिंदी पखवाड़ा 'के उद्‌घाटन समारोह का आयोजन कार्यालय के सम्मलेन कक्ष में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती एम.नरेंद्र कुमारी, उप महानिदेशक (अभियांत्रिकी) एवं कार्यालयाध्यक्ष ने की।

उन्होंने अधिकारियों और कर्मचारियों सें पखवाड़े के दौरान आयेजित की जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में भाग लेने का आग्रह किया। उन्होंने पखवाड़े के दौरान पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने, फाइलों में टिप्पणियां हिंदी में लिखने तथा फाइलों पर हस्ताक्षर यथासंभव हिंदी में करने की अपील की।

हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 30.09.2015 को पूर्वाहन 11.30 बजे केंद्र के ड्‌यूटी रूम लाउंज में सम्पन्न हुआ।

उप महानिदेशक (अभियांत्रिकी) महोदय ने अपने अध्यक्षीय समारोह भाषण में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न

प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई देते हुए कि हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के कारण कार्यालय के कामकाज में इसका अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। कार्यालय में राजभाषा, विभाग, गृह मंत्रालय की विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू की जा रहीं है और सभी में इनका पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए।

आकाशवाणी, कोलकाता

उप महानिदेशक (कार्यक्रम) का कार्यालय आकाशवाणी, कोलकाता, अपर महानिदेशक (पू॰क्षे॰) तथा वि॰ प्र॰ सेवा, आकाशवाणी, कोलकाता के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 14.09.2015 से 29.09.2015 तक हिंदी पखवाड़ा को आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी कविता-पाठ हिंदी तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण व आलेखन हिंदी निबंध, श्रुतलेखन तथा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 29.09.2015 को समापन समारोह में उप महानिदेशक (कार्यक्रम) सुश्री स्वप्ना मंडल ने सभी पुरस्कार विजेतागण को बधाई दी। उन्होंने कहा कुछ लोगों ने राजभाषा हिंदी को अपने अंतर्मन से स्वीकारते हुए राजभाषा के प्रतियोगिता में भाग लेने का साहस तो किया मैं उनके इस प्रयास को बधाई देती हूं। आगे उन्होंने इसी उत्साह के साथ वर्ष भर भी राजभाषा हिंदी में कार्य करने का निदेश दिया।

दूरदर्शन केंद्र, ईटानगर

दूरदर्शन केंद्र ईटानगर में दिनांक 1 से 30 सितंबर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़ा के दौरान अधिकारियों/ कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर श्री सी. लालरोंगा द्वारा हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर भेजी गई अपील को पढ़ा कर सुनाया गया। तथा प्रसार भारती के मुख्य कार्याकारी अधिकारी श्री जवाहर सरकार द्वारा भेजे गए संदेश को पढ़कर सुनाया गया। समापन समारोह के अवसर पर हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को कार्यालय प्रमुख महोदय के शुभ हाथों से नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

दूरदर्शन केंद्र, गुवाहाटी

दिनांक 07 सितंबर, 2015, से 21 सितंबर, 2015 तक के दौरान, दूरदर्शन केंद्र, गुवाहाटी में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में ही दिनांक-17 सितंबर, 2015 को संध्या 4.00 बजे से 5.30 बजे तक ''हिंदी है हम'' नामक कार्यक्रम का सीधा-प्रसारण किया गया। इस केंद्र द्वारा हिंदी पखवाड़ा हेतु अधिकारियों/कर्मचारियों में कार्यालयीन हिंदी के प्रति जागरूक पैदा करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र के अधिकारियों/कर्मचारियों ने पूरी मात्रा में प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

दिनांक 21.09.2015 को हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, श्री राजीव वार्ष्णेय, मुख्य प्रबंधक (रा॰भा॰), सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, भांगागढ़, गुवाहाटी को आमंत्रित किया गया। केंद्र के श्री आर॰के॰करण, निदेशक (अभि॰) जी ने उपस्थित ने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों सहित मुख्य अतिथि का स्वागत किया और हिंदी के प्रचार-प्रसार में हम सभी कैसे एक जुट होकर काम कर सकते हैं यह बताया। केंद्र में कई तरह के प्रतियोगिताओं का आयोजन कर पुरस्कार प्राप्त प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। केंद्र के कर्मचारियों ने समापन समारोह में अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए कुछ कर्मचारियों ने गाना एवं कुछ कर्मचारियों ने कविता पाठ करके कार्यक्रम को और अधिक रोचक किया।

मुख्य अतिथि जी ने पहले से ही दूरदर्शन केंद्र द्वारा किस तरह हिंदी में सहयोग देते आ रहे हैं यह बताया। अंग्रेजी से ज्यादा, हिंदी लोगो को जल्द ही समझ में आती हैं, क्योंकि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा हैं और अत्यंत सहज एवं सरल भाषा हैं। हमें कार्यालयीन कामों में जहां तक हो सके, प्रशासनिक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने अपना भाषण का समाप्त किया। भाषण समाप्त के तुरंत बाद ही, हिंदी पखवाड़ा में आयोजित प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र दिया गया।

'ख' क्षेत्र

पश्चिम रेलवे, कार्यालय मुख्य कारखाना प्रबंधक, दाहोद

लोको, कैरिज एवं वैगन कारखाना दाहोद में राजभाषा पखवाड़ा दिनांक 14.09.2015 से 30.09.2015 तक मनाया गया। इस आयोजन के अंतर्गत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी कार्य के प्रति प्रोत्साहित किए जाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे - हिंदी सूक्ति लेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता तथा हिंदी निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा विजेता अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। अमुराधि एवं मुख्य कारखाना प्रबंधक जी ने अपने संबोधन में सभी पुरस्कार विजेता अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त कर कहा कि वे हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे और इसके साथ ही कार्यालय में हिंदी में काम करने का वातावरण बनाकर अन्य कर्मचारियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए हमेशा प्रेरित करते रहेंगे।

ग्रेफ केंद्र, दिघी कैंप, पुणे - 411015

ग्रेफ सेन्टर एवं अभिलेख कार्यालय में दिनांक 01 सितंबर 2015 से 14 सितम्बर 2015 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा मनाया गया।

हिंदी पखवाड़े का शुभारम्भ चार दिवसीय हिंदी कार्यशाला से हुआ। उसके बाद हिंदी निबंध प्रतियोगिता तथा नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता हिंदी भाषियों एवं हिंदीतर भाषियों के लिए अलग-अलग एवं कविता पाठ, हिंदी टंकण और हिंदी भाषण प्रतियोगिता सभी कार्मिकों के लिए आयोजित की गई। प्रतियोगिता का संचालन निर्णायक मंडलों के तत्वावधन में किया गया। ग्रेफ केंद्र एवं अभिलेख कार्यालय के कार्मिकों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

दिनांक 14 सितम्बर, 2015 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता कमान्डेन्ट, ग्रेफ केंद्र एवं प्रभारी अधिकारी अभिलेख ने की।

अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में कहा कि मुझे खुशी है कि हमारे ग्रेफ केंद्र एवं अभिलेख कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने व प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस प्रकार के समारोह न केवल कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे दायित्वों की याद दिलाते हैं। हमारा समारोह मनाना तभी सार्थक होगा जब हम स्वेच्छा से इसे अपनाएं और रोजमर्रा के कामों में अधिक से अधिक प्रयोग कर दूसरों को भी इसके प्रयोग के लिए प्रेरित करें। हमारा देश प्रजातांत्रिक देश है और किसी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उस देश का राजकाज उसकी राष्ट्र भाषा में हो ताकि उसकी राष्ट्रीयता का प्रकटीकरण समूचे भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में हो। हमारे विशाल भारत में कई भाषाएं बोली जाती हैं, उनमें हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे देश के आम लोग बोलते एवं समझते हैं। इसके साथ हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परम्पराएं जुड़ी है, इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम राष्ट्रभाषा हिंदी को राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग में लाएं। ऐसे समारोह के माध्यम से कार्मिकों के मन मस्तिष्क में हिंदी के प्रति लगाव पैदा करना ही हमारा उद्देश्य है।

कार्यक्रम के अंत में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना स्थान पाने वाले कार्मिकों को कमान्डेन्ट महोदय द्वारा नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, प्रशासन भवन, शेवा, नवीं मुंबई

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 01 सितंबर, 2015 से दिनांक 15 सितम्बर, 2015 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे मा॰ उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल, आई॰आर॰एस॰ ने अपने संबोधन में कहा कि इस बार ज॰ने॰प॰ न्यास को माननीय राष्ट्रपति महोदय के करकमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों में प्रथम पुरस्कार की शील्ड मिली है तथा हमारे कार्यालय के अधिकांश कर्मचारी हिंदीतर भाषी होने के बाद भी पिछले नौ वर्षों से यह महत्वपूर्ण पुरस्कार हमें मिलता रहा है। इसके लिए उन्होंने सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों को बधाई दी।

मा॰ उपाध्यक्ष ने अपने संबोधन में आगे यह भी कहा कि हम सभी को अपनी मातृभाषा का प्रयोग करने में हीनता महसूस नहीं करनी चाहिए। उनका कहना था कि राजभाषा, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान हमारे देश की आत्मा हैं, और जितना हम इनका सम्मान करेंगे, देश की आत्मा उतनी ही पुष्ट होगी। साथ ही, उन्होंने अधिकारियों/कर्मचारियों से यह अपील भी की कि वे अपने कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें जिससे कि राजभाषा कार्यान्वयन की जिस श्रेष्ठ ऊंचाई तक हम पहुंच चुके हैं उस पर बने रहें।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, एफ॰सी॰एफ॰ 22-23, फेस-2 अर्बन एस्टेट, फोकल प्वाइंट, लुधियाना-141010

दिनांक 01 सितंबर, 2015 से 14 सितम्बर, 2015 तक की अवधि में राजभाषा पखवाड़ा तथा दिनांक 14/09/2015 को ''हिंदी दिवस'' मनाया गया।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि श्री फूल चंद्र विश्वकर्मा एवं श्री आर॰एस॰ श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक (प्रभारी) के कर-कमलों से नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

मुख्य अतिथि फूल चंद्र विश्वकर्मा ने अपने संबोधन में हिंदी दिवस की शुभकामनाएं और पुरस्कार विजेता कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि ''आज हिंदी दिवस है, आज ही के दिन संविधान सभा द्वारा सन 1949 में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। संस्कृत भारतीय भाषाओं की जननी है। पाली, प्राकृत, अपभ्रंश से होती हुई यह हिंदी तक आई है। हमारे देश में ही नहीं वरन पूरी दुनिया में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। हमारे देश के लोग अपने साथ अपनी भाषा, अपने त्योहार और अपनी संस्कृति विदेशों तक लेकर गए हैं जिसके कारण हिंदी और समृद्ध हुई है। हमारे पड़ोसी देशों के हमसे आर्थिक और व्यापारिक रिश्ते है जिसके लिए उन्होंने हिंदी को अपनाया है। सूरीनाम, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, इंग्लैंड, रूस एवं अमेरिका में लोग हिंदी को अपना रहे हैं और अपनी भाषा के साथ-साथ हिंदी भी बोलते हैं। विश्व यह जान गया है कि भारत के साथ व्यापार करने के लिए हिंदी का ज्ञान जरूरी है।

सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी, सैक्टर-72, सा. अ. सि. नगर-160071 (पंजाब)

हिंदी पखवाड़ा 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2015, मनाया गया।

निदेशक महोदय ने हिंदी दिवस के अवसर पर राष्ट्रभाषा के सम्मान में अपने विचार व्यक्त किए, समारोह में लगभग 80 कर्मचारियों ने भाग लिया।

निदेशक महोदय ने सभागार में उपस्थित सभी जनों को हिंदी पखवाड़े की सफलता की बधाई दी और कहा कि एससीएल के कर्मचारी तकनीकी क्षेत्र में ही नहीं, अपितु राजभाषा के कार्यों में भी निपुण हैं साथ ही राजभाषा के निरन्तर प्रयोग को बढ़ाने और इस प्रकार के महोदय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों और वंदना गायन, नाटक, हास्यव्यंग और बाहर से आमंत्रित निर्णायकों सहित कुल 79 पुरस्कार वितरित किए गए।

क्षेत्रीय कार्यालय (गोवा), कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, ई.डी.सी. प्लाट संख्या 23, पाटटों पणजी, गोवा

दिनांक 14 सितंबर, 2015 को कार्यालय में हिंदी दिवस/राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक श्री सी.वी. जोसफ ने की।

समारोह की दौरान राजभाषा पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता, राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता एवं हिंदी वाक प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र तथा नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय निदेशक श्री सी.वी. जोसफ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ने कहा कि पूरे विश्व में चाइनिज भाषा के बाद हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। भविष्य में हम हिंदी भाषा के बिना प्रगति नहीं कर सकते। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषाओं में शामिल कराए जाने का प्रयास भी किया गया है। उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से ज्यादा काम हिंदी में करने का आहवान किया तथा हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी।

नाईपर (मोहाली)

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर), एस.ए.एस. नगर (मोहाली) में 01 से 15 सितंबर तक राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन किया गया।

01 सितंबर से प्रारंभ हुए हिंदी पखवाड़ा का दौरान 04 विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे अंग्रेजी शब्दों का हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी में तत्काल व्याख्यान प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता व स्वरचित कविता वाचन में प्रतियोगिता ने अपनी सहभागिता निभाई।

15 सितंबर 2015 2015 को आयोजित हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. अशोक के. गांगुली, निदेशक, नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली कहा कि 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को संविधान द्वारा राजभाषा का दर्जा किया गया तथा इसी दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि भाषा का ज्ञान हमारे व्यक्तित्व को निखारता है तथा भाषा पर हमारी जितनी पकड़ होगी मनुष्य उतना ही ज्ञानी होगा।

प्रो. क. कु. भूटानी, कार्यवाहक निदेशक, नाईपर ने अपने विचार रखते हुए कहा कि केवल हिंदी का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें हिंदी का प्रयोग अपने दैनिक कार्यों में करना चाहिए। हमें हिंदी के सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ताकि वह लोगों की समझ में आसानी से आ सके।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सैक्टर-19 ए, चण्डीगढ़-160019

दिनांक 1 सितंबर से 14 सितंबर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय निदेशक श्री राजकंवल की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2015 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का आयोजन इलैक्ट्रानिक्स व दूरसंचार इंजीनियर संस्थान, सैक्टर-30, चण्डीगढ़ में किया गया। श्री रामपाल शर्मा सदस्य, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय बोर्ड चण्डीगढ़ समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

मुख्य अतिथि श्री रामपाल शर्मा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज पूरे देश में गौरवमय उत्सव राजभाषा का उत्सव मनाया जा रहा है। वर्षों की गुलामी झेलकर जब हम आजाद हुए तब भी हम सरकारी कामकाज की जकड़न में अंग्रेजी के गुलाम थे। प्रयास किए गए। इसकी लम्बी भूमिका है परन्तु अन्ततः 14 सितम्बर, 1949 में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

राजभाषा के रूप में हिंदी की अनवरत चलती हुई इस यात्रा को आज साठ वर्ष से ऊपर हो गए हैं। अब हिंदी दिवस में यह कहना समीचीन नहीं होगा कि आप हिंदी में काम करें, या आपसे यह कहा जाए कि अंग्रेजी का प्रयोग न करें। बल्कि मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि अब मुड़कर देखने का वक्त आ गया है कि हम कितना चले, कहां पहुंचे और कितनी यात्रा शेष है। किसी से जबरन कोई कार्य नहीं करवाया जा सकता। हिंदी में कार्य करना पावन कर्तव्य हैं। आप गंगा पानी को गंगा पानी नहीं कहते बल्कि गंगा जल कहते हैं क्योंकि 'जल' शब्द संस्कारों में बस गया है। मेरी यही अपील है, यही आग्रह है आप हिंदी को संस्कारों में बसा लीजिए। भारत भाषाओं में बहुत धनी हैं। इन्हीं भारतीय भाषाओं की सुन्दरता में हिंदी पूरे देश को जोड़ती मध्य पणि की तरह है। भाषाओं के प्रति आदर भाव रखें और हिंदी को कामकाज में अपनाएं।

आकाशवाणी, केंद्र जलगांव - 425001

आकाशवाणी केंद्र जलगांव में राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा हिंदी सप्ताह/पखवाड़े का आयोजन किया गया है। इस हिंदी पखवाड़े का विधिवत् उद्‌घाटन समारोह 14 सितम्बर, 2015 को सुबह 11.00 बजे हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक (अभियांत्रिकी) एवं केंद्र प्रमुख श्री संजय एम. बोदले की।

कार्यक्रम के अध्यक्ष निदेशक (अभियांत्रिकी) एवं केंद्र प्रमुख श्री संजय एम. बोदले जी ने अध्यक्षीय भाषण में कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करना दिन-ब-दिन आसान हो रहा है, इससे अवगत कराया गया साथ ही हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोतिगता में बढ़चढ़कर सहभाग लेने का आवाहन किया।

दिनांक 30 सितंबर, 2015 को हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा के अंतिम दिन पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र, अकोला

दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र, अकोला मे दिनांक. 14 सितंबर 2015 से दिनांक. 29 सितंबर 2015 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा समापन समारोह में मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद एवं प्रमाणपत्र द्वारा पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी के प्रचार में दूरदर्शन केंद्र, अकोला ने विशेष ध्यान दिया है और इस कार्यालय द्वारा किए जा रहे हिंदी कार्य की प्रशंसा की।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे-411024

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे (भारत सरकार, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय) में 18 सितम्बर, 2015 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया।

निदेशक, डॉ॰ शैलेश कुमार श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में बताया कि हिंदी केवल हिंदी राज्यों की ही भाषा नहीं रही, वह अब भारतीय जनता के दिलों दिमाग की भाषा बन गई है। भारतीय संसद ने देवनागरी लिपि को राजभाषा के पद पर बिठाया है। अब यह पूरे भारत की जनता का फैसला है। संसार में चीनी तथा अंग्रेजी के बाद हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। राज्यों में राज्य की भाषा, जनता तथा सरकारी कार्य का माध्यम होंगी, लेकिन केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में ही कार्य होना जरूरी है। प्रदेश की भाषाएं तथा राजभाषा हिंदी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

आकाशवाणी, राजकोट

आकाशवाणी राजकोट में हिंदी दिवस एवं पखवाड़ा-2015 का आयोजन दिनांक 01.09.2015 से 14.09.2015 तक किया गया। कार्यालय प्रमुख डॉ॰ मीरां सौरभ ने भी अपने संबोधन में सभी से हिंदी में काम करने का आह्वान किया एवं प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेकर हिंदी पखवाड़ा को सफल बनाने की अपील की। उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए हमें वर्ष भर हिंदी में काम करना चाहिए।

हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह दिनांक 15.09.2015 को 03.30 बजे किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. एस.पी. शर्मा, पूर्व हिंदी विभाग अध्यक्ष, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट ने विभिन्न प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए। उसके बाद कार्यालय अध्यक्ष डॉ. मीरां सौरभ ने भी अपने करकमलों से विजेता कार्मिकों को प्रमाण पत्र वितरित कर प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर श्री पी.एम. मेहता, सहायक अभियंता ने भी विजेता कार्मिकों को प्रमाण पत्र दे कर उनका हौसला बढ़ाया।

'क' क्षेत्र

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् विंग-II हंस भवन, 1, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली - 110002

परिषद मुख्यालय में दिनांक 14 सितंबर से 18 सितंबर, 2015 तक हिंदी सप्ताह का सफल आयोजन किया गया।

सप्ताह के दौरान अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त 6 हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे श्रुतलेख, टिप्पण-प्रारूप लेखन, आशुभाषण, सामान्य ज्ञान (क्विज), हिंदी टंकण तथा अंत्याक्षरी आयोजित की गईं जिनमें कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया और विजयी रहे। प्रतियोगिता समापन के अवसर पर दिनांक 18.09.2015 को परिषद के अध्यक्ष और सदस्य सचिव ने सम्मिलित होकर सभी कार्यक्रमों के सफल समापन पर अपना हर्ष व्यक्त किया और सबको शुभकामनाएं सम्प्रेषित कीं।

दिनांक 3 अक्तूबर, 2015 को अध्यक्ष, राअशिप की अध्यक्षता में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, पुरस्कार वितरण के पश्चात अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं बल्कि मुख्य राष्ट्रभाषा और सारे देश की संपर्क भाषा भी है। हमारा विश्व में सबसे बड़ा लोकतंत्र तभी सफल माना जा सकता है, जब हम अपनी भाषा में सारा राज-काज करने लगेंगे। उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे सभी सरकारी कार्यों में यथासंभव हिंदी का प्रयोग करते रहें।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, जयपुर

जयपुर विमानपत्तन पर दिनांक 14 सितंबर 2015 से 30 सितंबर 2015 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े का शुभारंभ दिनांक 14 सितंबर 2015 को निदेशक विमानपत्तन, जयपुर हवाई अड्डा में किया गया।

इस अवसर पर निदेशक विमानपत्तन ने अपने संबोधन में सभी को हिंदी दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हम सभी को अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करना चाहिए। निदेशक विमानपत्तन ने अपने संबोधन में हिंदी पखवाड़े के आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि जयपुर एयरपोर्ट पर कार्यालयी कामकाज में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग के लिए संभावनाएं तलाश की जाती है। उन्होंने सभी कार्मिकों से आग्रह किया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान हम सभी को अपना अधिक से अधिक कार्यालयी कार्य हिंदी में ही करना चाहिए।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, उदयपुर

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, उदयपुर विमानपत्तन पर हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े का शुभारंभ एक समारोह के रूप में दिनांक 14 सितंबर 2015 को निदेशक विमानपत्तन , उदयपुर हवाई अड्डा श्री संतोष कुमार तथा उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

श्री संतोष कुमार, निदेशक विमानपत्तन ने अपने संबोधन में समस्त कामिकों को हिंदी दिवस की बधाई देते हुए हिंदी पखवाड़े के दौरान एवं कालांतर में अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने तथा इस पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आह्वान किया।

निदेशक विमानपत्तन ने हिंदी पखवाड़े के दौरान सभी अनुभागों द्वारा अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के रुझान पर हर्ष प्रदर्शित किया तथा उदयपुर विमानपत्तन के सभी अनुभागों द्वारा प्रत्येक माह की पांच तारीख अथवा अवकाश की दशा में अगले कार्यदिवस पर राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करते हुए समस्त कार्य हिंदी में करने के निर्णय का स्मरण कराते हुए समस्त कार्मिकों को अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के प्रति संकल्पबद्ध किया।

तदुपरांत मुख्य अतिथि महोदय, निदेशक विमानपत्तन एवं मंच पर आसीन वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रतियोगिताओं में सफल विजेताओं को पुरस्कृत एवं निर्णायक मंडल के सदस्यों को मानदेय प्रदान किया गया।

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सी आई जी रोड, नई दिल्ली

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय, नई दिल्ली में 14 सितंबर, 2015 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। निगम के महानिदेशक श्री दीपक कुमार ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री श्याम सुन्दर कथूरिया, उप निदेशक (राजभाषा) ने वर्ष 2014-15 की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ते हुए उपस्थित जनों को राजभाषा शाखा द्वारा किए गए कार्यों एवं अर्जित उपलब्धियों से अवगत कराया। श्री यू॰ वेंकटेश्वरलू, वित्त आयुक्त ने हिंदी का महत्व बताते हुए अपना कार्यालयी कार्य राजभाषा हिंदी में करने पर जोर दिया। महानिदेशक महोदय ने अपने संक्षिप्त संबोधन में आग्रह किया कि हमें सरल और सहज हिंदी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। हिंदी की वार्षिक रिपोर्ट पर विशेष टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि मुख्यालय की राजभाषा शाखा अनेक गतिविधियां कर रही हैं, अन्य सभी शाखाओं को भी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करना चाहिए।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, मौर्या लोक कंप्लेक्स, न्यू डाक बंगला रोड, पटना

अंचल कार्यालय, पटना के तत्वावधान में हर्षोल्लास वातावरण में पूरे उत्साह के साथ हिंदी दिवस समारोह व राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया

महाप्रबंधन व सर्किल प्रमुख श्री अनिल कुमार के साथ-साथ सभी स्टाफ सदस्यों ने राजभाषा हिंदी में कार्य करने का संकल्प लिया। पटना के अंचल प्रबंधक श्री अरविंद कुमार कंठवाल ने बैंक में राजभाषा प्रयोग के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बैंक के राजभाषा मिशन से सभी को अवगत कराया। श्री जी॰ के॰ सिन्हा, उप अंचल प्रबंधक ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के हिंदी संदेश का पाठ किया तो श्री एस॰ए॰ होदा, मुख्य प्रबंधक ने माननीय वित्त मंत्री, भारत सरकार के हिंदी संदेश का पाठ किया। श्री ए॰के॰ गुप्ता, उप अंचल प्रमुख ने भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के हिंदी संदेश का पाठ किया।

पंजाब नेशनल बैंक, राजभाषा अनुभाग, मंडल कार्यालय, नजदीकी जी॰पी॰ओ॰ धर्मशाला (हि॰प्र॰)-176215

सितंबर माह को मण्डल कार्यालय एवं मण्डल की समस्त शाखाओं द्वारा हिंदी माह के रूप में मनाया गया। इस दौरान सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का संकल्प लिया गया तथा कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान शाखाओं में आने वाले ग्राहकों से भी अनुरोध किया गया कि वह अपने वाउचर आदि हिंदी में ही भरें।

हिंदी माह के अंतर्गत दिनांक 22.09.2015 को पंजाब नैशनल बैंक, मण्डल कार्यालय, धर्मशाला व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धर्मशाला के संयुक्त तत्वाधान में लायन्स क्लब के सम्मेलन कक्ष में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

अध्यक्ष नराकास ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिए निरंतर सतत प्रयास करने की आवश्यकता है। हमें अपने कार्यालयों के कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में निरन्तर प्रयास करना चाहिए। भाषा का ज्ञान, भाषा के प्रयोग हेतु उपलब्ध सुविधाएं और भाषा में काम करने की इच्छा को होना, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने हेतु आवश्यक है। भाषा का ज्ञान अर्जित किया जा सकता है और इसके लिए सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई जा सकती हैं, परन्तु भाषा का प्रयोग करने की इच्छा अंतर्मन से आनी चाहिए तभी सही अर्थों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सकता है।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, ओमेगा टावर, 32, मैकेनिक नगर एक्सटेशन, भभोरी, इन्दौर-452010

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, इन्दौर में दिनांक 01.09.2015 को 'राजभाषा हिंदी माह-2015' का शुभारम्भ' हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल कार्यालय के उपमहाप्रबंधक श्री सजु अलेक्सान्डर ने की।

उपमहाप्रबंधक श्री सजु अलेक्सान्डर ने सभी कर्मचारियों से संपूर्ण माह के दौरान राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने एवं उसे अभिलेखित करने का अनुरोध किया। मुख्य अतिथि महोदय ने 'राजभाषा माह' मनाने के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का भरपूर प्रयोग करने के लिए सभी कर्मचारियों को प्रेरित किया। सभी कर्मचारियों ने चार्ट-पेपर पर हिंदी में एक 'सार्थक वाक्य लिखकर' व 'हिंदी में हस्ताक्षर' करके 'राजभाषा माह' की शुरूआत की व कार्यालय कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का संकल्प लिया।

अंचल कार्यालय, इन्दौर में दिनांक 19.09.2015 को राजभाषा हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री सजु अकलेक्सान्डर ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री सजु अलेक्सान्डर ने सभी पुरस्कार विजेताओं को शुभकामनाएं दी और कहा कि 'राजभाषा कार्यान्वयन ने केवल हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है अपितु यह राष्ट्रीय एवं व्यक्ति दायित्व भी है।'

उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि 'अगर देश की धड़कन को समझना है, तो हिंदी उसका माध्यम हो सकती है। सर्वाधिक ग्रहणशील होने के कारण हिंदी में विश्वभाषा बनने की काबिलियत है। ऐतिहासिक संदर्भों के हवाले से उन्होंने बताया कि मैकाले की शिक्षा-पद्धति ने देश को 'भारत' और 'इंडिया' नामक दो देशों में विभाजित कर दिया है। उन्होंने कहा कि हमें अंग्रेजी से नहीं अंग्रेजियत से शिकायत है।अपने संबोधन से उन्होंने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दूरदर्शन केंद्र, लखनऊ

दूरदर्शन केंद्र लखनऊ में दिनांक 14-28 सितंबर 2015 की अवधि में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के कार्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 14.09.2015 को पूर्वाह्न 11.00 बजे श्री प्रेम प्रकाश शुक्ल, उप महानिदेशक/केंद्राध्यक्ष द्वारा किया गया। उन्होंने हिंदी को भाषा रूपी माला में मणि के समान प्रकाशमान बताते हुए राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सतत प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। इस अवसर पर अपील जारी करते हुए उन्होंने कहा कि हमें राजभाषा के सम्मान साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए इससे राष्ट्र की एकता को बल मिलेगा तथा हिंदी के प्रति अनुकूल माहौल बनेगा।

समापन समारोह के दौरान पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उपरलिखित राजभाषा प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

आकाशवाणी बीकानेर

14 सितंबर को हिंदी दिवस एवं 15 से 30 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान कई कार्यक्रमों के आयोजन किए गए।

14 सितंबर को केंद्र पर हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर 'चर्चा में है हिंदी' विषय पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। मुख्य अतिथि महोदय श्री श्याम महर्षि ने अपने आशीर्वचनों में व्यक्त किया कि हिंदी का कहीं कोई विरोध नहीं है। यदि हमें अपना और अपने देश का विकास करना है तो हमें हिंदी को अपनाना होगा। मुख्य अतिथि महोदय के करकमलों से हिंदी प्रतियोगितों के विजेता प्रतिभागियां को पुरस्कार प्रदान किए गए। नकद प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अन्तर्गत 10 कर्मियों को तथा हिंदी में डिक्टेशन कार्यों के लिए दो अधिकारियों को भी उन्होंने पुरस्कार प्रदान किए।

अंत में अध्यक्षीय उद्‌बोधन में केंद्राध्यक्ष श्री एस॰ के॰ मीना ने व्यक्त किया कि वह दिन दूर नहीं जब हिंदी विश्व में पहले स्थान पर आकर विश्व भाषा का रूप ग्रहण करेगी। उन्होंने कहा कि हमारे प्रधान मंत्री महोदय हिंदी को अपनी संपर्क भाषा होने का सबूत समूचे विश्व के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। उन्होंने विजेता अधिकारियों-कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि हिंदी के प्रति ऐसा उत्साह, उल्लास तथा समर्पण पूरे वर्ष रहना चाहिए।

आकाशवाणी, पटना

14 सितंबर, 2015 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया तथा 15 से 30 सितंबर, 2015 तक की अवधि को हिंदी पखवाड़ा के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

14 सितंबर, 2015 हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्‌घाटन कार्यालयाध्यक्ष श्री पी0 के॰ ठाकुर, निदेशक (अधियांत्रिकी) द्‌वारा किया गया। निदेशक (अभि॰) ने अपने संबोधन में राजभाषा की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कार्यालयीन कामकाज में इसके अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया।

कार्यालय में 15 से 30 सितम्बर, 2015 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने की मानसिकता और वातावरण तैयार करने के उद्‌देश्य से कतिपय प्रेरणादायक प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों यथा हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिंदी प्रतियोगिता (हिंदी एवं हिंदीतर भाषा भाषियों के लिए अलग-अलग), कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता (एम॰टी॰एस॰) तथा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। 30 सितंबर, 2015 को कार्यालय के क्लब भवन में हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी हमारी अस्मिता की पहचान है। भारतीय होने के नाते हमें अपनी मातृभाषा तथा राजभाषा हिंदी में बात करने और कार्य करने में गर्व होना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी अन्य भाषा को सीखने और जानने में कई परेशानी नहीं है लेकिन राजभाषा हिंदी को समुचित आदर मिलने से देश का सम्मान बढ़ता है। अत: हमें अपना समस्त कार्य राजभाषा के प्रावधानों के अनुरूप हिंदी में हमें सम्पादिति करना चाहिए।

आकाशवाणी, लखनऊ

आकाशवाणी, लखनऊ के सभाकक्ष में दिनांक 14.09.2015 को पूर्वाह्न 11.30 बजे हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा का उद्‌घाटन हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड, उपसाधन प्रभाग, फैजाबाद रोड, लखनऊ के मुख्य प्रबंधक श्री अनिल वैद्‌य मुख्य अतिथि के कर कमलों द्‌वारा दीप प्रज्ज्वलन और देवी सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया गया।

उद्‌घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री आर॰बी॰ सिंह, उपमहानिशक (अभियांत्रिकी) एवं केंद्राध्यक्ष ने की।

मुख्य अतिथि श्री अनिल वैद्‌य ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है और उसे प्रभावी बनाने के लिए हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है।

उन्होंने कहा कि हमारा रवैया सकारात्मक होगा तो हम हिंदी में ज्यादा काम कर सकते हैं।

तत्पश्चात् श्री आर॰बी॰ सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है। देश की एकता और अखण्डता बनाए रखने में इसका बड़ा योगदान है। किसी देश की प्रगति में उस देश की भाषा का बड़ा महत्व और योगदान है। आकाशवाणी निरंतर हिंदी के प्रचार-प्रसार और संवद्र्धन का काम कर रहा है। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की कि वे अपना समस्त सरकारी कार्य अधिकाधिक हिंदी में करेंगे। वे फाइलों में टिप्पणियों, मुलपत्राचार हिंदी में करेंगे।

आकाशवाणी, छतरपुर

आकाशवाणी, छतरपुर में हिंदी दिवस 14 सितंबर, 2015 को, हिंदी पखवाड़ा 15 सितम्बर, 2015 को से 30 सितंबर तक बड़े उत्साह से मनाया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारम्भ करते हुए केंद्राध्यक्ष, श्री धर्मेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने अपने उद्धोधन में कहा कि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने और हिंदी के प्रचार प्रसार के संबंध में अनुरोध करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी। दिनांक 30 सितंबर को आकाशवाणी के सभागार में हिंदी पखवाड़ा के समापन अवसर पर केंद्राध्यक्ष श्री डी॰ के॰ श्रीवास्तव ने अपने उद्धोधन में हिंदी के इतिहास पर जोर डालते हुए कहा कि हम सबकों हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना चाहिए।

आकाशवाणी, जयपुर

आकाशवाणी, जयपुर में दिनांक 14.09.2015 से 30.09.2015 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान केंद्र में 7 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 87 अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया।

समापन समारोह दिनांक 30 सितंबर 2015 को दोपहर शुरू हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विजय इसरानी, उपनिदेशक (अभियांत्रिक) ने की। श्री इसरानी ने 72 सफल प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। इसके अलावा मूल रूप से हिंदी में टिप्पण/आलेखन के 8 प्रतिभागियों को प्रोत्साहन स्वरूप नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में अध्यक्ष ने सभी को बधाई दी और कहा कि हिंदी ही वह भाषा है जिसमें बड़ी आसानी से हम सरकारी कामकाज और कर्मचारियों की भावनाओं के बीच तारतम्य स्थापित कर सकते है क्यों कि यह सरल और अपनी भाषा है। ❑

अँग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने का अर्थ अँग्रेजी को समाप्त करना नहीं है। सरकारी नौकरी, सेवाओं और सरकारी कार्यों से अँग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने के बाद भी यदि आवश्यक हुआ तो अँग्रेजी सीखने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन भारतीय भाषाओं की कीमत पर अँग्रेजी का वर्चस्व अब ज्यादा दिन स्वीकार्य नहीं होगा (12 मई 1994, संघ लोक सेवा आयोग पर ऐतिहासिक धरना)।

—अटल बिहारी वाजपेयी।

संगोष्ठी/सम्मेलन

राजभाषा विभाग, द्वारा अमृतसर में आयोजित उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

16 अक्तूबर, 2015 को दसमेश ऑडिटोरियम, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल प्रो॰ कप्तान सिंह सोलंकी जी, श्री गिरीश शंकर सचिव, भारत सरकार, श्री एम॰ पी॰ सिंह, राज्यपाल के प्रधान सचिव, श्री शुभांकर गांगुली, अध्यक्ष नराकास, मथुरा, श्री एस॰ जे॰ सिंह, प्रधान आयकर आयुक्त, प्रो॰ ए॰ एस॰ बरार, उप कुलपति, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, श्री मती पूनम जूनेजा, संयुक्त सचिव, भारत सरकार, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण तथा विभिन्न केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के प्रशासिनक प्रधान, वरिष्ठ अधिकारी तथा अध्यक्ष नराकास एवं गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

माननीय राज्यपाल प्रो॰ कप्तान सिंह सोलंकी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि कुछ कार्यक्रमों का संबंध शरीर से होता है, कुछ का बुद्धि से होता है और कुछ कार्यक्रमों का संबंध आत्मा से होता है। आज के कार्यक्रम का संबंध आत्मा से है। स्वतंत्रता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि कुर्सी पर बैठने से स्वतंत्रता नहीं होती। स्वतंत्रता में तंत्र महत्वपूर्ण है। अपना तंत्र, अपना स्वदेशीपन हमारी पहचान है, हमारी अस्मिता है वह में चाहिए। जब तक अपनी राजभाषा हिंदी को पूरी तरह नहीं अपनाया जाएगा तब तक हम स्वंतंत्र नहीं होंगे।

माननीय राज्यपाल महोदय ने कहा कि डॉ॰ संपूर्णानन्द ने कहा था कि हमारी स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक राजभाषा हिंदी को उचित तरह से नहीं अपनाएंगे। अपना कामकाज हिंदी में नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि भारत वर्ष विविधापूर्ण देश है परंतु भावना एक है अत: इस देश की सर्वमान्य भाषा एक होनी चाहिए और वह राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़ी होनी चाहिए। हम अंग्रेजी का विरोध नहीं करते, अंग्रेजी को सीखने को मना नहीं करते परंतु हिंदी का सम्मान होना चाहिए।

संयुक्त सचिव, राजभाषा, श्रीमती पूनम जुनेजा जी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में किए जा रहे सम्मेलनों एवं समारोंहों की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। इन सम्मेलनों का उद्देश्य राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आ रही समस्याओं का समाधान ढूँढना और इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि आज के इस सम्मेलन में केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के अधिकारी एवं कर्मचारी एक दूसरे के अनुभवों से लाभान्वित होंगे और हमें राजभाषा से जुड़े विभिन्न विद्वानों एवं महानुभावों के विचारों को जानने का मौका मिलेगा।

सचिव, राजभाषा, श्री गिरीश शंकर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि केंद्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में सरकारी काम-काज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में देश भर में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इस समय देश में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की कुल संख्या बढ़कर 421 हो गई है। राजभाषा विभाग द्वारा सभी नराकास की बैठकों के आयोजन, कार्यवृत्त एवं तत्संबंधी रिपोर्ट आदि ऑनलाइन मंगाने के लिए सभी नराकासों को user id और पासवर्ड उपलब्ध कराए जा रहे हैं जिसमें लॉग-इन करके सभी संगत सूचनाएं राजभाग विभाग को ऑनलाइन भेजी जा सकेंगी। उन्होंने कहा कि भाषा को धर्म के साथ जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। क्षेत्रीय भाषाओं तथा बोलियों को भी बढ़ावा मिलना चाहिए।

उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग की वैबसाइट पर हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदी शब्द-पहेली प्रतियोगिताएं शुरू की गई है। राजभाषा विभाग द्वारा आज शुरू की गयी इन ऑनलाइन

हिंदी प्रतियोगिताओं के माध्यम से केंद्र सरकार के कार्मिकों का हिंदी शब्द-ज्ञान बढ़ेगा। महान साहित्यकार प्रेमचंद द्वारा लिखित 20 उत्कृष्ट कहानियों का लिखित और ऑडियो रूप में उपलब्ध कराया गया है। हमारे लिए यह हर्ष और गर्व का विषय है कि माननीय राज्यपाल जी द्वारा हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित लेखकों-भीष्म साहनी और जयशंकर प्रसाद की 20 प्रतिनिधि कहानियों के लिखित टैक्स्ट और ऑडियों रूप का राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर लोकार्पण किया गया।

सम्मेलन में अंत में निदेशक, कार्यान्वयन, श्री हरिन्द्र कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए माननीय राज्यपाल महोयय को आश्वासन दिया कि आपके द्वारा किया गया मार्गदर्शन प्रेरणा का स्रोत होगा। आपके मार्गदर्शन से राजभाषा हिंदी का विकास, प्रसार-प्रसार करने के लिए तहे दिल से प्रयास करेंगे। केंद्र सरकार और राज्य सरकारें राजभाषा हिंदी को आगे ले जाए इस बात का भी प्रयास करेंगे।

उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय-केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा 'पारंगत' नामक हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ भी किया गया है। इससे निकट भविष्य में सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे और सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग में वृद्धि होगी। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि प्राप्तकर्ताओं का यह दायित्व बनता है कि वे अपने पूरे संगठन में राजभाषा हिंदी में प्रयोग-प्रसार को स्थायी रूप देकर अन्य संगठनों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करें।

सम्मेलन के द्वितीय सत्र में सभी प्रतिभागियों से ओपन सत्र के दौरान सुझाव व समस्याएं मांगी नई जिनका समाधान भी तत्काल मंच से किया गया।

समारोह में माननीय राज्यपाल पंजाब तथा हरियाणा, प्रो॰ कप्तान सिंह सोलंकी के कर-कमलों द्वारा पंजाब, चंडीगढ़ हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, जम्मू व कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के कुल 57 कार्यालय प्रमुखों और अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के पुरस्कार विजेताओं को राजभाषा शील्डें और उनके राजभाषा अधिकारियों और सदस्य सचिवों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

नराकास (बैंक) बेंगलूरू

''हिंदी में संगोष्ठी''

25.08.2015 को आईडीबी आई बैंक लिमिटेड, दक्षिण II आंचलिक कार्यालय, बेंगलूर द्वारा आईडीबीआई बैंक लिमिटेड, बेंगलूर प्रशिक्षण केंद्र के सभागार में नराकास (बैंक) बेंगलूर के सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यपालकों/अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी में ''प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र अग्रिम-भारतीय अर्थव्यवस्था की जरूरत'' विषय पर ''संगोष्ठी'' का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न बैंकों के कार्यपालकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

आईडीबीआई बैंक लिमिटेड, दक्षिण II आंचलिक कार्यालय के उप महा प्रबंधक श्री एस॰ कृष्णन ने नराकास (बैंक), बेंगलूर द्वारा बैंकिग विषयों पर हिंदी में सेमिनार आयोजित करने के प्रयास को हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सराहनीय और उपयोगी बताया। उन्होंने कहा के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र अग्रिम आज हर बैंक के अंजेंडे में उच्च प्राथमिकता का स्थान ले चुका है । अत: इस संगोष्ठी का विषय बहुत की सामयिक और उपयोगी हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर के सदस्य-सचिव व सहायक महा प्रबंधक, केनरा बैंक डॉ॰ सोहन लाल ने कहा कि हमें देश की मुख्य धारा से तालमेल बैठाकर चलना होगा और जन-जन को अर्थव्यवस्था और बैंकिंग तंत्र से जोड़कर देश के हर नागरिक के जीवन में खुशियां लानी होंगी। इस मिशन में हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं बहुत मददगार साबित होंगी। इससे पूर्व आईडीबीआई बैंक लिमिटेड के सहायक महा प्रबंधक श्री गुलाब चन्द यादव ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम के विशेषज्ञ वक्ता और संगोष्ठी के समाहारकर्ता के रूप में पधारे श्री श्रीधर नायक, सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबंधक, केनरा बैंक ने प्रस्तुत किए गए सभी आलेखों की सराहना की और उनमें शामिल महत्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख किया।

केनरा बैंक

राजभाषा कक्ष, मानव संसाधन प्रबंधन अनुभाग, अंचल कार्यालय बेंगलूरू मेट्रो

हिंदी में संगोष्ठी

अंचल कार्यालय, बेंगलूर मेट्रो के मार्गदर्शन में सीपीसी, बेंगलूर में दिनांक 17.10.2915 को ''बैंकिंग व्यवहार में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन'' तथा ''केवायसी मानदंडों का अनुपालन'' विषयों पर हिंदी में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री एम॰ वेंकटरत्नम, मंडल प्रबंधक, लेखा अनुभाग, बेंगलूर ने की। इस अवसर पर श्री ओमप्रकाश एन॰एस॰, वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय मेट्रो उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत श्री ओ॰ए॰ कृष्णराज, वरिष्ठ प्रबंधक, सीपीसी, बेंगलूर के स्वागत से हुआ। श्री एम॰ वेंकटरत्नम ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा प्रतिभोगियों को संबोधित करते हुए कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग एवं प्रचार-प्रचार करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी से सीपीसी में हिंदी का सहज वातावरण का निर्माण होगा और कर्मचारी हिंदी के प्रयोग के प्रति प्रेरित होंगे। श्री ओ॰ए॰ कृष्णराज, वरिष्ठ प्रबंधक, सीपीसी, बेंगलूर ने ''केवायसी मानदंडों का अनुपालन'' विषय पर प्रस्तुति देते हुए केवयासी मानदंडों के महत्व और खातों को खोलते समय बरती जानेवाली एहतियातों को रेखांकित किया। श्री ओमप्रकाश एन॰एस॰, वरिष्ठ प्रबंधक ने ''बैंकिंग व्यवहार में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन'' विषय पर प्रस्तुति देते हुए कार्यालयीन स्तर पर राजभाषा के प्रभावी कार्याव्यन की प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डाला और उक्त विषयों पर सारांशीकरण प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में सीपीसी इकाई, बेंगलूर के सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और प्रतिसूचना सत्र में उक्त विषय पर खुलकर अपने-अपने विचार अभिव्यक्त किए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूरू एवं कारपोरेशन बैंक

भाषाई सौहार्द दिवस समारोह-2015

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलरू तथा कार्पोरेशन बैंक ने दिनांक 08 अक्तूबर, 2015 को कार्पोरेशन बैंक, प्रधान कार्यालय, सहस्त्राब्दि भवन के सभागृह, मंगलूरु में भाषाई दिवस समारोह का आयोजन किया।

उक्त समारोह में माननीय अतिथि श्री विभाष कुमार श्रीवास्तव, कार्यापालक निदेशक ने सभी भारतीय भाषाओं को महत्व देते हुए हिंदी का प्रचार करने का आह्वान किया। उन्होंने भारतीय संविधान के उस प्रावधान का उल्लेख किया जिसमें सभी भारतीय भाषाओं के सामान्यतया प्रयुक्त शब्दों का आत्मघात करते हुए शब्द भंडार को समद्ध करने पर जोर दिया गया है। उन्होंने बैंक तथा नराकास, मंगलूरू द्वारा राजभाषा का शत प्रतिशत कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए आयोजित मुख्य कार्यक्रमों की जानकारी दी।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री एस॰ आर॰ बंसल, अध्यक्ष, नराकास, मंगलूरु तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कार्पोरेशन बैंक की विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं, अर्थात्, राजभाषा शील्ड योजना कार्य, कार्यपालक पुरस्कार योजना, संपर्क अधिकारी पुरस्कार योजना, कार्प राजभाषा पुरस्कार योजना के तहत वर्ष 2014-15 के दौरान पुरस्कृत विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

पुरस्कार वितरण के पश्चात् श्री एस॰ बार॰ बंसल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय एवं अध्यक्ष, नराकास, मंगलूरू ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हमारे देश की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख किया। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे माननीय प्रधान मंत्री द्वारा आरंभ की गई विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को बैंक हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से ही लागू कर रहे हैं। उन्होंने स्टाफ सदस्यों से राजभाषा के विकास के लिए प्रौद्योगिकी की सहायता लेने का सुझाव दिया। ❑

प्रतियोगिता/पुरस्कार

बैंक आफ बड़ौदा, बड़ौदा कार्पोरेट सेन्टर, सी-26, जी ब्लाक, बान्द्रा कुर्ला कंप्लेक्स, बान्द्रा (पू॰) मुंबई

बैंक ऑफ बड़ौदा ने बैंकिंग उद्योग जगत में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए नई पहल करते हुए अपने संस्थापक महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ की स्मृति में महाराजा सयाजीराव भाषा सम्मान की शुरूआत की है। बैंक के कार्पोरेट कार्यालय द्वारा दिनांक 14 अक्तूबर, 2015 को आयोजित वार्षिक राजभाषा समारोह में वर्ष 2015 के लिए यह सम्मान प्रख्यात कवि, गीतकार एवं विज्ञापन गुरू श्री प्रसून जोशी को हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा उसे जन-जन तक पहुंचाने में बहुमूल्य योगदान के लिए प्रदान किया गया। जिसके अंतर्गत सम्मान स्वरूप उन्हें एक लाख एक हजार रुपए का चेक तथा स्मृति चिह्न भेट किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री पी॰एस॰ जयकुमार ने की। इस अवसर पर बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री बी॰बी॰ जोशी, बैंक के वरिष्ठ कार्यपालकगण तथा स्टाफ सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। श्री प्रसून जोशी ने अपने संबोधन में बैंक के इस अभिनव प्रयास की सराहना की तथा भाषा को सम्मानित करने के लिए इस अनूठी पहल हेतु बैंक को साधुवाद दिया।

इस अवसर पर बैंक ने अपनी मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत एस॰एन॰डी॰टी॰ महिला विश्वविद्यालय, मुंबई की एम॰ए (हिंदी) की दो छात्राओं के साथ-साथ हिंदी दिवस के अवसर पर कार्पोरेट कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के लगभग 80 विजेताओं को भी सम्मानित किया।

सिंडीकेट बैंक को प्रथम पुरस्कार

सिंडिक्रेट बैंक को राजभाषा के कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन हेतु वित्तीय वर्ष 2014-15 के लिए 'ग' क्षेत्र में स्थित सार्वजनिक क्षेत्रक बैंकों में, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा कीर्ति पुरस्कार की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर 2015 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के कर-कमलों से बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अरुण श्रीवास्तव ने राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ग्रहण किया।

नराकास (बैंक), बेंगलूर द्वारा ''अंतर बैंक हिंदी सुडोकू प्रतियोगिता'' का आयोजन

दिनांक 25.08.2015 को भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी), क्षेत्रीय कार्यालय के सभागार में नराकास (बैंक), बेंगलूर के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए ''अंतर बैंक हिंदी शब्द सुडोकू प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न बैंकों ने अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी), क्षेत्रीय कार्यालय के उप महा प्रबंधक श्री पी॰एच॰आर॰ समद ने इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। संपूर्ण कार्यक्रम के समंवयन का कार्य डॉ॰ संजय जोशी, सहायक महा प्रबंधक, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी), क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूर द्वारा किया गया।

इस प्रतियोगिता में विभिन्न बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर के सदस्य बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के कार्यपालकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने एवं हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

(बैंक), बेंगलूर द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताएं वर्ष भर आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त हिंदीतर भाषा-भाषी छात्रों में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने एवं हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर प्रतियोगिताएं आयोजित करता है। इसी सिलसिले में दिनांक 19.09.2015 को स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, बेंगलूर आंचलिक कार्यालय - 2 द्वारा सरकारी उच्च विद्यालय, सत्तनूर के परिसर में नराकास (बैंक), बेंगलूर के तत्वावधान में सरकारी उच्च विद्यालय, सत्तनूर एवं सरकारी उच्च विद्यालय, कटिगेन्नहल्ली के नौवीं एवं दसवीं कक्षा के लिए ''हिंदी पाठ व सुलेख प्रतियोगिता'' आयोजन किया गया जिसमें 24 छात्रों ने भाग लिया।

स्टेट बैंक ऑफ मैसूर के सहायक महा प्रबंधक श्री मेल्वीन अर्हण, उच्च विद्यालय, कटिगेन्नहल्ली की प्रधानाध्यापिका श्रीमती रुखमिणी एवं सरकार उच्च विद्यालय, सत्तनूर की प्रधानाध्यापिका श्रीमती सुहाषिणी ने इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर के प्रतिनिधि के रूप में श्री अनिल कुमार केशरी, अधिकारी, केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में स्टेट बैंक ऑफ मैसूर की उप प्रबंधक श्रीमती एस॰ एम॰ अनुजा तथा दोनों विद्यालयों के शिक्षकगण उपस्थित थे।

छात्रों ने ''हिंदी पाठ व सुलेख प्रतियोगिता'' में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति स्टेट बैंक ऑफ मैसूर की प्रबंधन श्रीमती ललिता एम॰ के॰ के॰ धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुई। ❑

भारत में कई लिपियों का प्रचलन विभिन्न प्रान्तों की भाषाएँ समझने के मार्ग में बाधक है। यूरोप के तमाम राष्ट्रों ने एक ही लिपि अपनाई है। तब भारत को भी, जो एक राष्ट्र होने का दावा करता है, एक ही लिपि अपनानी चाहिए। रोमन लिपि का व्यवहार भारत में नहीं हो सकता, देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, क्योंकि अनेक प्रांतीय भाषाओं की लिपि प्रायः एक सी है।

—महात्मा गांधी

हमें जनता और प्रशासन के बीच एक अटूट रिश्ता बनाने के लिए हिंदी को साशक्त माध्यम बनाना होगा और नई सदी की अपेक्षाओं के अनुरूप हिंदी को ढालना होगा कि यह देश की उत्तरोत्तर प्रगति में अपनी अहम भूमिका निभा सके।

—अटल बिहारी वाजपेयी

विविध

केनरा बैंक
अंचल कार्यालय, बंगलूर मेट्रो

राजभाषा प्रतिनिधियों की वार्षिक बैठक

दिनांक 02.06.2015 को अंचल कार्यालय, बेंगलूर मेट्रों में अंचल के अंतर्गत आने वाली चुनिंदा शाखाओं के राजभाषा प्रतिनिधियों की वार्षिक बैठक का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। राजभाषा प्रतिनिधि बैठक की अध्यक्षता श्री आर॰ गिरीस कुमार, सहायक महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, बेंगलूर मेट्रो ने की। उन्होंने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार व प्रधान कार्यालय की अपेक्षानुसार राजभाषा में कार्य करने का आग्रह किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री ओमप्रकाश एन॰एस॰, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा कक्ष, अंचल कार्यालय ,बेंगलूर मेट्रों ने किया। शाखाओं की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की विस्तार से समीक्षा की गई। इसके अलावा, बैठक में प्रतिनिधियों को वार्षिक कार्यक्रम 2015-16, राजभाषा कार्यान्वयन की महत्वपूर्ण बातों, राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक, हिंदी प्रतिनिधियों के कर्तव्य, 'स्क्रिप्ट मैजिक' व 'यूनिकोड' के प्रयोग, विभिन्न विवरण/विवरणियां व रिपोर्ट तैयार करने, शाखाओं के राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा, राजभाषा संबंधी निरीक्षणों, राजभाषा संबंधी उचित रिकार्डों के रखरखाव के संबंध में जानकारी दी गयी और एसटीआर 18 व राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक की रिपोर्ट के सही प्रस्तुतीकरण सहित शाखाओं को राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

विजया बैंक, प्रधान कार्यालय,
41/2 एम जी रोड, बैंगलूर

विशेष राजभाषा वेबसाइट शुरू

भारत सरकारी की राजभाषा कार्यान्वयन नीति का अनुसरण करते हुए वर्ष 2006 में विजया बैंक ने अपने बैंक की वेबसाइट को द्विभाषी बना लिया था। तदुपरांत अधिकतम शाखाओं कर्नाटक राज्य में होने के कारण बैंक ने अपनी वेबसाइट का कन्नड़ भाषा पाठ भी 2009 में जारी किया था।

अपने स्टाफ सदस्यों को राजभाषा संबंधी जानकारी तुरंत प्रदान करने तथा इस संबंध में उनके लिए उपयोगी सामग्री को तत्काल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बैंक ने राजभाषा के लिए एक विशेष आंतरिक पोर्टल की शुरूआत वर्ष 2012 में की थी। इसका सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा भरपूर इस्तेमाल किया जा रहा है।

जून 2015 तिमाही के लिए आयोजित प्रधान कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में समिति के अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ ने अनुदेश दिया कि राजभाषा के आंतरिक पोर्टल के जैसे ही बैंक की राजभाषा संबंधी गतिविधियां हमारे ग्राहकों और आम जनता तक पहुँचाने के लिए एक विशेष राजभाषा वेबसाइट का निर्माण किया जाए।

दिनांक 15 सितंबर 2015 को इस वर्ष के हिंदी दिवस समारोह के दौरान माननीय श्रीमती पूनम जुनेजा जी, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने कर कमलों से विजया बैंक की विशेष राजभाषा वेबसाइट का विमोचन किया।

यह वेबसाइट पूर्णत: राजभाषा के लिए समर्पित है और इसमें राजभाषा से संबंधित सामग्री के साथ-साथ बैंक में राजभाषा के क्षेत्र में हो रहे विभिन्न कार्यकलापों की जानकारी तत्काल छायाचित्रों के साथ ग्राहकों व जनसामान्य तक पहुंचाई जाएगी, यह वेबसाइट दुनिया के किसी भी हिस्से से www.rajbhasha.vijaybank.comपर देखी जा सकती है।

इसी अवसर पर राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय में निदेशक श्री हरिन्द्रकुमार जी ने बैंक के मोबाइल बैंकिंग अप्लिकेशन का हिंदी पाठ का भी विमोचन किया। इसके जरिए दुनिया भर के बैंक के ग्राहक अपनी भाषा हिंदी के जरिए खाते का संचालन कर सकते हैं।

इन दो उपलब्धियों से बैंक तकनीकि क्षेत्र में राजभाषा के लिए अलग वेबसाइट शुरू करने वाला सर्वप्रथम बैंक तथा मोबाइल बैंकिंग अप्लिकेशन का हिंदी में जारी करने वाला प्रथम सार्वजनिक क्षेत्र बैंक बन गया है। ❑

प्रशिक्षण

भारत सरकार, गृह मंत्राालय, राजभाषा विभाग,केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली का पत्र सं॰ 19013/1/2011–2015/के हि प्र॰ सं॰ दिनांक 01 अक्तूबर, 2015

विषय: संघ सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, स्वायत्तशासी/सांविधिक निकायों, निगमों, उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए वर्ष 2016 में चलाए जाने वाले हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि के अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अंतर्गत वर्ष 2016 में हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि के अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने हैं। हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:—

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

हिंदी आशुलिपि

पाठ्यक्रम का नाम	प्रशिक्षण की अवधि	पात्रता	हिंदी में योग्यता
हिंदी आशुलिपि	अनुलग्नक 1 के अनुसार	केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जाएगा जिन्होंने अभी तक हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है। **अनिवार्य:** सभी वर्ग के अंग्रेजी आशुलिपिकों, वैयक्तिक सहायकों, निजी सचिवों हेतु। **स्वैच्छिक:** अवर श्रेणी लिपिकों/टंककों हेतु*	हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे हिंदी शिक्षण योजना का प्राज्ञ आदि।

हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण जानने वाले अवर श्रेणी लिपिकों/टंककों को भी हिंदी आशुलिपि कक्षाओं में स्वैच्छिक आधार पर नामांकित किया जा सकता है और कक्षाओं में स्थान रिक्त होने पर प्रवेश दिया जा सकता है, बशर्ते संबंधित विभाग/कार्यालय द्वारा यह प्रमाणित कर दिया जाए कि उस कर्मचारी की हिंदी आशुलिपि में प्रवीणता का कार्यालय के कार्य में उपयोग किए जाने की संभावना है। इन कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी आशुलिपि परीक्षा उत्तीर्ण करने पर कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाएगा।

पाठ्यक्रम का नाम	प्रशिक्षण की अवधि	पात्रता	हिंदी में योग्यता
हिंदी शब्द संसाधन/ हिंदी टंकण	**अनुलग्नक 1 के अनुसार**	केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी शब्द/ संसाधन/हिंदी टंकण प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जाएगा जिन्होंने अभी तक हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण का प्रशिक्षण प्राप्त नही किया है। **अनिवार्य:** सभी अंग्रेजी टंककों/अवर श्रेणी लिपिकों, डाक विभाग में डाक सहायकों एवं कार्यालय सहायकों, रेल डाक सेवा में छंटाई सहायकों, कार्यालयों सहायकों, दूरसंचार विभाग में दूरसंचार सहायकों, आयकर तथा कस्टम एवं एक्साइज विभाग में कर सहायकों, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में कंप्यूटर ऑपरेटरों, डाटा एंट्री ऑपरेटरों आदि के लिए, इसके अलावा इसमें ग्रुप 'ग' के वे कर्मचारी भी शामिल होंगे जो इसी प्रकृति का कार्य करते हैं और जिनके भिन्न पदनाम और भिन्न वेतनमान हैं। **स्वैच्छिक:** 1. वर्तमान में सहायकों, उच्च (प्रवर) श्रेणी लिपिकों तथा हिंदी अनुवादकों के लिए हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य नहीं है, अत: इन्हें हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण की कक्षाओं में स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है और इन्हें कक्षाओं में रिक्त स्थान होने पर प्रवेश दिया जा सकता है। 2. सभी वर्ग के अधिकारियों, जिनके लिए हिंदी शब्द संसाधान/हिंदी टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य नहीं है, किंतु उपयोगी है, को स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है और स्थान उपलब्ध होने पर उन्हें कक्षाओं में प्रवेश दिया जा सकता है, किंतु वर्तमान में वे अधिकारी प्रशिक्षण के उपरांत हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण की परीक्षा पास करने पर किसी भी प्रकार के वित्तीय लाभ/वित्तीय प्रोत्साहन आदि के हकदार नहीं होंगे, जैसे के वैयक्तिक वेतन, नगद पुरस्कार एवं एक मुश्त पुरस्कार आदि।	हिंदी के साथ मिडिल (आठवीं) या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे हिंदी शिक्षण योजना की प्रवीण आदि।

➢ केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान और हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत दिए जाने वाले प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एक समान हैं, परंतु ये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अल्पकालिक गहन होने के कारण इनकी नियमित रूप से पूर्णकालिक कक्षाएं आयोजित की जाती है। **इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में प्रतिदिन प्रातः 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे जक प्रशिक्षण केंद्र पर प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।**

उप संस्थान

हिंदी शब्द संसाधान/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि के अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के अतिरिक्त **कोलकाता, हैदराबाद, बेंगलूर तथा मुंबई** उप संस्थानों में भी चलाए जाते हैं। **इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण अनुलग्नक-1 में दिया गया है।**

प्रवेश का आधार

- पाठ्यक्रम में प्रवेश **'प्रथम आओ, प्रथम पाओ'** के आधार पर दिया जाएगा।

वित्तीय प्रोत्साहन

- हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा पास करने पर, केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों को निर्धारित शर्तें पूरी करने पर 12 महीने की अवधि के लिए एक वेतनवृद्धि के बराबर राशि का वैयक्तिक वेतन प्रदान किया जाता है। जिन आशुलिपिकों की मातृभाषा हिंदी नहीं है, उन्हें हिंदी आशुलिपि की परीक्षा पास करने पर दो वेतनवृद्धियों के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाएगा।

- राजपत्रित आशुलिपिकों को 90 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ही वैयक्तिक वेतन दिया जाएगा।

- हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा पास करने और निर्धारित शर्तें पूरी करने पर अधोलिखित तालिका के अनुसार नगद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिनका भुगतान संबंधित कार्यालयों द्वारा ही किया जाता है।

हिंदी आशुलिपि

1. 95 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	₹ 2400/-
2. 92 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	₹ 1600/-
3. 88 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 92 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	₹ 800/-

हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण

1. 97 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	₹ 2400/-
2. 95 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 97 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	₹ 1600/-
3. 90 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	₹ 800/-

परीक्षा शुल्क

- ये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम निशुल्क है किंतु केंद्र सरकार के निगमों/निकायों/उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि को प्रति कर्मचारी 100/- की दर से परीक्षा शुल्क देना होगा। परीक्षा शुल्क का भुगतान 'उप निदेशक (परीक्षा), हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली (Deputy Director (Exam.), Hindi Teaching Scheme, New Delhi) को देय होना चाहिए।

छात्रावास

- नई दिल्ली स्थित संस्थान में सीमित संख्या में प्रशिक्षार्थियों के ठहरने के लिए छात्रावास की व्यवस्था है, लेकिन नई दिल्ली से बाहर स्थित उप संस्थानों में छात्रावास की कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए वहां प्रशिक्षर्थियों को अपने ठहरने आदि की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

नामांकन विधि

- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली तथा कोलकाता, हैदराबाद, बेगलुरू एवं मुंबई स्थित उप संस्थानों के पते अनुलग्नक-II में दिए गए हैं।

- अनुरोध है कि अपने कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के नाम यथाशीघ्र इस कार्यालय को तथा अपने क्षेत्र में स्थित उप संस्थान के प्रभारी सहायक निदेशक (टं/आ) को सीधे भिजवाने का कष्ट करें। कृपया इन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित करें जिन्हें पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु निश्चित रूप से कार्यमुक्त किया जा सके।

- पाठृयक्रम मे ंप्रवेश लेने के बाद किसी भी परिस्थिति में कर्मचारी को सत्र के मध्य में कार्यमुक्त नहीं किया जाएगा। कृपया ध्यान रखें कि संबंधित केंद्र के सहायक निदेशक से पुष्टि प्राप्त होने पर ही अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए।

- इस संबंध में पत्र व्यवहार करते समय अपने कार्यालय का पूरा पता, दूरभाष संख्या और email का पता अवश्य लिखें, जिससे संपर्क करने में इस कार्यालय को सुविधा हो।

विशेष

- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस परिपत्र को सभी संबद्ध कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें।

- यह सुनिश्चित करना संबंधित कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का दायित्व है, कि कार्मिकों को अधिक से अधिक संख्या में प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए, नामित कर्मचारी कक्षाओं में निश्चित रूप से प्रवेश लें, कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित रहें और अनिवार्य रूप से परीक्षा में भी सम्मिलित हों, ताकि प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध सरकारी संसाधनों का पूर्ण सदुपयोग हो सके और निर्धारित समय में प्रशिक्षण लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें।

- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी ई-मेल adchti@gmail.com द्वारा भी प्राप्त की जा सकती है।

अनुलग्नक-1

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली तथा कोलकाता, हैदराबाद, बेंगलुरू एवं मुंबई स्थित केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप-संस्थानों में दिनांक 13.01.2016 से 20.12.2016 तक आयोजित किए जाने वाले हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि के अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम

I-हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण

क्र॰सं॰	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केंद्र का पता
1.	हिंदी श॰सं॰/हिं॰ टंकण	40 कार्य दिवस	13.01.2016 से 09.03.2016	केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
2.	हिंदी श॰सं॰/हिं॰ टंकण	40 कार्य दिवस	10.03.2016 से 10.05.2016	2-ए पृथ्वीराज रोड,
3.	हिंदी श॰सं॰/हिं॰ टंकण	40 कार्य दिवस	02.06.2016 से 28.07.2016	(जे एंड के, हाउस के सामने)
4.	हिंदी श॰सं॰/हिं॰ टंकण	40 कार्य दिवस	23.08.2016 से 21.10.2016	नई दिल्ली-110 011
5.	हिंदी श॰सं॰/हिं॰ टंकण	40 कार्य दिवस	24.10.2016 से 20.12.2016	

II-हिंदी आशुलिपि

क्र॰सं॰	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केंद्र का पता
1.	हिंदी आशुलिपि	80 कार्य दिवस	23.08.2016 से 20.12.2016	केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान 2-ए, पृथ्वीराज रोड, (जे॰ एंड के॰ हाउस के सामने), नई दिल्ली-110 011

कोलकाता, हैदराबाद, बेंगलुरू एवं मुंबई स्थित उप संस्थानों में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम

I-हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण

क्र॰सं॰	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां
1.	हिंदी श॰सं॰/हिं॰ टंकण	40 कार्य दिवस	13.01.2016 से 09.03.2016
2.	हिंदी श॰सं॰/हिं॰ टंकण	40 कार्य दिवस	10.03.2016 से 10.05.2016
3.	हिंदी श॰सं॰/हिं॰ टंकण	40 कार्य दिवस	02.06.2016 से 28.07.2016

II-हिंदी आशुलिपि

क्र॰सं॰	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां
1.	हिंदी आशुलिपि	80 कार्य दिवस	23.08.2016 से 20.12.2016

अनुलग्नक-II

1. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली 110 011
दूरभाष 011-23793517
फैक्स 011-23018740
E-mail adchti@gmail.com

उप संस्थानों के पते

1. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
कमरा नं॰ 30, तीसरा तल, कौंसिल हाऊस स्ट्रीट,
कोलकाता-700 001
दूरभाष 033-22304062

2. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
केंद्रीय सदन, छठी मंलित, 'सी' विंग 601,
सैक्टर-10, सीवीडी, बेलापुर,
नवी मुंबई-400 614
दूरभाष 022-27572705/27527060
फैक्स 022-27565417

3. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान,
राजभाषणा विभाग, गृह मंत्रालय,
चौथा तल, कमरा नं॰ 403,
सीजीओ टॉवर्स, कवाड़ीगुड़ा,
सिकंदराबाद-500 080
दूरभाष 040-24767755/27532299/27537211
फैक्स 040-27538866

4. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
'बी' विंग, 5वां तल,
केंद्रीय सदन कोरमंगला,
बेंगलुरू-560 034
दूरभाष 080-25537087

❑

आज अँग्रेजी का प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए दक्षिण के भाई-बहन जितना श्रम करते हैं, उसका आठवाँ हिस्सा भी हिंदी सीखने में करें तो हिंदुस्तान के बाकी दरवाजे जो उनके लिए बंद हैं, खुल जाएँ, और वे हमारे साथ इस तरह एक हो जाएँ जैसे पहले कभी न थे।

—महात्मा गांधी

आज ज्ञान-विज्ञान, प्रोद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में तेजी से विकास हो रहा है। इस प्रगति और विकास से जन-साधारण भी लाभान्वित हो, हमें इसे सहज और सरल हिंदी के माध्यम से उन तक पहुँचना होगा।

—अटल बिहारी वाजपेयी

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली का दिनांक 19 अक्तूबर, 2015 का पत्र सं॰ 19011/19/2015/ के हि प्र सं/ग॰प्रा॰प्रशि/192-1192

विषय:- वर्ष 2016 में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली में चलाए जाने वाले हिंदी प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत के गहन (अल्पकालिक) प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध में।

महोदय/महोदया,

राजभाषा विभाग के दिनांक 10.09.1987 के कार्यालय ज्ञापन सं॰ 18015/6/86-रा॰भा॰ई में दिए गए निदेशों के अनुसार केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान एवं उप संस्थानों द्वारा मंत्रालयों/विभागों उनके नियंत्रणाधीन संबंद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/लोक उद्यमों/निगमों/स्वायत संस्थानों, संगठनों अभिकरणों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों में नए भर्ती हुए हिंदीतर भाषा-भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रबोध, प्रवीण प्राज्ञ पाठ्यक्रम के पूर्णकालिक गहन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

मूलत: ये पाठ्यक्रम नए भर्ती हुए अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हैं, किंतु हिंदी प्रशिक्षण के लिए पहले से सेवारत अप्रशिक्षित अधिकारियों/कर्मचारियों को भी इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए नामित करने पर, उन्हें भी प्रवेश दिया जाएगा, ताकि संबंधित कार्यालय विभाग द्वारा निर्धारित समयावधि तक प्रशिक्षण संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल हो सकें।

राजभाषा विभाग के दिनांक 22.4.2015 के का॰ ज्ञापन सं॰ 12012/3/2015-रा॰भा॰ (निति) में संसदीय राजभाषा समिति के 7वें प्रतिवेदन की सिफारिश संख्या 16.7 (क) पर पारित राष्ट्रपति आदेश के अनुपालन में, केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों तथा उनके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, केंद्र सरकार के स्वामित्व अथवा नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/सांविधिक/स्वायत: निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगम तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि में कार्यरत हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों को सरकारी कामकाज हिंदी में करने में दक्ष बनाने हेतु अभ्यास पर आधारित नया पाठ्यक्रम पारंगत लागू करने का निर्णय लिया गया है।

सभी मंत्रालयों/विभागों आदि से अनुरोध है कि (अनुलग्नक-1) में उल्लिखित पाठ्क्रमों के लिए अपने अधीन कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण हेतु प्राथमिकता के आधार पर भेजना सुनिश्चित करें। हिंदी प्रवीण, प्राज्ञा तथा पारंगत के लिए प्रशिक्षार्थी की पात्रता का निर्धारण निम्नानुसार करें।

1. प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र॰सं॰	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	परीक्षा की दिनांक	पात्रता
1.	प्रवीण	20 पूर्ण कार्य दिवस	प्रशिक्षण का अंतिम दिवस	यह पाठ्यक्रम माध्यमिक स्तर का है। इसमें प्रबोध परीक्षा उत्तीर्ण तथा मराठी, सिंधी, गुजराती, मैथिली, संथाली, बोड़ो, डोगरी, नेपाली बंगला, असमिया और उडिसा भाषा भाषी अधिकारी/कर्मचारी जिन्हें मिडिल/माध्यमिक स्तर तक की हिंदी का ज्ञान नहीं है, सीधे प्रवेश ले सकते हैं।
2.	प्राज्ञ	15 पूर्ण कार्य दिवस	प्रशिक्षण का अंतिम दिवस	यह उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए है, जो प्रवीण पास कर चुके हैं या जिनकी मातृ-भाषा उर्दू, कश्मीरी, पंजाबी तथा पश्तो है और जिनका हिंदी का ज्ञान मैट्रिक या दसवीं कक्षा से कम है, प्रशिक्षण हेतु पात्र हैं।
3.	पारंगत	20 कार्य दिवस	प्रशिक्षण का अंतिम दिवस	केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों तथा उनके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, केंद्र सरकार स्वामित्व अथवा नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगम तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों के हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त सभी कार्मिक पारंगत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण हेतु पात्र होंगे।

विशेष:- वर्ग ''घ'' से वर्ग ''ग'' में आए कार्मिकों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण देने के संबंध में।

राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन संख्या 14034/30/2009-रा॰भा॰(प्रा॰) दिनांक 06 जनवरी, 2010 के अनुसार छठे वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुसार, वर्ग ''घ'' के कार्मिकों को वर्ग ''ग'' में शामिल कर लिया गया है और इसलिए महामहिम राष्ट्रपति जी के अप्रैल, 1960 के आदेशनुसार, वर्ग ''ग'' के कार्मिकों को हिंदी भाषा/हिंदी टंकण का प्रशिक्षण दिया जाना अनिवार्य है, अत: वर्ग ''घ'' से वर्ग ''ग'' में आए उन कार्मिकों के लिए जो वर्ग ''ग'' श्रेणी के लिए निर्धारित शैतिक योग्यता रखते हैं उनको पात्रतानुसार हिंदी प्रवीण/प्राज्ञ का प्रशिक्षण दिया जाए। इसी अनुक्रम में पात्रतानुसार अपने कार्यालय के वर्ग ''घ'' से ''ग'' में आए कामिकों को भी नामित करने का कष्ट करें।

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची अनुलग्नक-II में दिए गए प्रपत्र में पाठ्यक्रम प्रारंभ होने से कम से कम एक महीना पूर्व भिजवा दी जाए।

- नामांकन निर्धारित प्रपत्र में ही भेजा जाए, ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।

- प्रशिक्षण का समय सोमवार से शुक्रवार, सुबह 9:30 बजे से शाम 6:00 बजे तक निर्धारित है।

- प्रशिक्षण के लिए विभिन्न कार्यालयों से नामित अधिकारियों /कर्मचारियों के लिए, नामांकन की पुष्टि का पत्र संबंधित प्रशिक्षण केंद्र के सहायक निदेशक द्वारा भेजा जाता है।

- नामांकन के संबंध में प्रशिक्षण केंद्र के सहायक निदेशक से पुष्टि प्राप्त होने पर ही, अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए कार्यमुक्त किया जाए।

प्रशिक्षण केंद्र का पता अनुलग्नक-III में दिया गया है।

परीक्षा

- इन पाठ्यक्रम की परीक्षाएँ प्रत्येक प्रशिक्षण के अंतिम कार्य दिवस पर आयोजित की जाती हैं।

- परीक्षा के लिए आवेदन पत्र प्रशिक्षार्थी से, पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के समय भरवाया जाता है।

- नई दिल्ली केंद्र पर प्रवीण और प्राज्ञ की ऑनलाइन परीक्षा आयोजित की जाएंगी पारंगत की परीक्षा परंपरागत आधार पर ली जाएगी।

परीक्षा शुल्क

- ये सभी पाठ्यक्रम सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए नि:शल्क हैं, किंतु बैंकों तथा अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों आदि के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए उनके कार्यालयों को, हिंदी प्रवीण एवं प्राज्ञ की परीक्षा के लिए रू॰ 100/-प्रति प्रशिक्षार्थी परीक्षा शुल्क देय है। परीक्षा शुल्क का भुगतान उप निदेशक (परीक्षा), हिंदी शिक्षण योजना के नाम, नई दिल्ली में देय ड्राफ्ट द्वारा किया जाना है।

नोट:- पारगत पाठ्यक्रम की परीक्षा के लिए फिलहाल कोई परीक्षा शुल्क नहीं है।

पाठ्य पुस्तकें

- सभी प्रशिक्षार्थियों को पाठ्य-पुस्तकें प्रशिक्षण केंद्र पर, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा, नि:शुल्क प्रदान की जाती है।

वित्तीय प्रोत्साहन

- राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय,भारत सरकार द्वारा निर्धारित शर्तों को पूरा करने तथा हिंदी की निर्धारित अंतिम परीक्षा पास करने पर, केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों को,12 महीनों की अवधि के लिए एक वेतन वृद्धि के बराबर राशि का, वैयक्तिक वेतन प्रदान किया जाता है।

- हिंदी प्रवीण एवं प्राज्ञ की परीक्षा पास करने और निर्धारित शर्तें पूरी करने पर नीचे दी गई तालिका के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। इस राशिं का भुगतान प्रशिक्षार्थियों के कार्यालयों द्वारा ही किया जाता है। परांगत परीक्षा उत्तीर्ण करने पर फिलहाल कोई वित्तीय प्रोत्साहन नहीं है।

क्रम्सं॰		प्रवीण	प्राज्ञ
1.	70% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	रु॰ 1800/–	रु॰ 2400/-
2.	60 %या इससे अधिक परंतु 70% से कम अंक प्राप्त करने पर	रु॰ 1200/–	रु॰ 1600/-
3.	55% या इससे अधिक परंतु 60% से कम अंक प्राप्त करने पर	रु॰ 600	रु॰ 800/-

विशेष

- सभी मंत्रालयों/विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि वे इस परिपत्र को अपने सभी संबद्ध कार्यालयों, इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने की कृपा करें।

- यह सुनिश्चित करना संबंधित कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का दायित्व है कि अधिकारियों/कर्मचारियों को अधिक से अधिक संख्या में प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए, नामित कर्मचारी कक्षाओं में निश्चित रूप से प्रवेश लें, परीक्षा में भी सम्मिलित हों, ताकि प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध सरकारी संसाधनों का पूर्ण सद्पयोग हो और निर्धारित समय में प्रशिक्षण के लक्ष्य प्राप्त किए जा सके।

- यह भी सुनिश्चित करने की कृपा करें कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिन अधिकारियों/कर्मचारियों के नामों की पुष्टि प्रशिक्षण केंद्र के सहायक निदेशक द्वारा भेजी जाती है, उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए। यदि किसी कारणवश उन्हें भेजना संभव न हो, तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी/कर्मचारी को भेजा जा सकता है। नामित अधिकारी/कर्मचारी को अगले सत्र में भिजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें।

- यात्रा भत्ता आदि जो भी देय होगा, उसे प्रशिक्षार्थी के कार्यालय द्वारा ही वहन किया जाएगा।

- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को कार्यमुक्ति आदेश दिया जाता है।

- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए, संबंधित सहायक निदेशक से फोन नं॰ 011–23063321 एक्सटेंशन 2207 पर संपर्क करें।

- केंद्र के अधिकारी का संपर्क सूत्र, प्रशिक्षण केंद्र हॉस्टल का पता तथा बस रूट अनुलग्नक–III पर देखें।

अनुलग्नक–I

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2016 में आयोजित किए जाने वाले हिंदी प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा पाठ्यक्रम की सत्रावधि:—

सत्र	गहन पाठ्यक्रम	कार्य दिवस	प्रशिक्षण की अवधि
प्रथम	प्रवीण	20	04.01.2016 से 1.02.2016 तक
	प्राज्ञ	15	2.02.2016 से 22.02.2016 तक
	पारंगत	20	23.02.2016 से 21.03.2016 तक
द्वितीय	प्रवीण	20	02.05.2016 से 27.05.2016 तक
	प्राज्ञ	15	30.05.2016 से 17.06.2016 तक
	पारंगत	20	20.06.2016 से 18.07.2016 तक
तृतीय	प्रवीण	20	01.09.2016 से 29.09.2016 तक
	प्राज्ञ	15	30.09.2016 से 24.10.2016 तक
	पारंगत	20	25.10.2016 से 23.11.2016 तक

अनुलग्नक–II

नामांकन का प्रपत्र

क्र॰सं॰	प्रशिक्षार्थी का नाम और पदनाम और बल सं॰	मातृभाषा	पाठ्यक्रम जिसके लिए नामित किया गया है	शैक्षिक/ तकनीकी अर्हताएं	हिंदी का ज्ञान	कर्मचारी के कार्यालय का नाम पता तथा 2. फैक्स नं॰	1. फोन नं॰ 3. ई मेल आई डी

प्रायोजक अधिकारी के हस्ताक्षर

नाम और पदनाम .....

कार्यालय का नाम और पता .....

.....

.....

टेलीफोन नं॰ ..... फैक्स नं॰ .....

ई मेल आई डी .....

अनुलग्नक–III

संपर्क सूत्र

1	2
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, 7वां तल, पर्यावरण भवन, बी ब्लॉक सी॰जी॰ओ॰ कांप्लैक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली–110 003. दूरभाष सं॰ 011–24361852 फैक्स सं॰ 011–24361852 ई–मेल–dirchti-dol@nic. in	सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग, कक्ष सं॰ 449–ए उद्योग भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली–110011. दूरभाष सं॰ 011–23063321 एक्सटेंशन 2207 फैक्स सं॰ 011–23062626

प्रशिक्षण केंद्र तथा हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट नं॰

प्रशिक्षण केंद्र का पता	हॉस्टल का पता
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग, कक्ष सं॰ 449–ए चौथा तल, उद्योग भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली–110011. दूरभाष सं॰ 011–23063321 एक्सटेंशन 2207 फैक्स सं॰ 011–23062626 नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली और बस अड्डे से मेट्रो रेल सेवा उपलब्ध है। मेट्रो स्टेशन का नाम ''उद्योग भवन'' है।	वार्डन (हॉस्टल) केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं॰ 2, गवर्नमेंट हॉस्टल, तीसरा तल, देवनगर, करोल बाग, नई दिल्ली–110005 दूरभाष सं॰ 011–28716509 नई दिल्ली से बस रूट नं॰ 181, 166 पु॰दि॰ रेलवे स्टेशन से बस रूट सं॰ 926 बस स्टॉप का नाम खालसा कॉलेज है हॉस्टल से प्रशिक्षण केंद्र उद्योग भवन तक आने के लिए बस रूट सं॰ 610, 166, 181 है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली का दिनांक 14 अक्तूबर, 2015 का पत्र सं॰ 19011/24/2015/के॰हि॰प्र॰ सं॰/अल्प॰ग॰ प्रशि/965 से 1964

विषय:- संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन संबंद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए संस्थान द्वारा आयोजित गहन हिंदी कार्यशालाओं का विवरण–वर्ष 2016

महोदय/महोदया,

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों, उनके नियंत्रणाधीन संबंद्ध, अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/उद्यमों अभिकरणों/निगमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए गहन हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यशालाओं में सभी कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं।

वर्ष 2016 में आयोजित की जाने वाली गहन हिंदी कार्यशालाओं का विवरण तिथियों सहित अनुलग्नक–1 में दिया जा रहा है, ताकि सभी संबंधित कार्यालय प्रतिभागियों की सुविधा को ध्यान में रखकर कार्यशाला के वार्षिक कैलेंडर के अनुसार पूरे वर्ष के लिए उन्हें एक साथ नामित कर सकें।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र॰म॰	कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	भारत सरकार के कार्यालय जिनके प्रशिक्षण अनिवार्य है
1.	गहन कार्यशाला	(क) विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों को सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए अभिप्रेरित करना। (ख) विभागीय अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा कार्यालयीन काम हिंदी में करने की झिझक को दूर करना। (ग) कार्यालयीन कार्य को करने की दक्षता (लेखन कौशल) प्रदान करना। (घ) राजभाषा विभाग द्वारा विकसित यांत्रिक उपकरणों/साफ्टवेयरों की जानकारी प्रदान करना।	पांच पूर्ण कार्य दिवसीय	संघ सरकार के मंत्रालय/विभाग तथा उनके नियंत्रणाधीन संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालय, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/सांविधिक निकाय/उद्यम/अभिकरण/निगम तथा राष्ट्रीयकृत बैंक आदि।

पात्रता

- राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए सभी कार्यालयों से कहा गया है कि उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाए, जिन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान*या प्रवीणता**प्राप्त है। (कार्यसाधक ज्ञान एवं प्रवीणता की परिभाषाएं अलग से */** में दी गई है।)
- जो हिंदीतर भाषा–भाषी अधिकारी/कर्मचारी गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण ले चुके हैं, परंतु जिन्हें इसके बावजूद भी हिंदी में कार्यालय का कार्य करने में कठिनाई होती है, उन्हें इन कार्यशालाओं में भेजा जा सकता है।
- उन अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रवेश में प्राथमिकता दी जाएगी, जिन्होंने अभी तक संस्थान द्वारा संचालित हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है।

हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त उसे कहा जाएगा जिस कर्मचारी ने:—

- मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है।

या

- केंद्र सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ अथवा सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में उस योजना के अंतर्गत वांछित परीक्षा उत्तीर्ण की है।

या

- यदि वह राजभाषा नियम, 1976 के साथ संलग्न फार्म में यह घोषणा करता है कि उसने कार्यसााधक ज्ञान प्राप्त कर दिया है तो उसके बारे में यह कहा जाएगा कि उसे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।

हिंदी में प्रवीणता प्राप्त उसे कहा जाएगा जिस कर्मचारी ने:—

- मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है।

या

- स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया है।

या

- यदि वह राजभाषा नियम, 1976 के साथ संलग्न फार्म में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीण प्राप्त है तो उसके बारे में यह कहा जाएगा कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के ब्यौरे अनुलग्नक ''III'' में दिए गए प्रपत्र में यथा समय इस कार्यालय को भिजवाएं ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।
- प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारी को यथासमय इस कार्यालय द्वारा अलग से पुष्टि पत्र भेजा जाएगा।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थाना द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही संबंधित कार्यालय नामित अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण में प्रवेश के लिए कार्यमुक्त करें।
- कार्यशालाओं का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है।
- प्रशिक्षण केंद्र का पता: अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011

विशेष

- गहन हिंदी कार्यशालाओं के वार्षिक विवरण के लिए अनुलग्नक ''I '' देखें।
- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस पत्र को सभी संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें। ❑

किसी भी देश की तरक्की और कल्याणकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों की सफलता में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं अत: हमें चाहिए कि हम अपनी भाषाओं का समुचित विकास करें और उनका प्रयोग करें।

—अटल बिहारी वाजपेयी

अनुलग्नक-I

प्रशिक्षण कार्यक्रम कलैंडर-वर्ष 2016

गहन हिंदी कार्यशालाएँ

(पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय)

क्रम संख्या	कार्यशाला सं.	प्रशिक्षण-अवधि
1.	431	11.01.2016 से 15.01.2016
2.	432	15.02.2016 से 19.02.2016
3.	433	07.03.2016 से 11.03.2016
4.	434	04.04.2016 से 08.04.2016
5.	435	09.05.2016 से 13.05.2016
6.	436	06.06.2016 से 11.06.2016
7.	437	11.07.2016 से 15.07.2016
8.	438	25.07.2016 से 29.07.2016
9.	439	08.08.2016 से 12.08.2016
10.	440	05.09.2016 से 09.09.2016
11.	441	19.09.2016 से 23.09.2016
12.	442	03.10.2016 से 07.10.2016
13.	443	07.11.2016 से 11.11.2016
14.	444	21.11.2016 से 25.11.2016
15.	445	05.12.2016 से 09.12.2016

अनुलग्नक-II

संपर्क सूत्र

1	2
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सातवाँ तल, पर्यावरण भवन, सी॰जी॰ओ॰ कॉम्पलेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 फैक्स-011-223018740 फैक्स-011-24361852 ई-मेल dirchti-dol@nic.in	प्रभारी सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाष-011-23793521 ई-मेल chti 1110@nic.in

प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन

प्रशिक्षण केंद्र

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक

2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011
दूरभाष-011-23793521

बस रूट:-

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक बस नं. एम-13, 56

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से पृथ्वीराज रोड बस नं. 502

अ॰रा॰ब॰स॰ अड्डे से पृथ्वीराज रोड तक बस नं. 501, 503, 533, 621

मेट्रो स्टेशन: खान मार्किट, जोर बाग एवं रेस कोर्स

हॉस्टल	हॉस्टल
वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं. 2 तीसरा तल, गवर्नमेंट हॉस्टल, खालसा इवनिंग कॉलेज के सामने, देवनगर, करोल बाग, नई दिल्ली-110005. दूरभाष 011-28716509	छात्रावास वार्डन/केयर टेकर, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, फ्लैट सं. 876 से 890 पुष्प विहार, सैक्टर-7, नई दिल्ली-110017 दूरभाष 011-29562873, 24361734
बस रूट:-	**बस रूट:-**
नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं॰ 181	पुरानी रेलवे स्टेशन से 419
पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं॰ 926	नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से आर॰के॰ आश्रम स्टॉप से बस नं. 521-522
हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक (पृथ्वीराज रोड) बस नं॰ 450, 181	पुष्प विहार हॉस्टल से प्रशिक्षण केंद्र - बस नं॰ 521-522 निकटतम बस स्टॉप लोदी गार्डन

अनुलग्नक-III

प्रपत्र

अधिकारी/ कर्मचारी का नाम	पदनाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	क्षैक्षिक/ तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन नं॰ (कार्यालय/ मोबा॰)	ई मेल आई डी

प्रायोजक अधिकारी के हस्ताक्षर

पदनाम

कार्यालय का पूरा पता .....

टेलीफोन नं॰ ..... फैक्स नं॰.....

ई मेल आई डी .....

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, का दिनांक 14 अक्तूबर, 2015 का पत्र सं॰ 19011/25/2015/के हि प्र सं॰/अल्प॰ ग॰ प्रशि॰/1965 से 2964

विषय: संघ सरकार समस्त मंत्रालय/विभाग/सरकारी उपक्रम/बैंक/निगम/निकाय/लोक उद्यम/संगठन आदि के प्रबंधक (राजभाषा), संयुक्त/उप/सहायक निदेशक (राजभाषा) हिंदी अधिकारियों के लिए 05 पूर्ण कार्य दिवसीय अभिमुखी कार्यक्रम का आयोजन वर्ष-2016

महोदय/महोदया,

राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन में राजभाषा अधिकारी अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वाह कर सकें इसके लिए प्रशिक्षण की अनिवार्यता को देखते हुए भारत सरकार तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के हिंदी अधिकारियों के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अभिमुखी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। वर्ष 1999 से 2015 तक कुल 51 (इक्यावन), अभिमुखी कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं।

यह देखा गया है कि उक्त कार्यक्रम के लिए नामित अनेक अधिकारी प्रशासनिक, व्यक्तिगत या आकस्मिक कारणों से इसमें शामिल नहीं होते, साथ ही अभी भी ऐसे अधिकारियों की संख्या काफी अधिक है जिन्हें किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित नहीं किया गया है। इसलिए वर्ष 2016 में भी दो अभिमुखी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। आपसे अनुरोध है कि अपने अधीनस्थ राजभाषा अधिकारियों को उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित करने का कष्ट करें।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र॰सं॰	कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	नामित अधि॰ की पात्रता/ पदनाम	भारत सरकार के कार्यालय, जिनके लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है
1.	अभिमुखी कार्यक्रम	राजभाषा हिंदी की अद्यतन जानकारी देना। राजभाषा संबंधी दायित्वों से परिचित कराना। राजभाषा नीति का सफल कार्यान्वयन करना	14.03.2016 से 18.03.2016 तक (पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय)	भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन/अनुवाद से जुड़े संयुक्त/उप/सहायक निदेशक (रा॰भा॰) हिंदी अधिकारी/उप॰/सहा॰ प्रबंधक (रा॰भा॰)	भारत सरकार के मंत्रालय, विभाग अधीनस्थ कार्यालय/बैंक/उपक्रम/ निगम/निकाय/बीमा कंपनी/लोक-उद्यम आदि
2.	-वही-	-वही-	17.10.2016 से 21.10.2016 तक	-वही-	-वही-

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले अधिकारियों के ब्यौरे अनुलग्नक ''1'' में दिए गए प्रपत्र में यथा समय इस कार्यालय को भिजवाएं ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।
- प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारी को इस कार्यालय द्वारा अलग से यथासमय पुष्टि पत्र भेजा जाएगा।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही संबंधित कार्यालय नामित अधिकारियों को प्रशिक्षण में प्रवेश के लिए कार्यमुक्त करें।
- कार्यक्रम कि समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है।
- प्रशिक्षण केंद्र का पता: अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 2-ए पृथ्वीराज रोड, (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011

विशेष

- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस पत्र को सभी संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें।
- यात्रा/दैनिक भत्ता आदि जो भी नियमानुसार देय होगा वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं।
- कृपया यह सुनिश्चित करने का कष्ट करें के इस कार्यक्रम में जिन अधिकारियों के नामों की पुष्टि इस कार्यालय द्वारा भेजी जाती है उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए। यदि किसी कारणवश उन्हें छोड़ना संभव न हो तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भेजा जा सकता है। नामित अधिकारी को ऐसे ही किसी अगले कार्यक्रम में भेजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें
- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा।
- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए संबंधित एकक के प्रभारी सहायक निदेशक से फोन नं॰ 011-23793521 पर संपर्क करें।
- संस्थान के अधिकारियों के संपर्क सूत्र प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता एवं उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन आदि के लिए अनुलग्नक-II देखें।

अनुलग्नक–I

प्रपत्र

अधिकारी/ कर्मचारी का नाम	पदनाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	क्षैक्षिक/ तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन नं॰ (कार्यालय/ मोबा॰)	ई मेल आई डी

प्रायोजक अधिकारी का नाम एवं हस्ताक्षर

पदनाम

कार्यालय का पूरा पता .....

टेलीफोन नं॰ ..... मोबाइल नं॰ .....

फैक्स नं॰.....

ई मेल आई डी .....

अनुलग्नक–II

संपर्क सूत्र

1	2
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सातवाँ तल, पर्यावरण भवन, सी॰जी॰ओ॰ कॉमलैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003 दूरभाष–011–24361852 फैक्स–011–24361852 ई–मेल dirchti-do@nic.in	प्रभारी सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2–ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली–110011 दूरभाष–011–23793521 फैक्स–011–23018740 chti 1110@nic.in

प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूंट/निकटतम मेट्रो स्टेशन

प्रशिक्षण केंद्र
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाष-011-23793521 **बस रूट:** नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक बस नं॰ एम-13, 56, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से पृथ्वीराज रोड बस नं॰- 502, आ॰रा॰ बस॰ अड्डे से पृथ्वीराज रोड बस नं॰-501,503,533,621 **मेट्रो स्टेशन:** खान मार्किट, जोर बाग, रेस कोर्स

हॉस्टल	हॉस्टल
वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं॰ 2 तीसरा तल, गवर्नमेंट हॉस्टल, खालसा इवनिंग कॉलेज के सामने, देवनगर, करोल बाग, नई दिल्ली-110005. दूरभाष 011-28716509 बस रूट-नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं॰ 181 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं॰ 926 हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड (पृथ्वीराज रोड) बस नं॰ 450, 181	छात्रावास वार्डन/केयर टेकर, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरों, फ्लैट सं॰ 876 से 890 पुष्प विहार, सैक्टर-7, नई दिल्ली-110017 दूरभाष 011-29562873, 24361734 बस रूट-पुरानी रेलवे दिल्ली स्टेशन से 419 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से॰-आर॰ के आश्रम स्टॉप से 521-522 निकटतम बस स्टॉप लोदी गार्डन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली का दिनांक 14 अक्तूबर, 2015 का पत्र सं॰ 19011/26/2015/के॰हि॰प्र॰सं॰/अल्प॰ग॰प्रशि॰/2965 से 3064

विषय: भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने के संबंध में-पांच पूर्ण कार्य-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन वर्ष-2016

महोदय/महोदया,

भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षक (Faculty Members) अपने संस्थानों में चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा के माध्यम से भी प्रशिक्षण प्रदान कर सकें इसी उद्देश्य के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा इन प्रशिक्षकों के लिए हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वर्ष 2015 तक इस संस्थान द्वारा 41 (इकतालीस) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। कार्यालयों/प्रशिक्षण संस्थानों में अभी भी ऐसे संकाय सदस्यों (Faculty Members) की संख्या काफी है, जिन्हें यह प्रशिक्षण दिया जाना शेष है इसलिए इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को वर्ष 2016 में भी चलाने का निर्णय लिया गया है।

अत: आपसे अनुरोध है कि अपने संस्थानों/कार्यालयों के प्रशिक्षकों को उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित करने का कष्ट करें।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र॰सं॰	कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	नामित अधि॰ की पात्रता/पदनाम	भारत सरकार के प्रशि॰ संस्थान/कार्यालय जिनके लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है।
1.	प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम	विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी भाषा के माध्यम से भी अनिवार्य रूप से प्रशिक्षण देना। उनकी हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति को अधिक सशक्त बनाना।	23.05.2016 से 27.05.2016 तक (पांच पूर्ण कार्य दिवसीय)	ऐसे संकाय सदस्य (Faculty Members) जो अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रशिक्षण दे रहे हैं पर जिन्हें हिंदी भाषा के माध्यम से प्रशिक्षण देने में कठिनाई हो रही है।	भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थान मंत्रालय, विभाग, सरकारी उपक्रम बैंक, निगम, सांविधिक निकाय, लोक उद्यम, संगठन आदि।

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले अधिकारियों के ब्यौरे अनुलग्नक ''ख'' में दिए गए प्रपत्र में यथा समय इस कार्यालय को भिजवाएं ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।
- प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारी को इस कार्यालय द्वारा अलग से यथासमय पुष्टि पत्र भेजा जाएगा।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही संबंधित कार्यालय नामित संकाय सदस्यों (Faculty Members) को कार्यक्रम में प्रवेश करने के लिए कार्यमुक्त करें।
- कार्यक्रम का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है।
- प्रशिक्षण केंद्र का पता: अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011

विशेष

- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस पत्र को सभी संबद्ध अधीनस्थ कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें।
- यात्रा/दैनिक भत्ता आदि जो भी नियमानुसार देय होगा वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं।
- कृपया यह सुनिश्चित करने का कष्ट करें कि इस कार्यक्रम में जिन अधिकारियों के नामों की पुष्टि इस कार्यालय द्वारा भेजी जाती है उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए। यदि किसी कारणवश उन्हें छोड़ना संभव न हो तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भेजा जा सकता है। नामित अधिकारी को ऐसे ही किसी अगले कार्यक्रम में भिजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें।
- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को संस्थान द्वारा प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा।
- संस्थान के अधिकारियों के संपर्क सूत्र प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता एवं उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन आदि के लिए अनुलग्नक-II देखें।
- **प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए संबंधित प्रभारी सहायक निदेशक से फोन नं॰ 011-23793521 पर संपर्क करें।**

अनुलग्नक-I

प्रपत्र

प्रशिक्षक का डी (कार्यालय/मोबाईल)	पदनाम नाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	शैक्षिक/तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन नं॰	ई मेल आई

प्रायोजक अधिकारी का नाम एवं हस्ताक्षर
पदनाम .....
संस्थान का पूरा पता.....
टेलीफोन नं॰ ..... मोबाइल नं॰ .....
फैक्स नं॰ .....
ई मेल आई डी.....

अनुलग्नक-II

संपर्क सूत्र

निदेशक,
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
सातवां तल, पर्यावरण भवन, सी॰जी॰ओ॰ कॉम्पलैक्स,
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
दूरभाष-011-24361852 फैक्स-011-24361852
ई-मेल dirchti-dol@nic. in

प्रभारी सहायक निदेशक,
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड,
नई दिल्ली-110011
दूरभाष-011-23793521 फैक्स-011-23018740
ई-मेल chti 1110 @nic. in

प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन

प्रशिक्षण केंद्र
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाष-011-23793521 **बस रूट:** नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहां रोड तक बस नं॰- एम-13, 56 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से पृथ्वीराज रोड बस नं॰-502 अ॰रा॰बस॰ अड्डे से पृथ्वीराज रोड तक बस नं॰-501, 503, 533, 621 **मेट्रो स्टेशन:** खान मार्किट, जोर बाग एवं रेस कोर्स

हॉस्टल	हॉस्टल
वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं॰ 2 तीसरा तल, गवर्नमेंट हॉस्टल, खालसा इवनिंग कॉलेज के सामने, देवनगर, करोल बाग, नई दिल्ली-110005. दूरभाष 011-28716509 बस रूट-नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं॰ 181 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं॰ 926 हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहां रोड तक (पृथ्वीराज रोड) बस नं॰ 450, 181	छात्रावास वार्डन/केयर टेकर, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, फ्लैट सं॰ 876 से 890 पुष्प विहार, सैक्टर-7, नई दिल्ली-110017 दूरभाष- 011-29562873, 24361734 बस रूट-पुरानी रेलवे दिल्ली स्टेशन से 419 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से आर॰के॰ आश्रम स्टॉप से 521-522 निकटतम बस स्टॉप लोदी गार्डन

केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय

नराकास (बेंक), बेंगलूर के तत्वावधान में कार्पोरेशन बैंक द्वारा यूनिकोड प्रशिक्षण का आयोजन

दिनांक 07.10.2015 को कार्पोरेशन बैंक, कर्मचारी प्रशिक्षण केन्द्र, बेंगलूर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बेंगलूर के तत्वावधान में कार्पोरेशन बैंक, कर्मचारी प्रशिक्षण केन्द्र बेंगलूर द्वारा नराकास (बैंक), बेंगलूर के सभी सदस्य कार्यलियों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्धाटन कार्पोरेशन बैंक के उप-महा प्रबंधक श्री ए॰ के॰ विनोद द्वारा किया गया। श्री ए॰ के॰ विनोद ने यूनिकोड की आवश्यकता व उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। श्री देवकांत पवार, वरिष्ठ प्रबंधक, कार्पोशन बैंक, कर्मचारी प्रशिक्षण केन्द्र, बेंगलूर एवं श्री अनिल कुमार केशरी, अधिकारी, केनरा बैंक, राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय ने विभिन्न सत्र चलाए। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को यूनिकोड का परिचय, प्रतिष्ठापन, हिंदी की-बोर्ड का प्रतिष्ठापन, यूनिकोड फांट्स, यूनिकोड पर टाइपिंग, युनिकोड में उपलब्ध अन्य सुविधाओं से अवगत कराया। प्रशिक्षण के दौरान हैंड्स ऑन अभ्यास भी कराया गया। विभिन्न बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के 36 कर्मचारियों/अधिकारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। ❑

हिंदी एक ऐसी भाषा है जो देश की एकता और अखंडता की पृष्टभूमि को पुख्ता कर रहीं है। यह केवल किसी प्रदेश या जन समुदाय की ही भाषा नहीं हैं बल्कि समूचे देश की भाषा है।

—अटल बिहारी वाजपेयी

पाठकों के पत्र

''राजभाषा भारती'' के 141वें तथा 142वें अंक की प्रतियां प्राप्त हुई। धन्यवाद, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री एवं अन्य जानकारियां ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर है। पत्रिका का कलेवर रूप-सज्जा आकर्षक तथा मनमोहक है।

—बांके लाल दुबे,
राजभाषा अधिकारी कार्यालय महाप्रबंधक दूरसंचार जिला वाराणसी-221002.

'राजभाषा भारती' वर्ष-38, अंक-142, जनवरी-मार्च 2015 की प्रति हमें पास हुई। पत्रिका के मुखपृष्ठ के रंग का चयन उत्तम एवं मनमोहक है। पत्रिका में छपी रचनाएँ ज्ञानवर्धक तथा विचारोत्तेजक हैं। पत्रिका में छपें सभी लेख विविधमुखी एवं प्रशंसनीय हैं। अंतिम पृष्ठ पर छपा हुआ श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का चित्र तथा उनके द्वारा रचित कविता, विशेष रूप से बहुत ही सुन्दर एवं प्रशांसनीय है।

—आशीष सिंह यादव
पुस्तकालयाध्यक्ष, भ॰कृ॰अनु॰प॰-भारतीय गन्ना अनुसन्धान संस्थान, रायबरेली मार्ग, पोस्ट-दिलकुशा, लखनऊ-226002 (उ॰प्र॰), भारत

राजभाषा भारती का 142वें अंक मिला। हिंदी को लोक प्रिय बनाने में राजभाषा भारती का योगदान आमूल्य है राष्ट्र को भाषायी तथा सांस्कृति एकता के सूत्र में बांधने में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है। देश भर के विशेष अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी प्रचार-प्रसार विषयक सामग्री देकर यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है।

—सुशील कुमार पाण्डेय,
साहित्येन्द्र द्वारा कोझिडंय साहित्य सेवा समिति मु॰ पटेलनगर, पो॰ कादीपुर जि॰ सुलतानपुर। उ॰ प्र॰-228145

पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी में सृजनशीलता को बढ़ावा देने तथा इसके प्रचार-प्रसार किए जा रहे प्रयास अत्यंत सराहनीय है। **वैश्वीकरण और हिंदी, विश्वभाषा और भविष्यभाषा के रूप में हिंदी, देश-विदेश में हिंदी का भविष्य, दुनिया की निगाह हिंदी की ओर, कार्यालयन कार्यों में हिंनी का प्रयोग एंव कठिनाइयां, राजभाषा के संदर्भ में हिंदी और समकालीन चुनौतियां** आदि समीचीन लेख हैं। **ऊर्जा संरक्षण के विभिन्न सोपान, विधि विज्ञान के प्रतिमानः सूक्ष्म वनस्पतियों के निशान** तथा **जल बचाओ-ऊर्जा बचाओ** सूचनापरक लेख हैं। राजभाषा सम्मेलनों के बोलते चित्रों ने तो पत्रिका को जीवंत कर दिया हैं पत्रिका से उल्लिखित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गतिविधियों के साथ ही केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों में हा रही राजभाषा की गतिविधियां के समावेशन से पत्रिका को नया आयाम मिल रहा है।

—प्रकाश चंद्र मिश्र
सहायक निदेशक (राजभाषा), एवं सदस्य सचिव, नराकास कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर भवन, 38, महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद (उ॰ प्र॰)-211001

राजभाषा भारती के 142वें अंक के लेखा दुनिया की निगाह हिंदी की ओर, 'जल बचाओ' 'उर्जा बचाओ' आधुनिक संचार माध्यम और नागरी लिपि तथा 'बढती उम्र तथा लंबी किडनी बीमारिया' बेहद ज्ञानवर्धक एवं रुचिपूर्ण लेखों ने पत्रिका को और शोभा प्रदान की है।

—राधेश्याम मीणा
उप-निदेशक (भाषा) केंद्रीय हिंदी निदेशालय पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली

अपके द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका ''राजभाषा भारती'' के 142 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। यपचिका प्रेषित करने के लिए हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं एवं लेख आदि अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है। खासतौर पर ''एक प्रवासी भारतीय'' के ''सत्याग्रही महात्मा'' बनने की यात्रा, माझगांव डॉक -राष्ट्र का गौरवशाली पोत निर्माता भूमण्डलीकरण के दौर में भाषाओं पर बढ़ता खतरा आदि लेख ज्ञानवर्धक रहे।

—मुरलीधर
प्रबंधक (का॰एवं॰औ॰सं॰) भारतीय जीवन बीमा निगम राजकोट मंडल कार्यालय

अंक 142 जनवरी 15से मार्च 2015 में आपने हिंदी भाषा को भविष्य में विश्व की भाषा के प्रारूप में दर्शाना एवं देश विदेश में हिंदी का बढते वर्चस्व ने कार्य प्रणाली में हिंदी के प्रयोग को आसान कर दिया है। जिससे विश्व के किसी भी मंच पर भारत के शौर्य को पुर्नजीवित किया जा सकता है।

—पी॰ भारत लक्ष्मी
सहायक निदेशक (प्रशासन) भारतीय डाक विभाग कार्यालय
निदेशक, प्रधान डाकघर नई दिल्ली-110001

राजभाषा भारती का 142वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित की गई सभी रचनाएं ज्ञानवद्र्धक और संग्रहणीय हैं। देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में आयोजित विविध कार्यक्रमों से संबंधित जानकारी पत्रिका में शामिल की गई हैं, जो काफी उपयोगी हैं। आवरण-पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

—आर महेश्वरी अम्मा
हिंदी अधिकारी विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र
तिरुवनन्तपुरम-695 022 केरल, भारत

राजभाषा भारती का अंक 142 (जनवरी-मार्च, 2015) प्राप्त हुआ। बहुत धन्यवाद। पत्रिका की सभी रचनाएं अत्यंत ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ इसमें अद्यतन चिंतन धारा, ज्ञान-विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण और वर्तमान परिस्थितियों का सजीव चित्रण परिलक्षित होता है। वस्तुत: यह पत्रिका राजभाषा की प्रगति एवं विकास की दृष्टि से बेहद प्रेरणादायी है।

—सुजाता चौधरी
मेजर, जीएसओ-1(शिक्षा) सचिव, नराकास महानिदेशालय
असम राइफल्स एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
लाइटकोर, शिलांग-793 010

''राजभाषा भारती'' पत्रिका का अंक 142 प्राप्त हुआ। बहुत बहुत धन्यवाद। पत्रिका में मुद्रित सभी लेख ज्ञानवइर्धक हैं तथा पृष्ठों की सजावट अति सुंदर एवं अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, पठनीय, ज्ञानवइर्धक और संग्रहणीय है।

—रूपा डी॰ तेलकर
राजभाषा अधिकारी दूरसंचार जिला प्रबंधक का कार्यालय,
बी॰एस॰एन॰एल॰, उस्मानाबाद-413 501

राजभाषा भारती के 142वें अंक को संस्थान में प्राप्त किया गया है। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं। विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए गए राजभाषा सम्मेलनों की झलकियां हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए उत्साहित करती हैं।

—डॉ राजेश सण्ड
संस्थान प्रभारी राष्ट्रीय आयुर्वेदिक भेषज अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बाक्स नं॰ 83, मोती बाग रोड़, पटियाला-147001 (पंजाब)

राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका राजभाषा भारती का 142वां अंक प्राप्त हुआ। असंख्य धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित लेख ''विश्वभाषा और भविष्य भाषा के रूप में हिंदी'', ''राष्ट्रीय एकता और हिन्दी'', ''भूमंडलीकरण के दौर में भाषाओं पर बढ़ता खतरा'', ''हिंदी अनुवाद की दशा और दिशा'' तथा ''राजभाषा के संदर्भ में हिंदी और समकालीन चुनौतियां'' एक ओर जहां राजभाषा हिंदी की ग्लोब पर वैश्विक उपस्थिति को उजागर करते हुए निकट भविष्य में आने वाली चुनौतियों से वास्ता कराती हैं वहीं दूसरी ओर ''जल बचाओ, ऊर्जा बचाओ'', ''ऊर्जा संरक्षण के विभिन्न सोपान'' जैसे लेख विश्व मानव के समक्ष उपस्थित प्राकृतिक संसाधनों की समस्या एवं चुनौतियों से भी परिचित कराती हैं। इसके अतिरिक्त ''एक प्रवासी भारतीय के सत्याग्रही महात्मा बनने की यात्रा'' एवं ''हिंदी के अथक साधक: मदन मोहन मालवीय'' जैसे लेख साहित्य की छौंक के साथ इतिहास पुरुषों के अप्रतिम जीवन वृतांत से भी रुबरु कराते हैं।

—लॉकनाथ तिवारी
अधिकारी (रा॰भा॰) चलार्थ पत्रमुद्रणालय जेल रोड,
नाशिक रोड-422 101 (महाराष्ट्र)

पत्रिका ''राजभाषा भारती'' का 142वें अंक की प्राप्ति के लिए धन्यवाद। पत्रिका के प्रत्येक अंक में देश के विभिन्न क्षेत्रों में राजभाषा प्रचार-प्रसार संबंधी जानकारियां एवं लेख तो शामिल किए जाते ही हैं और साथ ही महापुरुषों के कथन पत्रिका को जीवंत बना देते हैं। पत्रिका में छपे-लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं।''कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग एवं कठिनाइयां'' अत्यंत ही सटीक है।

—गीता प्रसाद
हिंदी अधिकारी, अंतरिक्ष विभाग, सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र
शार श्रीहरिकोटा

पत्रिका में प्रकाशित राजभाषा विषयक आलेख बहुत ही ज्ञानवर्धक हैं और विभिन्न राजभाषा सम्मेलनों की झलक एवं पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित भूतपूर्व प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की कविता 'गीत नया गाता हूं' रोचक, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक भी हैं।

—राजेन्द्र सक्सेना
वरिष्ठ प्रमुख, पीएण्डीजीए सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी
अंतरिक्ष विभाग, सेक्टर-72, सा॰अ॰सि॰ नगर-160071,
पंजाब (भारत)

पत्रिका ''राजभाषा भारती'' प्रशंसा के योग्य है। पत्रिका में प्रकाशित राजभाषा संबंधी लेख-राष्ट्रीय एकता और हिन्दी, हिंदी अनुवाद की दशा और दिशा, कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग एवं कठिनाइयां एवं राजभाषा के संदर्भ में हिंदी और समकालीन चुनौतियां आदि को पढ़कर विशेष जानकारी प्राप्त हुई है एवं ऐसे लेख राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं विकास कार्यों में हमें एक सशक्त मार्ग प्रदर्शित करता है।

—अनुज कुमार, हिंदी अधिकारी
नागालैण्ड विश्वविद्यालय मुख्यालय: लुमामी,
जुन्हेबोटो (नागालैण्ड), पिन कोड-798627

राजभाषा भारती का अंक 142 प्राप्त हुआ। पत्रिका भेजने हेतु धन्यवाद। आपके द्वारा प्रकाशित सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं तथा राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर श्री अटल बिहारी बाजपेयी पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न का छपा हुआ चित्र एवं उनकी कविता मुख्य आकर्षण का विषय है।

—डॉ जगदीश चन्द्र पंत
पंत निवास विकास नगर बिठौरिया नंबर-1
कालाडूंगी से हल्द्वानी-नैनीताल, उत्तराखण्ड

राजभाषा भारती पत्रिका अंक 142वें अंक की एक प्रति सादर प्राप्त हुई। इस पत्रिका में समाहित सभी आलेख उत्कृठ हैं। वैश्वीकरण और हिंदी दुनिया की निगाह हिंदी की ओर, इंटरनेट और हिंदी संगठन में टीम व टीम भावना, हिंदी के अथक साधक: मदन मोहन मालवीय जी इत्यादि आलेख अच्छे है।

—डॉ वासुदेवन शेष,
कार्यालय प्रधान महालेखकार, तामिलनाडु

राजभाषा भारती पत्रिका अंक 142 प्राप्त हुआ अन्य अंकों की भांति ही यह अंक भी काफी उपयोगी है। विशेषकर इंटरनेट और हिंदी एवं हिंदी अनुवाद की दशा काफी लाभप्रद एवं सारगर्भित लेख है। यह अनुवाद कार्य में लगे अनुवादकों/ राजभाषा कर्मियों के लिए काफी कुछ सीखने योग्य है। उम्मीद है कि आप इसी तरह इस त्रेमासिक पत्रिका की विलक्षणता का बनाए रखेंगे।

—अंशुमान,
भारतीय तटरक्षक वायु अवसीन, दमण-396210

राजभाषा भारती पत्रिका अंक 142वां अंक हस्तगत हुआ। लगता है, अब उक्त पत्रिका काफी कुछ बदल गई है। सभी कुछ नया-नया लग रहा है। इस परिवर्तन के लिए हार्दिक बधाई। मुखपृष्ठ मानो बोल रहा हैं कि विश्व में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है। अंतिम कवर पृष्ठ पर भारत के जन-जन के नेता, अज्ञातशात्रु पूर्व प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी की कविता एवं मोहक चित्र हर पाठक को अपनी ओर खींच लेता है।

—एस के पंचारिया,
जे एम रोड, बेगलुरु-560 002

जनवरी-मार्च 2015 राजभाषा प्राप्त हुई। हिंदी के बारे में काफी लेख पढ़ने को मिले। पूर्व प्रधान मंत्री पूज्य श्री अटल बिहारी वाजपेयी की गीत नया गाता हूं बहुत सुन्दर है। श्रीमती शौभना जैन का लेख एक प्रवासी भारतीय के सत्याग्रही महात्मा बनने की यात्रा लेख तो बड़ा रोचक है।

—बी॰एस॰ शांताबाई,
कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बेंगलूर-18

राजभाषा पत्रिका अंक 142वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। राजभाषा विभाग, भारत सरकार की ओर से राजभाषा हिंदी के सम्यक विकास हेतु राष्ट्रीय स्तर पर किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं अंन्य गतिविधियों से परिचित होना सुखद लगा। सरकारी स्तर पर हिंदी के प्रति जन-जन की अभिरूचि विकसित हो, इस दिशा में आपका प्रयास प्रशंसनीय है।

—विजय प्रकाशबेरी,
हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन्स, वाराणसी-221010